सैकड़ों होमियोपैथिक और 12 बायोकैमिक औषधियों पर आधारित हर रोग का इलाज।

नूतन

होमियोपैथिक गाइड

लेखक :

आबिद रिजवी

एम० ए० बी० एड०

(पारिवारिक चिकित्सा हेतु)

[होमियोपैथिक दवायें हर शहर के होमियोपैथिक स्टोर पर मिलती हैं।]

प्रकाशक :

नूतन पॉकेट बुक्स

ईश्वरपुरी, मेरठ–शहर

नूतन प्राथमिक एवं घरेलू चिकित्सा

आकस्मिक दुर्घटना पर किसी का
अधिकार नहीं

आकस्मिक दुर्घटना होते ही जीवन रक्षा के लिए
सर्वप्रथम 'फर्स्ट एड' की आवश्यकता पड़ती है।
फर्स्ट एड के समस्त गुणों व चित्रों
सहित यह पुस्तक न सिर्फ ज्ञान-
वर्धक है बल्कि सिविल

डिफेन्स, स्काउटिंग, एन० सी० सी० तथा स्कूली
परीक्षाओं के लिये भी उपयोगी है।
फल-फूलों, सब्जियों तथा घर में काम
आने वाली सैंकड़ों चीजों से प्राकृतिक
उपचार करने हेतु यह पुस्तक हर
घर परिवार में रखने योग्य है।

मूल्य — दस रुपये

नूतन पॉकेट बुक्स
ईश्वरपुरी, मेरठ-2

दो शब्द,

संसार में औषधियों द्वारा रोगों की चिकित्सा करने की जितनी भी पद्धतियां प्रचलित हैं उनमें होमियोपैथी सबसे सस्ती सरल और सहज विधि है। बढ़ती महंगाई के आज के युग में जबकि इन्सान पौष्टिक भोजन के लिये भी उचित धन नहीं जुटा पाता यदि घर में किसी को रोग लग जाता है तो उपचार कराना परेशानी की बात हो जाती है और फिर रोग के हमले का कोई समय भी नहीं—आधी रात को बुखार, हैजा, दस्त जैसे रोग आक्रमण कर बैठते हैं तो पूरा परिवार चिन्तित हो जाता है—पर घर में यदि आप इस पुस्तक को देख-समझ कर अपनी आवश्यकतानुसार चुनी हुई दवाएं रखते हैं तो निश्चित रूप से परेशान होने की जरूरत नहीं रह जायेगी।

होमियोपैथी की दवाएं कम से कम मूल्य की होती हैं—इनसे न सिर्फ आप घरेलू इलाज कर सकते हैं बल्कि अड़ोस-पड़ोस के लोगों को दवा देकर उपकार कर सकते हैं।

होमियोपैथिक दवाओं द्वारा किसी के नुकसान होने, रिएक्शन होने का खतरा नहीं रहता, इन दवाओं का कोई साइड इफेक्ट नहीं होता।

संसार के करोड़ों लोग होमियोपैथी की दवाओं पर विश्वास कर इनसे लाभ उठा रहे हैं। आप भी विश्वास करके एक बार दवा लेने का प्रयास आरम्भ करें विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि आप अन्य पद्धति की दवा लेना भूल जायेंगे।

अधिक सुविधा के लिये बायोकैमिक की 12 दवाओं का भी वर्णन इस पुस्तक में कर दिया गया है, जो घरेलू उपचार के लिये बेहद सरल और उपयोगी हैं।

पुस्तक के विषय में अपनी राय देना न भूलें।

—प्रकाशक

[illegible]

प्रकाशक :
नूतन पाकेट बुक्स
शिवपुरी मेरठ-2

पुस्तक :
नूतन होमियोपैथिक गाइड

लेखक :
आबिद रिजवी
एम० ए० बी० एड०

मुद्रक :
विपिन प्रिन्टर्स,
शिव शक्ति नगर, मेरठ-2

मूल्य : दस रुपये मात्र

विषय-सूची

1 होमियोपैथी क्या है ?	9
2 गुण एवं विशेषता	11
3 होमियोपैथी ही सफल क्यों	12
4 रोग और उपचार	14
5 होमियोपैथी के जन्मदाता	15
6 दवाइयों की शक्ति	17
7 दवाई रखने का ढंग	18
8 खराब या बिगड़ी दवा	18
9 दवा की मात्रा	18
10 दवा प्रयोग का समय अन्तर	19
11 मुख्य 25 दवाइयों के नाम	20
12 लक्षण अनुसार औषधियां	20
13 बायोकैमिक क्या है ?	36
14 बायोकैमिक की 12 औषधियां	39
15 रोग के लक्षण एवं परीक्षण	58
16 शरीर मे गर्मी की परीक्षा	60
17 नाड़ी की गति	61
18 श्वास परीक्षण	63
19 त्वचा परीक्षण	63
20 मल मूत्र परीक्षण	64
21 रोगी के लक्षण	66
22 छाती की परीक्षा	71
23 एनीमा क्या है ?	74
24 भोजन एवं पथ्य	68
25 चिकित्सा की विस्तृत विधियां	80

26 सामान्य ज्वर उपचार 81
27 विषम ज्वर (मलेरिया) उपचार 84
28 अविराम ज्वर उपचार 91
29 मियादी बुखार उपचार 91
30 आरक्त ज्वर उपचार 94
31 काला ज्वर उपचार 97
32 हैजा उपचार 98
33 डायरिया उपचार 99
34 कालरा उपचार 100
35 प्लेग उपचार 102
36 मानसिक रोग लक्षण 104
37 विषाद 104
38 प्रसव के बाद का उन्माद 105
39 वाक् रोग उपचार 107
40 दिमागी कमजोरी उपचार 108
41 सामान्य रोग उपचार 110
42 सर दर्द 110
43 चक्कर 113
44 आंखों के कुछ रोग 114
45 आंख के रोग से सावधानियां 115
46 नजला-जुकाम 116
47 दांत दर्द और इलाज 118
48 मुख रोग और इलाज 121
49 गले के रोग 122
50 वमन उपचार 122
51 स्वप्न दोष का इलाज 124
52 नपुंसकता 125
53 प्रमुख स्त्री रोग 126
54 ऋतु विकार 126

55 अधिक रक्त	127
56 श्वेत प्रदर (लिकोरिया)	128
57 हिस्टीरिया	129
58 प्रसव रोग	131
59 प्रसव बाद के रोग	133
60 पीलिया	134
61 गठिया	135
62 पित्ती या उछाली	137
63 कील मुहासे	138
64 चोट	140
65 हड्डी की टूट-फूट	140
66 जन्तुओं के काटे का इलाज	142
67 मक्खी-ततैया	142
68 बिच्छू	142
69 सांप	142
70 आकस्मिक दुर्घटनाएं	144
71 आग से जलना	144
72 कट जाना	145
73 आघात	145
74 दांत से खून निकलना	146
75 सिर में चोट	146
76 नील पड़ना	146
77 मोच	146
78 पानी में डूबना	147
79 बिजली गिरना	147
80 हड्डी उतर जाना	147
81 कुत्ता या सियार का काटना	148
82 बालकों के रोग	148

82 [illegible] [illegible]
83 [illegible] [illegible]
84 [illegible] [illegible]
85 [illegible] [illegible]
86 [illegible] [illegible]
87 आंतों के विभिन्न रोग [illegible]
88 कान के विभिन्न रोग [illegible]
89 नाक के विभिन्न रोग [illegible]
90 मुख के भीतर के रोग [illegible]
91 डिप्थीरिया [illegible]
92 स्वर भंग [illegible]
93 हृदय रोग 162
94 फेफड़ों के रोग 161
95 जुकाम या सर्दी 161
96 दमा 163
97 यक्ष्मा (टी० बी०) 163
98 आंतों की टी० बी० 164
99 सर दर्द के प्रकार 166
100 आंत उतरना (हर्निया) 168
101 बाल झड़ना 170
102 कार्बंकल 171
103 मूत्र प्रदाह 173
104 अण्डकोष का प्रदाह 173
105 अण्डकोष में पानी उतरना 174
106 सिफलिस 175
107 सुजाक 176
108 बालिदन 177
109 होमियोपैथी की 70 महत्वपूर्ण दवाओं के गुण और उनसे रोग के इलाज 178

होमियोपैथी क्या है ?

रोगों को दूर करने के लिये इस संसार में भांति-भांति की इलाज पद्धतियां प्रचलित हैं। और आज का युग, अगर आपको राह चलते छींक आ जाये तो जनाब अगर आपके करीब दस लोग खड़े हैं तो कम से कम दस में से नौ अवश्य अपने-अपने ढंग से इलाज बता देंगे। शायद एक व्यक्ति ही समझदार निकले जो रोग का लक्षण समझकर उचित इलाज का सुझाव दे।

संक्षेप में होमियोपैथी की परिभाषा के बारे में यदि कहा जा सकता है कि रोग के लक्षण देखकर इलाज करने वाली चिकित्सा पद्धति।

वैसे तो अनेक चिकित्सा पद्धतियों का चलन आदिम काल से चला आ रहा है—जिसमें आयुर्वेद यानि वैद्यक को सबसे प्राचीन माना जाता है। आयुर्वेद का अर्थ जड़ी-बूटियों से इलाज। अपने जंगली जीवन में इन्सान को जड़ी-बूटियों के प्राकृतिक गुणों के सहारे जीवित और अपने को स्वस्थ रखना पड़ता था। उसे प्रकृति का नियम कह सकते हैं कि जिस चीज की जरूरत इन्सान को होती है उसे हासिल करने के प्रयास में लग जाता है। इन्सान की बात छोड़ दी जाये—पशु-पक्षी भी अपना इलाज खुद कर लेते हैं। आपने कुत्तों को घास खाते देखा होगा—हालांकि घास खाना कुत्ते का काम नहीं, पर पेट खराब होने की दशा में वह घास खाता है और घास खाकर वमन (उल्टी या कै) करता है। अपना खराब पेट सही कर लेता है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अन्य पैथियों की चिकित्सा विधियां मुख्यतः विपरीत चिकित्सा सिद्धान्त पर आधारित हैं अर्थात् उनमें रोग को दूर करने के लिये प्रायः ऐसी औषधियों का सेवन कराया जाता है जो— रोग के लक्षणों से विपरीत गुण धर्म वाली होती हैं।

होमियोपैथी इन सबसे भिन्न प्रकार की चिकित्सा प्रणाली है। इसमें किसी रोग को दूर करने के लिये, उस रोग के समान ही गुण धर्म वाली औषधि का प्रयोग किया जाता है—इसी को 'सदृश चिकित्सा पद्धति' भी कहते हैं।

इस बात को और भी सरलता के साथ इस तरह से समझा जा सकता है कि जहाँ विपरीत चिकित्सा पद्धतियों में गर्मी को दूर करने के लिये ठण्डी औषधि दी जाती है, वहाँ होमियोपैथी अर्थात् सदृश चिकित्सा पद्धति में गर्मी को दूर करने के लिये गर्मी उत्पन्न करने वाली औषधि का ही प्रयोग किया जाता है। दूसरे शब्दों में 'जहर की काट जहर होती है' वाली कहावत लागू होती है।

भारतीय आयुर्वेद ग्रन्थों में भी 'विषस्य विषमौषधम्' का

सूत्र का जो वर्णन है—'विष की चिकित्सा विष ही है' यह वाक्य ही होमियोपैथी का प्रारम्भिक सूत्र है।

आयुर्वेद ग्रन्थों में भले ही विष की चिकित्सा विष ही है की बात लिखी हो मगर आयुर्वेद चिकित्सा इस पर पूरी तरह निर्भर नहीं करती।' इसमें बहुत सी औषधियां ऐसी हैं जिनकी गणना सदृश चिकित्सा के अन्तर्गत की जा सकती है। परन्तु अधिकांश औषधियां विपरीत चिकित्सा पद्धतियों पर ही आधारित है।

यही बात यूनानी तथा एलोपैथी में भी पाई जाती है।

होमियोपैथी गुण एवं विशेषता :—होमियोपैथी चिकित्सा पद्धति उपरोक्त तीनों प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों से भिन्न है। इसमें प्रत्येक रोग के लिये सदृश गुण धर्म वाली औषधियों का प्रयोग किया जाता है। अतः होमियोपैथी अन्य चिकित्सा पद्धतियों से अपना भिन्न स्थान रखती है।

प्रकृति का यह नियम है कि वह शरीर में एक जैसे दो रोग का नहीं रहने देती—एक ही शरीर में दो असमान रोगों की उपस्थिति रह सकती है—और यह भी हो सकता है कि शरीर में पहले से ही चल रहे किसी एक रोग को दबाकर दूसरा असमान रोग स्वयं प्रबल हो उठे—तथा वह अपने प्रभाव काल में पहले वाले रोग के लक्षणों को प्रकट न होने दे।

ऐसी स्थिति में जबकि शरीर में दो असमान रोग एक साथ हों, तब प्रबल वेग वाले रोग अपना भोग काल समाप्त कर लेता है।

विपरीत विधान वाली चिकित्सा पद्धतियों (एलोपैथी आदि) में औषधियों द्वारा शरीर में कृत्रिम विपरीत रोग उत्पन्न किया जाता है। यह कृत्रिम विपरीत रोग शरीर के प्राकृतिक रोग को दबा देता है। जिसके कारण यह अनुभव होने लगता है मानो

का प्राकृतिक रोग स्थापित ही रहता है। परन्तु इसे बल
औषधियों द्वारा उत्पन्न किये गये कृत्रिम रोग का वेग ख
पड़ जाता है तब वह प्राकृतिक रोग पुनः उभर सकता है।

इस नियम अनुसार विरोधी चिकित्सा वाली चिकित्सा
रोग का कुछ समय के लिये शमन हो जाता है परन्तु
पूर्णतया नष्ट नहीं हो पाता।

सदृश चिकित्सा पद्धति (होमियोपैथी) में औषधियों द्वा
कृत्रिम रोग उत्पन्न किया जाता है वह शरीर में स्थित प्राकृति
रोग के समान ही होता है। उसमें अन्तर केवल यही होता
कि प्राकृतिक रोग की अपेक्षा औषधियों द्वारा उत्पन्न कि
गया वैसा ही रोग अधिक शक्तिशाली होता है।

इसका परिणाम यह होता है कि बलवान कृत्रिम रो
अपने से कमजोर प्राकृतिक रोग को दबाकर पहले तो उ
पूर्णतया नष्ट करता तत्पश्चात् जीवन शक्ति के प्रभाव से स्व
भी समाप्त हो जाता है। इस प्रकार शरीर पूर्णतः रोग मु
हो जाता है।

घरेलू चिकित्सा के लिये होमियोपैथी ही सबसे सफल क्यों ?

इस छोटी सी घरेलू पुस्तिका में जहां हम आगे चलकर रोग, रोग के लक्षण और उसके होमियोपैथी द्वारा सरल और सहज इलाज की बात बतायेंगे—वहीं आपको इस बात को पूरी तरह जान विश्वास कर लेना चाहिये कि होमियोपैथी की सबसे मुख्य सरलता यह है कि इसे नौसिखिया से नौसिखिया इन्सान भी प्रयोग कर सकता है और अगर इसकी दवाएं किसी कारण से फायदा न भी दें तो नुकसान नहीं करतीं।

आपने शायद देखा या सुना हो कि होमियोपैथी की घर में रखी शीशियों की मीठी गोलियाँ छोटे बच्चे खा लेते हैं—छोटे बच्चे ने खा लिया तो खा लिया। उसके लिये चिन्तित या परेशान होने की कोई जरूरत नहीं। अन्य औषधियों के लिये यह बात लागू नहीं हो सकती, वे नुकसान कर जाती हैं।

होमियोपैथी की दवाएं सहजता से सेवन की जा सकती हैं।

होमियोपैथी की दवाएं कम से कम जगह घेरती हैं तथा कम से कम कीमत की उपलब्ध होती हैं।

इसकी मीठी गोलियां बच्चे भी बड़े चाव से खाना पसन्द करते हैं।

इसके गुणों को जानने वाला कोई भी व्यक्ति एक दवा से अनेक रोगों को दूर कर सकता है। कैसे, किस प्रकार? इन बातों को आप आगे चलकर समझेंगे।

एक बात को विशेष रूप से होमियोपैथी में ध्यान रखना आवश्यक है कि इसका इलाज 'ज्यों का त्यों' अर्थात् 'ठीक वही' न होकर उससे मिलता-जुलता हुआ करता है। अर्थात् रोग उत्पन्न करने वाली वस्तु से मिलती-जुलती कोई अन्य वस्तु देकर प्राकृतिक रोग को दूर कर देने की प्रणाली को ही होमियोपैथी कहा जाता है।

उदाहरणार्थ—किसी व्यक्ति द्वारा संखिया खा लेने के कारण यदि उसे वमन, दस्त, तृषा आदि की शिकायत हुई है तो आवश्यक नहीं कि उसे संखिया ही देकर ठीक किया जाये—अपितु संखिया जैसे ही गुण धर्म वाले किसी अन्य पदार्थ को देकर भी उसे ठीक किया जा सकता है।

किसी अन्य वस्तु के सेवन से यदि किसी व्यक्ति को वमन, दस्त, तृषा आदि की शिकायत है तो उसे संखिया (आर्सेनिक

[illegible]) देकर ही ठीक किया जा सकता है।

होमियोपैथी चिकित्सा का मुख्य उद्देश्य यही है कि रोग के लक्षण तथा औषधि के गुण—ये दोनों ही बराबर मिलते-जुलते होने चाहिये।

रोग और उपचार —

जिस प्रकार अन्य चिकित्सा पद्धतियों में रोगों के अनुसार औषधियाँ देने का प्रचलन है, होमियोपैथी में ऐसी बात नहीं है। होमियोपैथी में रोग का कोई नाम नहीं है। इसमें शरीर में होने वाली विकृतियों के लक्षणों के आधार पर चिकित्सा की जाती है। अतः इसे 'लाक्षणिक चिकित्सा विधान' भी कहा जा सकता है।

पाठकों की सुविधा के लिये इस पुस्तक में होमियोपैथी रोगों के नाम का उल्लेख आगे चलकर किया जायेगा।

परन्तु इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक है कि होमियोपैथी रोग के किसी नाम को स्वीकार नहीं करती। यह तो लक्षणों के आधार पर शारीरिक विकृतियों को उसी के समान गुण-धर्म वाले पदार्थ औषधियों के माध्यम से दूर करने का प्रयत्न करती है।

शारीरिक विकृति अर्थात् रोग के लक्षणों की पहचान किस प्रकार की जाती है इस सम्बन्ध में आगे चलकर आप जानकारी प्राप्त करेंगे।

अन्य सदृश चिकित्सा पद्धतियां —

प्रकृति का यह नियम है वह शरीर में एक जैसे दो रोगों [illegible]ही रहने देती—यह सिद्धान्त होमियोपैथिक के आविष्कारक डा० क्रिश्चयन फेडरिक सैमुअल हैनीमैन का है। जो [illegible] थोड़ा नाम होमियोपैथी चिकित्सा के जन्म

दाता हैनीमैन, जिन्हें चिकित्सा जगत में महात्मा हैनीमैन के नाम से भी जाना जाता है—का ही है। उनके बारे में संक्षिप्त जानकारी आगे दी जायेगी। यहां यह बताने का प्रयास किया जा रहा है कि होमियोपैथी के अलावा भी आगे चलकर अन्य सदृश चिकित्सा पद्धतियां प्रकाश में आयीं।

डा॰ हैनीमैन के सैकड़ों शिष्य थे। उनके अनेक अमेरिकी शिष्यों ने आगे चलकर चिकित्सा विज्ञान में नये-नये प्रयोग किये। डा॰ हैनीमैन द्वारा प्रतिपादित सदृश चिकित्सा के सिद्धान्तों पर ही डा॰ शिशुकर द्वारा बायोकैमिकल चिकित्सा—डा॰ वोस्टेडर द्वारा 'एण्टीटॉक्सिन'—डा॰ राइट द्वारा 'आप्सोनिन' तथा डा॰ विल्फ्टन द्वारा 'झायो टॉनिक प्लाज्मा' आदि चिकित्सा पद्धतियों का आविष्कार किया गया। मूलतः इन सबको महात्मा हैनीमैन की ही देन समझना चाहिये।

होमियोपैथी के जन्मदाता कौन थे ?

होमियोपैथी चिकित्सा के जन्मदाता डा॰ क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनीमैन हैं, इसे पहले बताया जा चुका है।

इनका जन्म 10 अप्रैल 1955 ई॰ को जर्मनी के सैक्सन राज्य के मैसेन नामक नगर में हुआ था।

उनके पिता एक निर्धन व्यक्ति थे—वे मिट्टी के बर्तन तैयार करने वाले एक कारखाने में चित्रकारी का काम करते थे। हैनीमैन परिवार की गरीबी का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि रात्रि में अध्ययन के लिये हैनीमैन जिस मिट्टी के दीपक को जलाते थे, उन्होंने अपने ही हाथों से तैयार किया था।

बीस वर्ष की आयु तक हैनीमैन मैसेन के एक ही विद्यालय में अध्ययन करते रहे, तत्पश्चात् उन्होंने लिपजिग नगर में आकर विद्या अध्ययन किया। बचपन से ही वे बड़े कुशाग्र बुद्धि के थे।

रसायनिक तत्वों की इतनी जानकारी थी उन्होंने अपनी [illegible] में एक नई [illegible] ख्याति प्राप्त कर ली थी। चिकित्सा शास्त्र एवं रसायन विज्ञान के तो वे पारंगत पण्डित थे ही।

इन्होंने जर्मन के अतिरिक्त ग्रीक, अंग्रेजी, फ्रेंच, लैटिन, ग्रीक, हिब्रू, इटालियन, सीरियन, अरबी आदि भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डा० हैनीमैन का पहला विवाह 1782 ई० में हेनरिटैस कुचलर नामक एक परम सुन्दरी एवं गुणवती महिला के साथ हुआ। इसके बाद वे यूरोप के एक अस्पताल में चिकित्सक के पद पर कार्य करने लगे। लगभग 10 वर्षों तक उन्होंने एलोपैथी चिकित्सा का कार्य किया। विपरीत चिकित्सा विधान का प्रचार 'हिप्पोक्रेटिस' नामक एक विद्वान द्वारा किया गया था—जिसको हैनीमैन ने काफी दिनों तक समझने का प्रयास किया।

एलोपैथी चिकित्सक का कार्य करते समय हैनीमैन को कुछ ऐसे अनुभव हुए जिससे उनका मन इस चिकित्सा पद्धति से हटता चला गया।

फलतः उन्होंने चिकित्सा का कार्य छोड़ दिया और वे रसायन शास्त्र तथा वैज्ञानिक पुस्तकों का अनुवाद करके आजीविका का उपार्जन करने लगे।

सन् 1790 ई० में डा० कालन लिखित 'एलोपैथिक [illegible]' का जर्मन भाषा में अनुवाद करते समय उन्होंने एक स्थान पर पढ़ा कि 'सिनकोना' नामक औषधि [illegible] तैयार की जाती है—जाड़ा लगकर आने वाले ज्वर [illegible]) को दूर करती है। साथ ही यह भी कि यदि कोई [illegible] सिनकोना का सेवन करे तो उसे जाड़ा लगकर [illegible] भी आ जाता है।

इस विवरण को पढ़कर डॉ॰ हैनीमैन के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि क्या कुछ और भी औषधियां हैं जो रोग को उत्पन्न करने तथा उन्हें शान्त करने—दोनों बातों की सामर्थ्य रखती हैं।

सर्वप्रथम उन्होंने अपने स्वस्थ शरीर पर सिनकोना का ही प्रयोग किया—उसके सेवन से उन्हें जाड़ा आकर बुखार आ गया। फिर उसी सेवन से दूर भी हो गया।

बस यहीं से हैनीमैन ने अन्य औषधियों पर भी परीक्षण आरम्भ कर दिये—लगभग छः वर्ष के प्रयोग परीक्षण एवं अनुभव के बल पर उन्होंने 27 ऐसी मुख्य औषधियों को ढूंढ निकाला—जिसमें किसी रोग को उत्पन्न करने तथा उन्हें शान्त करने के ही गुण पाये जाते थे।

2 जुलाई 1843 ई. को महात्मा हैनीमैन का स्वर्गवास हुआ।

दवाइयों का शक्ति-क्रम अथवा पोटैन्सी

होमियोपैथिक चिकित्सा में दवाइयों की शक्ति का बड़ा महत्व है, इस बात को आप आगे चलकर अच्छी तरह समझ सकेंगे। शक्ति को क्रम भी कहते हैं तथा इंग्लिश में पोटैन्सी कहा जाता है। होमियोपैथी में शक्ति तीन प्रकार की होती है। निम्न, मध्यम और उच्च (हाई पोटैन्सी) 1, 1X, 2, 2 X, 3, 3X, इसी तरह 6, 6X तक निम्न पोटैन्सी कहलाती है। 12, 12X से 30, 30X तक मध्यम और 200, 200X या इससे ऊंची शक्ति को उच्च क्रम कहते हैं।

मूल अर्क का निशान क्यू (Q) तथा विचूर्ण का (X) होता है।

जो शक्ति जिस औषधि में उपयुक्त है, वह क्रम या पोटैन्सी

साधारणतया परिच्छेद में प्रत्येक दवाई के साथ आगे लिखा गया है।

दवाई रखने का ढंग:—होमियोपैथिक दवाइयों की गुण सम्बन्धी क्षमता कमजोर होने से इनके रखने का ढंग भी कुछ विशेष बताया जाता है, जैसे जहां दुर्गंध, धुआं या कुहरा आदि हो वहां दवा न रखनी चाहिये। इनके रखने का स्थान शुद्ध, सूखा हो। दवाइयां बक्स में रखनी चाहियें। दवाइयों का तैयार शुदा बक्स होमियोपैथी स्टोर से खरीदा जा सकता है। शीशी का कार्क या ढक्कन ढीला न हो, जिससे हवा न घुस सके।

खराब या बिगड़ी दवा:—तरल दवाई जब गाढ़ी हो जाये या रंग बदल जाये और गोली या सूखी (पाउडर) का रंग सफेद न रह जाये तो उसको खराब समझकर प्रयोग करना उचित नहीं।

कुछ औषधियों का रंग भी होता है, विशेषकर जो निम्न शक्ति (पोटेन्सी) की होती हैं।

दवा की मात्रा—

1. तरल दवाई की मात्रा एक, दो बूंद स्वच्छ जल या मिल्क शुगर (दूध के चूर्ण) में मिलाकर दी जाती है। (दूध का चूर्ण होमियोपैथी की दुकान पर मिलता है)।
2. छोटी गोली नं० 20 तक की चार-छः गोली एक खुराक के रूप में।
3. मध्यम गोली नं० 30 तक दो-दो गोली।
4. बड़ी गोली नं० 40 तक एक-एक गोली।
5. टिकिया की, तीन या चार की मात्रा एक बार में।
6. चूर्ण (पाउडर) दो से चार ग्रेन तक।

बारह वर्ष से कम आयु वालों को आधी मात्रा और बच्चों को चौथाई मात्रा में दवा देनी चाहिये।

अगर यदि किसी कारण दवा ज्यादा मात्रा में दे दी गई है तो भी चिन्ता की कोई बात नहीं। होमियोपैथी में यह विशेष गुण है कि दवा नुकसान नहीं करती। जितनी मात्रा को लाभ करना है, वह करेगी, शेष दवा शरीर में अपने आप अपना शक्ति खो देगी।

दवाई प्रयोग में समय का अन्तर:—साधारण रोग में 3-4 घण्टे का अन्तर रखना चाहिये। ज्यादा कष्टकर रोग के समय, जैसे पेट दर्द में तड़पते रोगी को 5, 10, 15, 30 मिनट के अन्तर से दवा दी जा सकती है।

दवाई खाने से पहले पानी से कुल्ला कर मुंह साफ कर लेना चाहिये। दवा खाने के कुछ समय पहले और कुछ समय बाद तक किसी अन्य वस्तु का प्रयोग नहीं करना चाहिये। बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, इलायची, सुपारी जैसी चीजों का प्रयोग दवा सेवन के समय जहां तक सम्भव हो न करें। वरें तो आध घण्टे पहले और पीछे न कर मुंह को दुर्गन्ध या सुगन्ध से साफ रखें

एक से अधिक दवाओं का प्रयोग कैसे करें ?

जिस प्रकार एक रोगी के रोग लक्षण कई प्रकार के होते हैं उसी प्रकार एक ही दवा के भी कई लक्षण होते हैं। समलक्षण की दवा ढूंढकर देनी चाहिये—जिसका पूर्ण विवरण रोग लक्षण वाले आगे के पृष्ठों पर दिया गया है। घरेलू चिकित्सा के लिये चूंकि इस पुस्तक की उपयोगिता है, अतः यदि आपको रोग लक्षण ढूंढ निकालने में असुविधा है तो आप कोई भी लक्षणानुसार दो-तीन दवा आगे-पीछे रोगी को दे सकते हैं। एक साथ दो दवायें देने से यथेष्ठ लाभ नहीं होता। दस-पांच मिनट का अंतर देकर अन्य लक्षण वाली दवायें दी जा सकती है।

[illegible]

[illegible]

● [illegible] ●

[illegible] रोग में चिकित्सा

[illegible]

[illegible]

[illegible]

चेहरे की आकृति कमजोर, पान के कारण जीवन [illegible] हो और [illegible] । बहुत से मारकिनों के बीच जाने से भर गये—जैसे, नाटक या सिनेमा हॉल में प्रवेश से भर गया। इस बात के लिये [illegible] रहना कि रोग प्रकट न होगा।

रोग ज्वर से संदूषण, सूखी खांसी, पसीने रहित ज्वर में तेज प्यास के साथ उत्कंठा और बेचैनी। पानी बार-बार पीता है। छाती में तथा अन्य प्रकार के घावों के रोग। आंखों को

औषधि विवरण

सं.	हिन्दी नाम	छोटा नाम	अंग्रेजी नाम	छोटा नाम
1	एकोनाइट नैप	एकोन	Aconite Nep	Acon N.
2	एलो	एलो	Aloe	Alon.
3	अर्निका	आर्नि	Arnica Mont	Arn, M.
4	आर्सेनिक एल्ब	आर्स	Arcenic Alb	Ars A
5	बैप्टीशिया	बैप्टि	Baptisia. Tine	Bapt T.
6	बैलेडोना	बैले	Belladona	Bell.
7	ब्रायोनिया	ब्रायो	Bryonia Alb	Bry. A
8	कलकेरिया कार्ब	काल्के. का	Calcarea Carb	Cal. C
9	कैन्थरिस	कैन्थ	Cambaris	Carb
10	कैमोमिला	कैमो	Chamomilla	Cham.
11	चायना	चायना	China Off	Chin Off
12	कोलोसिन्थ	कोलो	Colocynth	Coloc.
13	डल्कामारा	डल्का	Dulcamara	Dulc.
14	हीपर सल्फ	हीपर	Heper Sulph	Hep. S.
15	इग्नेशिया	इग्ने	Ignatia Amara	Ign. A
16	इपिकाक	इपि	Ipecacuauka	Ipce.
17	लैकेसिस	लैके	Lachesis	Lach.
18	लाइकोपोडियम	लाईको	Lycopodium	Lyco
19	मर्कसोल	मर्क	Mercurius Sal	Mcrc. S
20	नक्स वोमिका	नक्स वोम	Nyx Vomica	Nux V.
21	फाइटोलैक्का	फाइटो	Phytolacca	Phyto
22	पल्सेटिला	पल्स	PulsatillaNiq	Puls. N
23	रसटाक्स	रसटाक्स	Rhustox	Rhus. T
24	सीपिया	सीपिया	Sepia	Sepia
25	सल्फर	सल्फ	Sulphur	Sulop.

न्ध रहती है।

आंख, नाक, कान तथा फोड़े फुन्सी में रक्त स्राव होता वह कट जलन करने वाला होता है। अन्य ज्वरों के अतिरिक्त टाइफाइड में भी बहुत गुणकारी है। विशेषकर जब टाइफाइड बहुत दिनों का चल रहा हो।

बैप्टीशिया ३० :—इस दवा की विशेषता: बहुमूल्य समझ हैं। सभी प्रकार के मल-मूत्र, पसीना, श्लेष्मा, जख्मों मवाद आदि में। सांस में बदबू आंत्रिक ज्वर में, ऐसे ज्वर में जिसमें सड़ी बदबू जैसे दस्त होते हैं। गले में जख्म मगर दर्द नहीं होता। तरल पदार्थ पीने में कोई दर्द नहीं होता, परन्तु थोड़ा भी कड़ा पदार्थ निगला नहीं जाता दर्द होता हो।

ज्वर अवस्था में अर्धमूर्छा, बात करते-करते सो जाना सुस्ती तथा मानसिक परिश्रम से अरुचि। चेहरा बर्म तमतमाया हुआ। बच्चों के बदबूदार दस्त में इसका प्रयोग बेहद लाभ होता है। टाइफाइड ज्वर में इसका प्रयोग हितकारी। ऐसे जाड़ा जो माथे से चढ़ता हो पीठ तथा अन्य अंग ऐसे लगते जैसे अंग अंग कुचला जा रहा हो।

बैलेडोना या बेलाडोना ३० :—यह औषधि प्रायः नवीन और तीव्र रोगों में अधिक काम आती है।

पित्त प्रधान तथा रक्त की अधिकता से प्रचण्ड रोग। सर गर्म, चेहरा लाल, सूजन, सारा शरीर इतना कि छुआ न जा में शरीर इतना गर्म जो दूर से ही सेंक जैसी गर्मी मालूम दे।

गाल, ओंठ पर कांटे दिखाई दें—ओंठ बीच में इस कदर लाल मानो अभी रक्त उबल पड़ेगा। बहुत गर्म, सूजन स्थान से मानों आग की लपटें ... दर्द कहीं भी हो, एकाएक आने का बोध होता

और चला जाता हो।

स्त्रियों के पेट में ऐसा मालूम होता है कि पेट का सभी कुछ
नि को तरफ रहा हो, योनि की राह से कुछ बाहर निकल
गा। साथ में पेट में दर्द रहता हो।

आयोनिया 30 :—इस औषधि के अन्तर्गत जो रोग आते
वह सभी पित्ताश्रित रोग होता है। झिल्लियों का सूखापन।
त का प्रकोप बढ़ जाना, जीभ का सूखना, गले और पक्वाशय
सूखापन इसी पक्वाशय के कारण रोगी को प्यास लगती है
र मरीज अधिक पानी पीता है।

पेट की आंशिक झिल्लियों का सूखापन, इनका चिकनापन
ना सूखा कि कब्ज हो जाए। यदि मल आये तो सूखा काला,
ले से, कड़ा मल जला हुआ सा। जीभ फटी मैली व पीले रंग
, मैल जमी और सूखी हुई होती हो।

खांसी कष्ट कर, सूखेपन के कारण बलगम निकलने में कष्ट
क का रंग पीला गाढ़ा। रोगी खांसते समय सीने को दबा ले।
निमोनिया का दर्द हो या प्लूरिसी का अथवा शरीर के भाग में
र्द हो, रोगी दर्द के स्थान को दबाये रखता है।

कलकेरिया कार्ब 30: श्लेष्मा या दूषित वायु से लगने
ली बीमारियों की विशेष औषधि।

लम्बी हड्डी का टेढ़ापन, पीठ की हड्डी का टेढ़ापन।

सारे शरीर में ठण्ड का अनुभव होता हो। सर और पांव
सर ठण्डे रहते हों।

पाचन शक्ति की कमी के कारण मुंह से लेकर पक्वाशय
क खटास, डकार, स्वाद खट्टा, खाया हुआ पदार्थ खट्टा होकर
ह में आये। शरीर से खट्टी गन्ध आये।

जो बच्चे चलने और बोलने में देर कर रहे हों, इस औषधि
प्रयोग लाभप्रद है।

कैम्परिस 30 :—पेशाब का बार-बार होना, परन्तु हर

[illegible]

[illegible]

[illegible]

बच्चों के दाँत निकलने के समय अतिसार, हरे रंग के, अंडे की तरह गन्ध वाले हों, इस दवा से लाभ निश्चित है। बच्चा रोता रहता हो, जिद्दी, चिड़चिड़ा किसी तरह शान्त होता हो। गोद में चढ़कर घूमना चाहता हो।

नये जन्मे बच्चे हों या प्रसूता या युवक अथवा किसी भी आयु का हो पेट में दर्द है, पेट में वायु, गोल की तरह सिकुड़े और वेदना के कारण सीधा न फिरे। क्रोधी उग्रता आदि स्वभाव रहते हों—यह दवा मन्त्र की तरह काम करती है।

रोगी बच्चे का एक गाल लाल और गर्म तथा दूसरा पीला ठण्डा रहता हो। पेट दर्द के समय वायु का निस्सारण तो होता है परन्तु दर्द में कमी नहीं होती।

भोजन के समय पसीना आता हो। दांत में दर्द या चटक होता हो—मुंह में गर्म वस्तु रखने से दर्द असह्य हो उठता

प्रारम्भ होकर टांगों की तरफ नीचे को आता हो। "

सूखी खांसी, निद्रित अवस्था मे खासी, शीत ऋतु में खांसी बढ़ जाती हो। अनिद्रा या पद तलो मे जलन होती हो। इन उपरोक्त लक्षणों मे बड़ों-बच्चों युवा सबके लिये हितकारी है।''

चायना 30 :— वह व्यक्ति जो बलवान तो है, परन्तु मरने से डरता है। जीवन बदमजा है ऐसे ही विचार बने रहते हैं।

रक्त स्राव होने से, स्तन का दूध पिलाने से, वीर्य अधिक क्षय, श्वेत प्रदर (ल्यूकोरिया), पतले पाखाने अधिक होने के कारण पीला मलिन, रसहीन, आकृति दिखाई दे। कमजोरी के कारण मूर्छा आ जाती हो।

सर दर्द ऐसा कि खोपड़ी उड़ी जा रही हो। दर्द की उत्पत्ति का कारण रक्त आदि का ह्रास तथा इन्द्रिय सेवन की अधिकता का परिणाम समझ लेना चाहिये। खड़े होने या चलने फिरने से सर दर्द घटने लगता है।

पेट में दर्द, वायु से सारा पेट भरा मालूम होता है।

जिगर स्थान मे दर्द, दाहिनी पसलियों के नीचे का दर्द आंखें पीली, मल का रंग ठीक न होना, भूख की कमी होते ही खाने की बहुत ज्यादा इच्छा होना।

दर्द स्थान को छूने से दर्द मे वृद्धि होती है।

दांत दर्द में, दांत से दांत के छू जाने से भयकर दर्द।

कोलोसिन्थ 30 :—थोड़ी सी बात में क्रोधित हो जाना, अधीर अप्रसन्न हो जाना, पेट में दर्द, असहनीय दर्द में रोगी आगे को झुककर पेट दबाये, दर्द में आराम मालूम पड़े। लक्षणों मे कोलोसिन्थ राम बाण साबित होती है।

. बायीं और कभी ओर के कूल्हे की संधि में तेज

की तरह दर्द, झुकने से आराम होता है और पीछे पीछे से होकर घुटने के पीछे की तरफ घुटने के गड्ढे तक आता है।

उदर शूल, आंतों में बनावट, जैसे पत्थरों के बीच आंतें दबाई जा रही हों। रोगी दोनों घुटने पेट से लगाकर दबाता है। पेट दबाकर इधर-उधर टहलने लगता है।

दांत निकलते बच्चों में भी ऐसे लक्षणों का पेट दर्द हो सकता है। पेट दर्द की तीव्रता में इस दवा को कभी न भूलना चाहिये।

यह दवा मनुष्य के अलावा, पशुओं के पेट दर्द में भी लाभप्रद है।

डलकामारा 30 :—ठण्डी तर हवा लगने से जुकाम हो जाता हो, नाक से पानी बहता हो।

दस्त पानी की तरह, आंव मिले, पेट में दर्द के साथ, बिना दर्द के दस्त हों।

मलेरिया या वात रोग में गर्दन अकड़ जाय।

बालक बालिकायें नंगे पांव ठण्डे पानी में घूमते हैं तो कभी कभी उनका पेशाब रुक जाता है। औरतों को ऋतु से पहले उद्‌भेद निकलते हैं, इसी से जाना जाता है कि मासिक ऋतु आने वाला है। इन सबमें लाभकारी। दाद जो बरसाती मौसम दोहराया करता है, दाद जिसमें रक्त स्राव होता है। आंवी मस्से निकला करते। वृद्धों का बलगमी श्वास अर्थात् दमा, यह सब रोग लक्षण ऋतु बदलने पर अक्सर पैदा करते हैं।

हीपर सल्फ 30 :—रोग स्थल को छूने से या कपड़ों को छूने से बेहोशी सी पीड़ा हो। दर्द हो, मवाद पैदा हो जाये, मामूली चोट या खरोंच लग जाये तो फोड़ा फुन्सी हो जाये, उसमें जल्दी मवाद पड़ जाता हो।

जिन्होंने पारा या पारा मिली दवा का व्यवहार किया हो, यह दवा अमृत के समान होती है।

खांसी सूखी, जब ठण्डी सूखी हवा लगती हो, खांसी निढाल कर देती हो। शरीर का कोई भी अंग वस्त्र रहित होने से खांसी का जोर बढ़ जाता हो।

दमा रोग से आराम पाने के लिये सीधा या सर पीछे करके बैठता हो—छाती की बायीं ओर काटा गड़ने जैसा दर्द अनुभव करता हो। इस प्रकार के रोगी का दर्द शाम को आरम्भ होता है। सर्दी लगती है—सर्दी लगती है और ज्वर है। रात भर पसीना आता है परन्तु ज्वर घटता नहीं। रोगी के पसीने में गन्दी बदबू बनी रहती है।

बच्चों के दस्त पतले, बदबूदार, खट्टी गन्ध वाले होते हैं। सामान्य कारणों से भी बच्चों के पेट में गड़बड़ी हो जाती है। बच्चे मीठी चीजें खाना पसन्द नहीं करते। वे खट्टी, कड़वी, मसालेदार चीजें खाना पसन्द करते हैं। इन सब लक्षणों में लाभकारी।

इग्नेशिया 30 : – किसी प्रकार का ऐसा मानसिक रोग जिसमें रोगी हंसने लगे, हंसने, और प्रसन्नता की बात में शोक ग्रस्त हो जाना।

भोजन करने के बाद भी पक्वाशय खाली मालूम होना। बवासीर का दर्द असहाय हो रहा हो।

खांसी उठने पर रोके न रुके—बढ़ती जाये। गाड़ी इत्यादि पर यात्रा करने से कब्ज की शिकायत हो जाये।

कोमल स्वभाव वाली स्त्रियों को इस दवा की बहुत जरूरत पड़ती है क्योंकि वे जरा-जरा सी बात पर शोक और दुःख का अनुभव करती हैं, उत्तेजित हो उठती हैं। प्रेम की इच्छा निष्फल होने पर उदासीन हो उठती हैं। गुस्से वाली बात नहीं होती।

हिस्टीरिया रोग ग्रस्त औरतों के लिये विशेष

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] है ।

[illegible] दर्द [illegible] होता है [illegible] है ।

[illegible] दर्द [illegible] हुआ ।

मलेरिया ज्वर । कुनैन या कुनैन के अब आयुर्वेद में [illegible] समान ज्वर, सिरदर्द के साथ सभी प्रकार के ज्वर । और [illegible] महीनों पर भी लाभप्रद । यदि बारम्बार बार-बार आक्रमण करे । दवा की एक दो मात्राएं एक दो दिन प्रयोग करें [illegible] दूसरे दिन लक्षण अनुसार दूसरी दवा का प्रयोग करने से पुनः ज्वर नहीं आने पाता ।

स्पैगेलिया 30 —सर दर्द बायीं ओर होता है या बायें [illegible] तक भी आर फैल जाता है । नींद की अवस्था में दर्द बढ़ जाता है ।

यदि मुँह के जबड़े में विकार हो और मुँह खोलना न जा[illegible] यह औषधि जबड़ा खोल देती है। गले में दर्द, बायीं [illegible]

...ता है, जीभ कांपती है और बाहर निकलते समय दांतों ...ाती है।

...र अवस्था में बार-बार वमन और मिचली के साथ

...ासीर सूखी या खूनी हो। मस्से बाहर या अन्दर हों। ...सा लटका लगने से मल द्वार के ऊपर की तरफ दर्द का ... यदि रक्त स्राव होता हो तो कालिमा रंग लिये होता

...इसोफोरियम 30 :—यह औषधि शरीर के दाहिने ... होने वाले रोगों के लिये लाभप्रद है। इसका आक्रमण ... दाहिने भाग पर होता है। बालक, युवा तथा वृद्ध ...इसे लाभ लेते हैं। रोग के बढ़ने का समय तीसरे पहर ... बजे तक होता है।

...र दर्द मानो सर फटा जाता है। दिमागी सुस्ती ...ह भी ऐसे ही ज्वर में। अन्धेरे में भी आंख के आगे ...सी दिखाई देना। जुकाम के कारण बन्द नाक का सुश्क ...।

...ढ़गी मल ग्रंथि सूजी तथा उसमें दर्द। गले में नमकीन ... का बलगम निकलता हो। भूख लगती हो मगर एक ...खाने से ही पेट भरा सा मालूम देने लगता है।

...त:विकार, खट्टी डकार, पेट में वायु भरी रहती हो। ...र्दे में दर्द, मूत्र, पथरी, पेशाब में रेत के लाल कण। ... पहले दर्द के कारण बच्चा चिल्लाये।

...यों के दाहिने हिस्सधार का दर्द। तल पेट में दर्द, ... दर्द। अधिक इन्द्रिय सेवन का दुष्परिणाम नामर्दी, ...ा छोटा हो जाना। वृद्धों में शक्ति क्षीण होने पर इस ...ते शक्ति प्राप्त की जा सकती है।

दर्द गोल 30 : शीघ्र तर और धाव गुदा
योन फुन्सी । कभी यू कभी भार बढ़े सूजा।
अन्दर जलन और तारे । नाक की नर्मी अथवा जुकाम
बहुत, अलग करने वाला गाढ़ापानी निकलता है। मूर्ख
जैसा दर्द ।

• यकृत में एक गंदा और मारीन प्रतीत होता है
सुई चुभन जैसा दर्द ।

मासिक ऋतु काल में स्तनों में दर्द—ऋतु साव
आराम होने से दर्द घटने लगता हो । कभी रज रुक
स्तनों में दूध पैदा हो जाना महसूस हो । गर्भ काल में
और वमन ।

युवकों में सेवन के प्रति कमजोरी, शीघ्र पतन । बा
बार इन्द्रिय पर हाथ रखे, शरीर कमजोर होता जाये ।

पेचिश में लाभप्रद ।

नक्स वोमिका 30 :—मानसिक रोगियों के लिये
पुराने रोगी इस दवा से शीघ्र रोग रहित हो जाते हैं
प्रकृति वाले, बदला लेने की प्रबल इच्छा, जिद्दी तथा
स्वभाव ।

अजीर्ण या रात भर जागने से सर दर्द होने लगता
की सर्दी, जुकाम होने पर रात में खुश्क रहता है दिन
की तरह बहता है ।

भोजन के कुछ देर बाद पेट में भार मालूम पड़े जै
पत्थर पड़ा है ।

यकृत बढ़ा हुआ कठोर । मासिक ऋतु अनियमित
कभी समय पर नहीं आता ।

नाभि की आंत उतरना, हार्निया—ज्वर जैसी
उत्ताप तथा जाड़ा अवस्था में ओढ़ने की इच्छा हो ।

पुठी ववासीर दर्द टीस पीड़ा में लाभप्रद।

फाइटोलैक्का 30:—जलवायु के परिवर्तन होने से कुल्हाफैषा के दर्द रोग के आक्रमण को यह दवा रोकती है। रोगी का चेहरा, माथा तथा सर गर्म रहता है। शेष अंग प्रत्यंग ठण्डे रहते हैं। गले का रंग लाल और टेंटुआ बढ़ा हुआ रहता है। स्तनों की सूजन, स्तन कठोर, कड़ी पत्थर की तरह गांठें दस्तों का रंग भूरा।

बच्चों के दस्त रोग में बच्चे अपने दांत या मसूड़े आपस में दबाते हैं। आंखों से पानी बहता है। जुकाम में एक नथुना बन्द दूसरे से पानी बहे। मुंह का स्वाद फीका। गरम पतली वस्तु पीने से अरुचि।

दिल का दर्द जो दाहिनी ओर बढ़ता जाए। अंगुली के जोड़ों में दर्द—दाहिने कन्धे का दर्द।

पल्सेटिला 30:—यह कोमल स्वभाव वाले व्यक्तियों की दवा है—इसलिये यह स्त्रियों के लिए विशेष लाभप्रद मानी जाती है। रोगिणी अपना रोग बताते समय इतनी अधीर कि रोग के लक्षण बताते समय आसू बहाने लगती है। अपना कष्ट बताना कठिन हो जाता है। यह सब कोमल स्वभाव का कारण होता है। दूसरे के प्रति सुहानुभूति प्रकट करती है तथा उसकी चिंता में लीन रहती है। सभी से प्रेम व हमदर्दी करना अच्छा लगता है।

सर में चक्कर जैसे नशे में हो। सर दर्द मानसिक चिंता के कारण और अधिक गरिष्ठ पदार्थों के सेवन के पश्चात् सर गर्म रहे और दर्द शाम को बढ़ता जाये।

आंख के ऊपरी पलक पर अंजली बार-बार निकलती है।

खसरा जब अच्छी तरह नहीं निकलती तो बड़ीं से

मर्क सोल 30 :– जीभ तर और [illegible], जीभ पुलपुली। गन्दी बू वाली लार, मुंह के अन्दर जख्म और छाले। नाक की सर्दी [illegible], बहुत, जलन करने वाला गाढ़ा पानी निकलता है। [illegible] जैसा दर्द।

यकृत में रक्त संचय और बारीक प्रतीत [illegible] सूई गड़ने जैसा दर्द।

मासिक ऋतु काल में स्तनों में दर्द– ऋतु [illegible] आराम होने से दर्द घटने लगता हो। [illegible] स्तनों में दूध पैदा हो जाना मालूम हो। [illegible] और वमन।

युवकों में सेक्स के प्रति कमजोरी, [illegible] बार इन्द्रिय पर हाथ रखे, शरीर कमजोर होता जाये। देखिये हे स भयम।

नक्स वोमिका 30 :—मानसिक रोगियों के लिये [illegible] रोगी इस दवा से [illegible] रोग रहित हो जाते हैं [illegible] काम, [illegible] लेने की [illegible], [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आने के बाद दर्द होने लगता है। [illegible], [illegible] होने पर [illegible] में [illegible] रहता है [illegible] की [illegible] है।

[illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में बाद आराम होता है। [illegible] [illegible] है।

सुनाई देने लगता है या मनमनाहट की ध्वनि कम्पित होती है

जुकाम आदि के कारण भी यूं ही सूंघने की ताकत में कमी हो जाती है और इसी प्रकार मुंह के अंदर स्वाद नहीं रहता। जीभ सूखती है मगर प्यास नहीं लगती। मुंह कड़ुवा तथा लसलसा सुबह के समय होता है। जी मिचलाता है बार-बार कुल्ला करने की इच्छा होती है। भूख लगती है और घी, तेल, मांस आदि की चीजें शौक से खाता है मगर खाना पच नहीं पाता, अपच हो जाता है—इसी के फलस्वरूप अजीर्ण हो जाता है। पेट में गैस बनने की शिकायत। इस दवा सेवन से अवश्य लाभ होता है—इस तरह के अजीर्ण रोग में मुंह कड़ुवा रहता है और सूखता भी है। पानी की प्यास नहीं लगती।

रसटाक्स 30:—जिनको बरसात के दिनों में रोग उभर आते हैं, उनके लिए यह दवा लाभप्रद है। मांस पेशियों में वात का दर्द—ऋतु कैसा भी हो, इसके सेवन से दर्दों में कमी हो जाती है।

किसी ओर में मोच आ जाना, सूजन, दर्द हो तो उस समय रसटाक्स का बार-बार प्रयोग किया जाता है। दर्द व सूजन घट जाती है व ओर अपनी जगह बैठ जाता है।

हड्डियों में दर्द मानों हड्डी अपनी जगह हिली जा रही है।

दर्द कहीं से भी शुरू हो, शरीर को हिलाने से रोग बढ़ता है। कुछ देर अंग के हिलने या चलने से दर्द समाप्त हो जाता है।

भीगने, शराब पीने से, कोप या ठण्ड से दर्द में वृद्धि होती है।

यह पानी से इसका प्यार कम नहीं है। शरीर पर छोटे छोटे दाने उभरते और उनमें अजब खुजली होती है।

चकोता या सर दाद जिसमें बरसाती हवा से वृद्धि हो खुजलाने से खुजली पड़ती हो और त्वचा लाल हो जाती हो।

सीपिया 30—सर दर्द, थोड़ा सा भी हिलाने या दबाने से आराम मिलता हो। सर के केश झड़ जाते हों।

योनि मासिक ऋतु में साफ और अन्य समय गन्दी रहती। पेट खाली है अथवा शून्य रहता है।

गर्भ अवस्था में कब्ज। पाखाना हो जाने के बाद भी दर्द। पेशाब में सड़ी गन्दी बदबू। बच्चे आधी रात से पहले ही सोते हुए पेशाब कर देते हों।

जिन स्त्रियों का मासिक ऋतु बन्द हो गया हो। मूर्छा या हिस्टीरिया की रोगिणी को महसूस होता है कि गले में एक गोला सा अटका हुआ है। यह लक्षण वायुर (हिस्टीरिया का) औरतों में मिला करता है।

पेट के विकार के कारण चेहरे पर काफी मैले-भूरे दाग दिखायी देते हैं। स्त्री रोगी के चेहरे पर पसीना आने के लक्षण भी दिखाई दें। त्वचा व खुजली जननेन्द्रियों के बाहर खुजली।

सल्फर 30:—रक्त विकार, चर्म रोग तथा रक्त में गर्मी की उत्तम औषधि।

रोगी कन्धे झुका कर चलता। स्नान करना नहीं चाहता। रोग अच्छा होकर पुनः बार-बार आक्रमण करे। शरीर के सभी अंगों में गर्मी मालूम पड़े। विशेषकर सर की चोटी, हथेलियों और पैर के तलुओं में जैसे आग की लपटें निकल रही हों।

बवासीर के मस्सों में सुई की गड़न या जलन। चलते समय सिर में दर्द।

स्वप्न दोष के बाद इन्द्रिय में जलन।

मासिक ऋतु शीघ्र। ज्यादह या कम रक्त स्राव के बाद कोई न कोई रोग लगा रहता हो—रोग पीछा नहीं छोड़ता।

स्वास्थ्य बिगड़ता जाता है।

कागज गड़ा गया, जिससे दर्द को ही पूरा होती है। दीर्घकालीन ज्वर—जैसे रहता हो, तो कम में नहीं रहती है।

बहुत कम बाला पसीना—मृत्यु के समय पसीना आना।

खुजली जिसे खुजलाने से आराम मिलता हो, में लाभदायक।

नोट—उपरोक्त 25 दवाइयां डा० हैनीमैन द्वारा होम्यो पैथी मैटीरिया मैडिका में मुख्य स्थान द्वारा मान्यता दी गयी है। डा० हैनीमैन के मतानुसार उपरोक्त दवाओं से स्त्री, पुरुष, बच्चों के शरीर के हर प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं।

बायोकैमिक परिभाषा

बायोकैमिस्ट्री शब्द ग्रीक भाषा के 'बायोस' तथा 'कैमिस्ट्री' इन दो शब्दों से मिलकर बना है।

बायोस का अर्थ है जीवन तथा कैमिस्ट्री का अर्थ है रसायन शास्त्र।

अर्थात यह विद्या जो किसी वस्तु के अंशों तथा उसकी बनावट में होने वाले परिवर्तनों के सम्बन्ध रखे।

इस प्रकार बायोकैमिस्ट्री का शाब्दिक अर्थ हुआ जीवन में होने वाले परिवर्तनों पर ध्यान देने वाली विद्या। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि जिस विद्या के द्वारा—सामान्य जीवन में होने वाले परिवर्तनों (रोग आदि) की जानकारी प्राप्त करके उन पर नियन्त्रण पाया जा सकता है—उसे बायोकैमिस्ट्री कहते हैं।

सिद्धांत:—मानव जीवन में बहने वाले रक्त में—

1. आरगैनिक, 2. इनआरगैनिक—ये दो प्रकार के द्रव्य पाये जाते हैं।

मीठे-खट्टे चर्बी वाले तथा प्रकेशी सदृश पदार्थों को आर-

गैनिक कहा जाता है। तथा पानी, नमक, पोटाश, चूना, सिलो-सिया मैग्नीशिया आदि को इनआरगैनिक कहते हैं।

रक्त में आरगैनिक पदार्थों का अंश 20% तथा इनआर-गैनिक पदार्थों का अंश 65% पाया जाता है।

मानव जीवन में जल का भाग लगभग 75% है तथा नमक का भाग 5% है। अल्प मात्रा मे रहने पर भी नमक सर्वाधिक आवश्यक एवं जीवन प्रदायी अंश है।

यह नमक ही पानी तथा आरगैनिक तन्तुओं को शरीर की वृद्धि करने के योग्य बनाता है।

नमकों की कुल संख्या 12 है।

शरीर में जब किसी नमक का परिमाण कम हो जाता है, तब उसके कारण किसी रोग का जन्म होता है। और यदि उस नमक की कमी को दूर कर दिया जाये, तो शरीर रोग से मुक्त हो जाता है।

शरीर में जिस नमक की कमी के कारण जो रोग हो गया है, उसे दूर करने के लिये—उसी नमक को औषधि के रूप में शरीर के भीतर पहुंचा देना—यही बायोकैमिस्ट्री का प्रमुख सिद्धान्त है।

प्रवर्तक :—सर्वप्रथम होमियोपैथिक के आविष्कारक महात्मा हैनीमैन ने ही पार्थिव लवणों की परीक्षा की थी और सदृश चिकित्सा (होमियोपैथी) में उनका प्रयोग भी किया था।

बाद में डॉ॰ स्टाफ ने भी इस बात का समर्थन किया कि रोग को दूर करने के लिये—मनुष्य शरीर के सभी उपादान, इनमे नमक प्रमुख है—अत्यन्त आवश्यक तथा उपयोगी है।

वैज्ञानिक प्रोवल ने भी इन लक्षणों की भूरि-भूरि की थी।

परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जर्मनी

3. कालीम्यूर — 6. काली फॉस

7. काली सल्फ — 8. मैग्नेशिया फॉस

9. नेट्रम म्यूर — 10. नेट्रम फॉस

11. नेट्रम सल्फ — 12. साइलीशिया

उपरोक्त समस्त 12 औषधियां बाजार में इसी नाम से जानी जाती और प्रयोग की जाती हैं तथा होमियोपैथिक की किसी भी दुकान पर इसी नाम से खरीदी जा सकती हैं।

औषधि तैयार करना : –

बायोकैमिक औषधियां : – चिचूर्ण (पाउडर) के रूप में दी जाती हैं। टिकिया तथा तरल रूप में भी यह औषधियां मिलती हैं। होमियोपैथिक औषधियों की ही भांति इन औषधियों के विभिन्न क्रम पोटेन्सी (मात्रा) तैयार की जाती है – तथा रोगी के रोग अनुसार उनके विभिन्न क्रमों की मात्रा के अनुसार प्रयोग किया जाता है।

एक भाग मूल नमक (औषधियां चिचूर्ण) को नौ भाग सुगर ऑफ मिल्क (दूध की चीनी) के साथ खरल में डालकर दो घण्टे तक घोटने के बाद पहला दाशमिक क्रम तैयार होता है जिसे 1X (वन एक्स) कहते हैं। पहला दाशमिक क्रम की औषधि एक भाग में सुगर ऑफ मिल्क मिलाकर एक घण्टे तक घोटने से ... दाशमिक क्रम 2X (टू एक्स) तैयार होता है।

... प्रकार लम्बे क्रम की औषधि एक भाग में नौ भाग ... मिल्क मिलाकर एक घण्टे घोटते रहने से अगले क्रम ... हैं जैसे 6X, 12X, 30X आदि।

... सैंतीसवें क्रम या एम. एम. तक तैयार किये जाते

[illegible] को औषधि [illegible] देते [illegible] [illegible] [illegible] अनुसार [illegible] [illegible] नहीं [illegible]

[illegible] 60X [illegible] औषधि [illegible] [illegible] [illegible] अनुभव कर ही [illegible] है।

[illegible] औषधि [illegible] पानी में [illegible] ठीक रहता है।

[illegible] पदार्थ [illegible] को साधारण [illegible] के साथ [illegible] चाहिये।

गोलियों को [illegible] कर ऊपर से एक बूंद पानी से भी [illegible] बनाया जा सकता है।

[illegible] औषधि का [illegible] हाथ से नहीं करना चाहिए, उन्हें कागज या प्लास्टिक के चम्मच की सहायता से देना चाहिये।

माता :— शिशुओं के एक ग्रेन पाउडर की मात्रा अथवा एक टिकिया की एक मात्रा बननी चाहिये। तरल औषधि की एक बूंद में एक अथवा दो मात्रा बनानी चाहिये।

बड़े बच्चों के लिये उससे दुनी तथा वयस्कों को चौगुनी मात्रा में औषधि देनी चाहिये। वयस्क व्यक्तियों को मात्रा बढ़ा कर 5 से 8 ग्रेन तक दी जा सकती है।

पुड़िया बनाने के लिये औषधि की एक मात्रा के साथ उससे चार गुना सुगर ऑफ मिल्क मिला देनी चाहिये।

औषधि सेवन :—औषधि सेवन कराने से पूर्व रोगी को स्वच्छ पानी से कुल्ला करवा कर, उसका मुंह साफ करा देना [illegible] है।

[illegible] रूप में औषधि दी गई हो तो पाउडर को मुंह में [illegible]

कलकर ऊपर से लगभग दो तोले गुनगुना पानी पिला देना चाहिये।

गोली हो तो उसे मुंह में अपने आप घुलने देना चाहिये।

अर्क हो तो दो तोला ताजे पानी में डालकर पिलाना चाहिये। अर्क की दो बूंदों को जिह्वा पर डालकर ऊपर से थोड़ा गुनगुना पानी भी पिलवाया जा सकता है।

औषधि देने का समय :—3X से 30X शक्ति तक की औषधियों को प्रति पांच मिनट के बाद दिया जा सकता है।

6X की औषधि तीन-तीन घण्टे के अन्तर से दिन में चार बार।

12X की औषधि को चार-चार घण्टे के अन्तर से दिन में तीन बार तक देनी चाहिये।

सामान्यतः 200X शक्ति की औषधि को सप्ताह में एक मात्रा देनी चाहिये। आवश्यकतानुसार इससे जल्दी भी दी जा सकती है।

पुराने रोग में 200X शक्ति की औषधि की एक मात्रा प्रातःकाल देकर एक सप्ताह तक परिणाम की प्रतीक्षा की जानी चाहिये।

यदि रोगी अथवा उसके परिवारजन औषधि देने के मामले में तसल्ली नहीं रखते अर्थात् सोचते हैं कि सप्ताह में एक मात्रा औषधि भला क्या लाभ देगी—तो उनका विश्वास बनाये रखने के लिये सिर्फ 'सुगर ऑफ मिल्क' की पुड़िया बनाकर दे देना चाहिये तथा दिन में दो तीन बार सेवन के लिये कह देना चाहिये।

जो औषधि के प्रयोग के नियम के जानकार हैं—पूरा विश्वास और इत्मीनान रखते हैं उन्हें मालूम रहता है कि सप्ताह में एक खुराक औषधि के क्या गुण हैं।

किसी भी विधि का इलाज हो सबसे मुख्य बात होती रोगी का विश्वास प्राप्त करना।

1000X शक्ति की औषधि का प्रभाव पन्द्रह दिन त रहता है। घातक रोगों में 200X तथा 1000X शक्ति औषधि का प्रयोग जल्दी भी किया जा सकता है—परन्तु ला होने की स्थिति में समय का अन्तर बढ़ा देना चाहिये।

इस अध्याय में बायोकैमिक की 12 मुख्य औषधियों का ही जिक्र है और उनके विशेष गुण लक्षणानुसार पर ही विचार किया गया है।

बारह लक्षणों के आधार पर बायोकैमिक की निम्नलिखित औषधियों के सूत्र यहां मूल रूप में प्रस्तुत किये गये हैं —

कल्केरिया फ्लोर 6X :—हड्डी के ऊपर झिल्ली, दांतों का इनेमल, चर्म रोग, पत्थर की तरह कठोर गांठें, संयोजन तन्तु, पेशियों की शिथिलता, शिरा स्फूर्ति, हड्डी का बढ़ जाना, हड्डी का नासूर, कमर दर्द।

चोट के बाद हड्डी के ऊपर कठोर ग्रन्थि सी बन जाये। दांतों में कीड़ा लगना, सिर की हड्डी पर सूजन, नाक की हड्डी में दर्द, मसूड़ों में सूजन और फोड़ा, जीभ में चीरे पड़ना, अंग-पटी सी मालूम पड़ना।

खांसते समय बलगम का छिटक कर बाहर निकलना—पेट का बढ़ जाना, पेट फूला—वायु विकार, कमर दर्द, बवासीर के मस्से व खूनी-बादी बवासीर, मल द्वार का फटना, त्वचा पर का सा असर, घाव में हमूओं में दरारें।

शरीर के किसी भाग में पत्थर की तरह कठोर गांठ का होना। स्तनों में कड़ी गांठें (ब्रेस्ट कैंसर) मल द्वार की में दरारें, घाव। ओठों में दर्द, शारीरिक शिथिलता, रोढ़े व मोतिया बिन्द।

हिलने डुलने से चलने से रोग बढ़ जाता हुआ महसूस हो।

कल्केरिया फास 6X :—कमजोरी शिरा रोग, स्त्री रोग, उदर विकार अपच, सूखा रोग, बच्चों के दांत निकलने में विलम्ब। बच्चों के उदर में कष्ट, खून की कमी।

बच्चों की कमजोरी रक्त हीनता। गाल व आंखें गढ़े में, धंसी हुई। सिर पर पसीने की अधिकता। सर में पानी। खोपड़ी की हड्डी में सूखा रोग। माथा बड़ा और गरदन पतली तथा इतनी कमजोर कि अपने सिर का भार भी न उठा सके।

बच्चों की कमजोरी बढ़ रही हो। हाथ-पांव का सुन्न पड़ जाना। पढ़ा हुआ याद न रहे, याद करने के बाद भूल जाना। बूढ़ों के भोजन करते समय पेट में दर्द शुरू हो जाता हो—मानसिक चिन्ता।

कल्केरिया सल्फ 6X :—त्वचा के पुराने रोग, फोड़े, घाव, पीनी पपड़ी वाला दाद तथा तीसरी अवस्था में चर्म रोग इस औषधि के क्षेत्र में आते हैं।

फोड़े फुंसी के घाव में जो रक्त स्राव या मवाद निकलता है वह पीलापन और गन्ध लिये होता है। यदि फोड़ा-फुन्सी पकने से पहले इसका प्रयोग किया जाये तो निश्चित रूप से फोड़ा बैठ जायेगा।

आंख की सूजन के साथ, नवजात शिशुओं की कमजोरी में लाभदायक। चेहरे पर रसभरी फुंसियां, होठों के अन्दर की तरफ छाले या जख्म। मसूढ़ों में फोड़े। जीभ की जड़ में पीला मैल जमा रहता है। पांव के तलुओं में दाह और जलन में इस औषधि से लाभ अवश्य होता है।

चर्म के ऊपर तथा गुदा के घाव और आंतों के घाव में लाभकारी।

फारेम फास 6X :— रक्त की कमी। शिथिलता सूजन, प्रदाहिक सूजन—ज्वर नाड़ी तेज, शरीर के किसी भी द्वार से रक्त स्राव। ठण्ड, में दर्द। निमोनिया, खांसी, सर दर्द—कमजोरी और खून की कमी में लाभदायक।

यह दवाई लौह यानि आयरन है। शारीरिक क्रिया में इसका स्थान महत्वपूर्ण है। लौह ही आक्सीजन को खींचकर शरीर के अन्दर पहुंचाता है। इसमे फास्फोरस रहने के कारण यह औषधि मानव शरीर के लिये अति लाभकारी तथा गुणकर है।

छाती मे दर्द या निमोनिया अथवा खांसी होने पर थूक के साथ रक्त का आना, ऐसी प्रदाहिक अवस्था मे पेशाब मे गर्मी-जलन महसूस होती है। रक्त मिश्रित मूत्र आने पर भी इस दवा से लाभ होता है।

कभी-कभी पेचिश में जब रक्त की अधिकता होती है अथवा कभी पेट में दर्द और बिना मरोड़ के दस्तों में आंव हो तो मानो ज्वर के साथ बारी-बारी देने पर तुरन्त आराम मिलता है। उस समय गुदा द्वार लाल रंग का हो जाता है।

आंख, नाक, मसूड़ों और फेफड़ो से खून गिरना तथा खूनी [illegible] होता है।

इस दवा का प्रभाव शरीर के दाहिने भाग पर अधिक लाभकारी होता है।

सर दर्द [illegible] है। सर का दर्द [illegible] आंखे लाल- [illegible] की [illegible] सूजन, दर्द [illegible] और दर्द [illegible]

[illegible] दर्द की अवस्था या [illegible]

के कारण रक्तहीनता, रोग (क्लोरोसिस) में प्रयोग करने से लाभ होता है।

फेरम फास में लोहा और फास्फोरस होने के कारण फेफड़े के रोग निमोनिया, मंदे तथा आंतों के लिये बहुत ही मुफीद साबित होती है।

दवा रोगी को जो भी रोग हो वह तीव्रता में हो या धीमी गति का लाभकारी है।

काली म्यूर 6X: – सर में पपड़ी या रूसी, कब्ज, काली खांसी, पाकाशय, कब्ज, पेचिश, बवासीर, प्रदर (औरतों में) दर्द, गठिया बात, चर्म की फुसी, चेचक का टीका लगने के बाद उपद्रव और मोतियाबिन्द में लाभप्रद।

जब प्रथम अवस्था के रोग, लक्षण तथा सुर्खी, प्रदाह और तीव्रता, घट कर रोग में कुछ कमी तो आ जाती है तथापि रोग बना रहता है। लाली की जगह कालिमा या लाली में कमी हो जाती है तो इसी अवस्था को दूसरी अवस्था कहकर इस दवा (काली म्यूर) के प्रयोग का समय आ जाता है।

बहने वाले स्राव गाढ़े होते हैं, लाल रक्तस्राव जब कुछ कालिमा में बदल जायें तो उस पर विचार करना पड़ता है।

सर या माथे का दाद, सूखी पपड़ी या जमा हुआ मवाद, जीभ पर सफेद लेप, नाक की सर्दी, (जुकाम) में गाढ़े सफेद श्लेष्मा का स्राव, कान की झिल्ली का बन्द हो जाना या मध्य कर्ण नली से पुराना स्राव (पीप) सफेद और गाढ़ा, टॉन्सल का रंग लाल-कालिमा सूजन लिये हुए।

दमा रोग में श्लेष्मा सफेद और गाढ़ा जमा हुआ जो कष्ट से निकले। खांसी जो पाकाशय से उठती मालूम दे, खांसी का इतना अधिक जोर होता है कि लगे आँखें बाहर निकल पड़ेंगी। काली खांसी, खांसते समय बच्चे का मुंह लाल व नीला हो

जाता हो।

दूध की कमी, घी, तेल या चर्बी से बने भोज्य पदार्थ पचने नहीं, अजीर्ण हो जाता है। मल मैलेरिया और दस्त पैदा करती है। बवासीर खूनी, खून का रंग सुर्ख नहीं होता। लेकिन में रक्त मिश्रित आंव या गाढ़ी चकत्ता-चकत्ता आंव गिरने में— यह दवा शीघ्र लाभ पहुंचाती है।

मासिक रज अनियमित, देर से होना, स्राव थोड़ा और अधिक होता है। श्वेत प्रदर (ल्यूकोरिया) का रंग सफेद या गाढ़ा होता है।

गठिया वात—संधि स्थान में सूजन, आक्रान्त स्थान को छूने से या थोड़ा सा भी हिलने से तेज दर्द और रोगी बेहाल हो जाता है। दर्द की तेजी पहली अवस्था की तरह तो नहीं रहती परन्तु दर्द व सूजन कायम रहती है—दर्द रात को बढ़ जाता है।

त्वचा के रोगों में मुंहासे आदि से गाढ़ा सा जमा हुआ मवाद निकलता है।

दाद में भूसी जैसी उठती है।

चेचक का टीका जब बच्चों को लगाया जाता है तो उसके बाद में कई प्रकार के कष्टों को दूर करने में बच्चों के लिये परम हितकारी औषधि साबित होती है।

आग से या किसी अन्य गर्म पदार्थ से जल जाने के बाद ...ले, (फफोले) और दर्द मिटाने के लिये कालीम्यूर ... उपद्रव शीघ्र ही दूर हो जाते हैं।

6A:—स्नायविक दुर्बलता, मस्तिष्क की कम... ...ण, स्नायविक सर दर्द, अनिद्रा, हिस्टीरिया, सड़ने दूषित ज्वर (सैप्टिक ज्वर), टाइफाइड-ज्वर, दुर्गन्ध में लाभकारी।

मानसिक सुस्ती बनी रहती है, इसके अतिरिक्त दिमागी पट्ठों की कमजोरी। हिस्टीरिया, मूर्छा आदि में।

शारीरिक तथा स्नायविक या मानसिक कमजोरी, जबकि साहित्य लिखने या स्वाध्याय में संलग्न रहने, मानसिक परिश्रम करने और बलपूर्वक शरीर से काम लेने वाले व्यक्तियों की थकान और इसी के फलस्वरूप शरीर रोगग्रस्त हो जाता हो या विषग्रोपों की अधिकता के कारण अवसाद में जा गिरने पर फॉस्फोरस रोगियों के लिये संजीवनी की तरह कार्य कर दिखाने में समर्थ है।

सर दर्द जो मानसिक कार्य करने के बाद हो त था थकावट का अनुभव करे, चक्कर आते हों और कुछ खा लेने के बाद उक्त रोगों में बढ़ जाने का खतरा रहता हो तो यह दवा लाभदायक है।

सर के पिछले भाग में दर्द, आंखों में दर्द, बायीं कनपटियों में दर्द—जोर से दबाने से दर्द घट जाये। पढ़ते समय आंखों के सामने काले धब्बे उड़ते दिखायी दें, सर दर्द रहे।

नाक से बदबूदार श्लेष्मा का निकलना, गलसुए ज्वर के साथ सूजन। सूजन लाल रंग की हो।

श्वास में गन्दी बदबू जो दूसरों को अप्रिय लगे। जीभ मैली पीले लेप से ढकी, मसूढ़े सूजे हुये पीप और रक्त स्राव होता हो। दांतों का दर्द सर्दी से बढ़ता है, मुंह का स्वाद और बलगम नमकीन सा होता हो।

पेट में शून्यता मालूम हो, पाकाशय से एक गोला सा उठता और गले में आकर रुक जाता है। उदरामय, मल पतला पानी की तरह, चावल का माड़ जैसा। दुर्गन्ध भरा मल तथा सड़ी सी.बुदार वायु का निस्सरण हुआ करता है।

जोड़ पेशियों में दर्द जोड़ों में दर्द या बात के दर्द होते हैं इनके दर्द अपना स्थान बदलते रहते हैं। एक संधि से दूसरे तक गरक जाया करते हैं और पुनः अपने स्थान का ... इसी प्रकार इधर से उधर होने वाले दर्द बाहु व टांगों में ... या कभी बन्द हो जाते हैं तो कभी पुनः शुरू हो जाते हैं— ही ये रोग स्थायी रोग बन जाते हैं।

चर्म रोगों में इससे लाभ होता है। त्वचा सूखी ... रूखी खुश्की या भूसी दिखाई देती है। खसरा के बाद भी ... पर जो खुश्की होती है उसे भी दूर कर देती है।

पीले पतले स्राव वाले फफोले, सुरख से ढके बाहु पर ... इन फुन्सियों को गर्म पानी से धोने पर आराम होने लगता ... दाद या खाज दोनों प्रकार के रोग में लाभप्रद औषधि है। ... पर सूक्ष्म दाने निकलते हैं वह आपस में मिल जाते हैं तो ... का रूप धारण कर लेते हैं।

साधारणतया थकान सुबह जागने पर, शरीर के ... आक्सीजन की कमी महसूस करना या सांस लेने में तक... महसूस कर, क्षय ज्वर, फेफड़े आदि के रोग, त्वचा के ... की खुश्की में इसका सेवन निश्चित रूप से लाभप्रद है।

मैग्नेशिया फास 6 X:—यह स्नायु और पेशियों के ... अन्य दर्दों में भी लाभदायक है। ऐंठन और अंगड़ाई ... प्रधान लक्षण है।

धनुष्टंकार (टेटनेस) जिसे अकड़न कहा जाता है, में ... औषधि है। (टेटनेस) जान लेवा रोग साबित होता है। टे... की पहचान होते ही तुरन्त दवा देने से और नियमित दे... रोग पर काबू पाया जा सकता है।

मगी मर्ज भी खतरनाक माना जाता है, इस रोग में

बच्चे अशक्त होते जाते हैं, [illegible]
जाते हैं। किसी भी वस्तु बदबूदार से [illegible]—
को देखकर मन करते रहते हैं। [illegible]
के कारण शरीर से कमजोर होता जाता है। [illegible]
कारण जोर बच्चे पर ऊपरी हुई, सूखा-रोग की [illegible]
है [illegible] के बाहर से [illegible]
और बच्चे का [illegible] करते रहते हैं। [illegible]
दवा के सेवन का [illegible] हैं—दवा [illegible] कर
कर देगी।

सर दर्द ऐसा जैसे हथौड़ियों से पीटा जा रहा हो।
होकर उठता है तो असहनीय सर दर्द होता है—[illegible]
दबा देने की इच्छा होती है। सूर्योदय से सूर्यास्त तक
बना रहता है। कभी-कभी मिरगी के प्रकार के [illegible]
की कमी के कारण विद्यार्थियों का सर दर्द बढ़ जाता है।

दृष्टि हीनता के साथ सर दर्द शुरू हो जाता है।
शक्ति कमजोर, जिससे वस्तु का आधा भाग दिखाई दे
न दिखाई देता हो। आंख में मानो रेत पड़ गया हो (
कास्टिक जैसी चीज आंख में पड़ जाने से घाव या जख
जाने पर नेट्रमम्यूर की कुछ मात्रा खाने से रोग दूर हो
है। आंख का जख्म भर जाता है।

बच्चा पौष्टिक भोजन करता है पर दुर्बलता नहीं
खासकर गरदन पतली ऐसी जैसे सूखा रोग हो गया हो—
समय यह दवा बच्चे को प्राण दान देती है।

पेट के ऊपरी भाग मे रोग बने रहते हैं—जिगर व तिल
बढ़ी हुई है। कड़वे तथा नमकीन या नमक अधिक खाने
इच्छा होती है।

दिल की धड़कन जोरों की बढ़ जाये—ऐसा जैसे पूरा शरी

हिलता प्रतीत हो।

खांसी के झटके से पेशाब की कुछ बूंदें निकल जाती हों। किसी की मौजूदगी में पेशाब न उतरता हो।

नाखूनों की त्वचा चारों ओर की फटी हुई हो और खुश्क हो—ऐसे लक्षण में दवा मुफीद है।

यह दवाई कब्ज को जड़ से मिटाती है, पानी की तरह पतले दस्त के लिये भी लाभदायी है।

नैट्रमफास 6X :—युवक, वृद्ध, स्त्री, पुरुष, बाल-शिशु हर किसी के अम्लपित्त यानि एसीडिटी की उत्तम औषधि।

आजकल खाने-पीने की अनियमितता के कारण इस रोग की शिकायत ज्यादातर लोगों से सुनने को मिल जाती है। इसके कारण नाना प्रकार के रोग शरीर में सर उठाना आरम्भ कर देते हैं। एसीडिटी या अम्ल पित्त से पैदा होने वाले रोग इस प्रकार के होते हैं—

मानसिक कमजोरी, रात को अनजाने रोग का भय।

युवक पठन-पाठन में मन नहीं लगा पाते।

सर में दर्द, चक्कर। पढ़ने के समय सर भारी हो जाता है।

दाहिनी आंख में दर्द, रात में दृष्टि मंद हो जाती है (दृष्टि क्षीण नहीं होती) बच्चों में छोटी कृमि के कारण भेंगापन, जीभ मैली, पीली-गन्दी, जीभ की जड़ में पीली मैल, मसूढ़ों में सूजन, मवाद।

सुबह जागने पर मुंह का जायका बिगड़ा हुआ। अन्दर कील सी अटकी होने का अहसास।

घी, तेल, चर्बी से बनी चीजें खाने से बदहजमी, डकार, मुंह में खट्टे स्वाद वाला पानी, खट्टी कै होना, ·डिटी का पूर्ण विकसित होना।

पेट में भार मालूम पड़ना—एसिड की वजह से

अण्डा, मछली आदि खट्टी गंधभरी चीजें खाने की इच्छा विशे अजीर्णता बढ़ती है। अम्ल पित्त बनकर रोग कष्टकारक मन्द- ...नीय हो जाना। आम्ल शूल बना रहता है।

रात को वीर्यपात (स्वप्नदोष) हो जाना। वीर्य गाढ़ा- बदबूदार होता है। वीर्य क्षय होने से कमर दर्द और कमजोरी बढ़ती मालूम होती है।

एसिड की वजह से मूत्र में विकार, जोड़ों में दर्द (गठिया) मूत्र विकार (यूरिक एसिड) रोग हो जाना।

अम्ल पित्त, कृमि और वीर्य-कमी और अम्ल पित्त के कारण सभी रोगों की उत्पत्ति के उपचार के लिये नेट्रमफॉस को सदा याद रखना चाहिये। आजकल के युवकों में वीर्यपात की शिकायत आमतौर पर होती है—कुछ तो खान-पान की अनिय- मितता कुछ गंदी सोसाइटी, सेक्सी फिल्में और पुस्तकें, पत्रिकायें पढ़ने से युवक और युवतियां अपने ही हाथों शारीरिक कमजोरी के शिकार हो जाते हैं। नेट्रमफास का सेवन खोई हुई शक्ति को पुनः प्राप्त करने में सहायक होती है, आत्म-विश्वास बढ़ाती है।

नेट्रमसल्फ 6X :—वर्षा ऋतु, गीली-तर जमीन से तथा ... मौसम से जो रोग उत्पन्न होते हैं उससे छुटकारा दिलाने की दवा।

नदी या तालाब में अथवा पानी में जो अधिक काम करते उनको बहुधा बीमारियां इस दवा से दूर हो जाती हैं।

आंखें रोशनी सहन नहीं कर पातीं—वर्षा ऋतु में आंखें ...ी रहती हैं। पीली आभा वाला कीचड़ आंखों में सदा ...रहता है। पलकों पर दानेदार फुंसियां और गुहांजनी एक ...र दूसरी पैदा होती रहती है। आंखों का कोई न कोई ...ना रहता हो। आंखें लाल रहती हों, सूजन रहती हो।

दाँत दर्द, कुल्ला करने से दर्द बन्द हो जाता हो, जीभ भी, पीले लेप से ढकी रहती हो।

मूत्र त्यागने की बार-बार इच्छा। पीले रंग की तली मूत्र होती है।

मूत्र पथरी की उत्तम दवा। पथरी को निकालती भी है तथा पथरी बनना रोकती भी है। पथरी के कारण दर्द को बन्द करती है।

पेशाब में शक्कर (डायबिटीज का रोग) आती हो तो इस दवा से लाभ होता है। निद्रित अवस्था में पेशाब करने की आदत दूर हो जाती है।

सूजाक नया हो या पुराना, पीला या हरा, बिना दर्द का मामूली दर्द का नेट्रमसल्फ आराम करता है।

यह औषधि सूजाक की विष नाशक दवा है।

यह मलेरिया ज्वर की मानी हुई दवा है। रात को शीत आरम्भ होता हो, रह-रहकर उत्ताप बढ़ता हो, बेचैनी का जोर होता हो—मुँह पर पसीना आता हो।

चर्म रोग बरसात में बढ़ जाते हों, तर अकौता (दाद), उससे पानी रिसता हो, की अच्छी औषधि है।

साइलीसिया 6X :—यह औषधि उन व्यक्तियों पर कार्य करती है जो पौष्टिक और भर पेट खाते हैं, परन्तु शरीर पुष्ट नहीं होता।

बच्चे का सर बड़ा शेष अंग दुबले सिवाय पेट के, पेट बड़ा आगे को निकला हुआ।

बच्चे अक्सर चलना देर से सीखते हैं, हड्डियाँ कमजोर व पतली रहती हैं। सर पर पसीना आता है।

सर का पुराना दर्द जो सदा बना रहता है (वे लोग जो सर दर्द की गोलियां खाते रहते हैं) उस सर दर्द की अमोघ

पड़ता है। कभी पुराने दर्द वाले को एक सप्ताह दिन में बार में
प्रयोग कराएँ।

कब्ज बनी रहती है। पाखाना निकालने के लिए लगाना पड़ता है।

बच्चों की कब्जियत, बच्चों के दाँत निकलते समय के जो रंग बदला करते हैं।

साइलीशिया मवाद सुखाता है और फोड़ा-फुंसी पक बहा भी देता है।

नासूरी घाव (नासूर) जिसमें पतला पीब निकले, पीब स सफेद या मैला बदबूदार हो तो उसमें रोग निवारण ही इ से लाभ लेना श्रेयस्कर है। पीप का शोषण कर देती।

कान के रोगों में, मवाद में, दर्द में लाभप्रद।

नाखून जब टेढ़े-मेढ़े हो गये हों, कुरूप हो गये तो समझना चाहिए कि अब इस दवा के बिना आराम ह कठिन है।

चेचक का टीका लगवाने के बाद के रोग जैसे ज्वर, द और टीके का सूज जाना, बच्चे का कमजोर दुबला हो ज आदि लक्षणों को दूर करने में यह समर्थ है।

पत्थर काटने वाले व्यक्तियों, मजदूरों के रोग, दमा, ख आदि इससे दूर किये जा सकते हैं।

होमियोपैथी में रोग के लक्षण और परीक्षण

रोग दो प्रकार के होते हैं—

1. बाहरी रोग।
2. भीतरी रोग।

उदाहरण के लिये—ज्वर के बाहरी लक्षण निम्नलिखि

(1) शरीर में गर्मी का बढ़ना।

(2) नाड़ी की चाल का तीव्र होना।

(3) रोगी द्वारा जोर-जोर से सांस लेना।

ज्वर में भीतरी लक्षण निम्नलिखित पाये जाते हैं—

(1) अधिक प्यास लगना।

(2) भूख न लगना।

(3) कमर में दर्द आदि होना।

रोग के बाहरी लक्षण को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है—तथा भीतरी लक्षणों को रोगी स्वयं अनुभव करता है।

होमियोपैथी में किसी रोग के लक्षणों को देखकर उसके सभी अथवा अधिकांश लक्षणों से मेल खाने वाली दवा का प्रयोग करना उचित समझा जाता है। जैसे—प्यास, नाड़ी की गति का तीव्र गति से चलना, चमड़ी का सूखना आदि लक्षण प्रादाहिक ज्वर के हैं। यही लक्षण 'एकोनाइट' के भी हैं। अतः इन लक्षणों वाले प्रादाहिक ज्वर में यदि एकोनाइट दी जाये तो लाभकारी सिद्ध होगी।

इसी प्रकार रोग लक्षणों को निश्चित करने के पश्चात-उन्हीं लक्षणों वाली औषधि देनी चाहिये।

रोग के लक्षणों की पहचान निम्नानुसार की जाती है—

1. शरीर की गर्मी नापकर।	2. नाड़ी की चाल।
3. श्वास की गति।	4. जीभ
5. मुख	6. त्वचा
7. छाती	8. वमन
9. हिचकी	10. दर्द
11. मल	12. मूत्र

13. अन्य लक्षणों की परीक्षा करके।

रोगी तथा रोग के लक्षणों की परीक्षा करने की

...यों का उल्लेख यहां किया जा रहा है। और इस प्रकार

शरीर में गर्मी की परीक्षा

शरीर में गर्मी का पता थर्मामीटर द्वारा किया जाता है। ...स्थ मनुष्य के शरीर की गर्मी 97½ डिग्री या 97 डिग्री ...ती है।

लड़कों के शरीर में सयानों से कुछ अधिक गर्मी रहती है। ...वर्ष से अधिक आयु के बोढ़ों के शरीर में युवकों से कुछ ...गर्मी पाई जाती है।

नींद अथवा विश्राम के समय शरीर की गर्मी 1 से 1½ ...ग्री तक कम हो जाती है।

शरीर में 2½ डिग्री तक की गर्मी का अधिक बढ़ जाना ...भी चिन्ता की बात नहीं होगी जितना कि 1 डिग्री कम हो... ...ना चिन्तनीय होता है।

शरीर में यदि गर्मी 97 से कम तथा 99 डिग्री से अधिक ...तो रोग का आक्रमण हो चुका है ऐसा समझना चाहिये— ... से 101 डिग्री तक प्रबल ज्वर। 106 से अधिक गर्मी बढ़ ...ने पर जिन्दगी खतरे में समझनी चाहिए।

मलेरिया, फुफ्फुस, प्रदाह, मुद्द ज्वर, चेचक आदि में ...रीर की गर्मी 106 से 107 डिग्री तक बढ़ जाती है— ...कि अन्य ज्वरों में 105 डिग्री तक ही बढ़ती है।

...हैजे के अलावा अन्य किसी भी रोग में शरीर की गर्मी का ... डिग्री से कम हो जाना बहुत खराब लक्षण है। जबकि ...मलेरिया ज्वर 106 डिग्री तक ज्वर होना भी खतरे की ...नहीं मानी जाती।

... वात रोग में 105 डिग्री तक बुखार का होना चिन्ता ...है।

... में 105 डिग्री तक गर्मी का बढ़ना तथा

90 डिग्री तक कम हो जाना भी अधिक चिंतनीय नहीं होता। पारी के ज्वर एवं पुराने क्षय रोग में शरीर की गर्मी का आकस्मिक रूप से कम हो जाना खतरे की घण्टी समझना चाहिये।

मुंह में थर्मामीटर लगाने पर यदि 98·4 डिग्री तक गर्मी हो तो सामान्य से अधिक ताप अर्थात ज्वर समझना चाहिये।

थर्मामीटर यन्त्र क्या है ?

शरीर का ठीक-ठीक तापक्रम जानने के लिए यह एक शीशे का यन्त्र है—जिसके एक किनारे पर थोड़ा सा पारा रहता है। जो इस यन्त्र में तापमान घटने या बढ़ने पर घटता या बढ़ता रहता है।

उसके दूसरे सिरे को अच्छी तरह पकड़कर हल्का झटका दिया जाता है तो पारा उतर जाता है। तदोपरान्त पारे वाले सिरे को रोगी के बायीं या दायीं बगल में अथवा मुंह में (जीभ के नीचे) लगाकर ठीक-ठीक ज्वर का पता लगाया जाता है।

रोगी के शरीर में जितना डिग्री ज्वर होगा—पारा उसी स्थान पर जाकर स्वयं रुक जायेगा।

अच्छे थर्मामीटर यन्त्र केवल आधे मिनट तक लगाये जाते हैं।

'हिक्स' और 'जिल' अच्छे थर्मामीटर माने जाते हैं।

ज्वर का पता लग जाने के बाद पुनः पारा उतार देना चाहिये और यन्त्र को बड़ी सावधानी के साथ पारे वाले हिस्से को नीचे की ओर रखकर डिब्बे में बन्द कर देना चाहिये।

थर्मामीटर किसी भी मेडिकल स्टोर से खरीदा जा सकता है अथवा शहर में सर्जिकल स्टोर होते हैं जहां सम्बन्धी ढेरों सामग्रियां मिलती हैं वहां से खरीदा जा सकता है।

नाड़ी की गतिः—सामान्यतया शरीर में नाड़ी निम्न अनुसार रहती है—

जन्म से एक वर्ष की आयु तक प्रति मिनट १२० बार। २ वर्ष से ५ वर्ष की आयु तक प्रति मिनट ६० से

ार। 6 वर्ष से 15 वर्ष की आयु तक प्रति मिनट 80 से 9
ार। 16 से 60 वर्ष की आयु तक प्रति मिनट 70 से 80
ार। 60 वर्ष से अधिक आयु में प्रति मिनट 50 से 65 बार।

पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की नाड़ी प्रति मिनट 10 से 15 ार अधिक चलती है।

भोजन अथवा व्यायाम के पश्चात नाड़ी की चाल कुछ बढ़ ाती है—जबकि सोते समय कुछ कम हो जाती है।

स्वाभाविक गति की अपेक्षा नाड़ी यदि प्रति मिनट 20 र कम चले तो जीवन शक्ति को घटता हुआ मान लेना हिये।

नाड़ी का अपनी गति से तेज अथवा अधिक तेज चलना मारी के लक्षण हैं।

यदि नाड़ी चलते-चलते एकदम रुक जाती है तो उसे ानक रोग का आक्रमण हुआ मानना चाहिए।

नाड़ी की गति को रोगी की कलाई की नसों पर अपनी ुलियों को रखकर जाना जा सकता है।

नाड़ी परीक्षा का अभ्यास किसी अनुभवी चिकित्सक के ट रहकर किया जा सकता है या अपने अनुभव के आधार ।

नाड़ी की परीक्षा आठ स्थानों से की जा सकती है। दोनों , दोनों पैर कंठ के दोनों ओर की सिरोधिया और नाक के , दोनों बगल की—इन स्थान पर जीवन संचार अनुभव ा है।

नाड़ी देखते समय चिकित्सक को चाहिये कि अपने बायें से रोगी की कुहनी को सहारा दे और दाहिने हाथ की ी, मध्यमा और अनामिका अंगुलियों को रोगी की कलाई ्स प्रकार रखे कि तर्जनी रोगी के अंगूठे को जड़ पर ाया उसके बाद मध्यमा और अनामिका रहे।

मनुष्य की नाड़ी केंचुए की गति की सहजता रहित

साँस की परीक्षा:—सामान्यतः स्वस्थ शरीर वाला व्यक्ति के अनुसार साँस लेता और छोड़ता रहता है - जन्म से दो की आयु का प्रति मिनट में ३५ बार दो से १५ वर्ष को का प्रति मिनट में २५ बार १५ वर्ष से अधिक आयु का मिनट में १८-२० बार कमजोरी की स्थिति में साँस की धीमी पड़ जाती है।

फुफ्फुस अथवा छाती के रोग में साँस की चाल तेज हो है। मृत्यु के समय साँस बहुत तेज तेज चलती है तथा होती है।

सामान्यतः साँस का धीमा चलना शुभ तथा जल्दी चलना लक्षण होता है।

मुख की परीक्षा:—चेहरे पर प्रसन्नता दिखायी देना— स्वास्थ्य का लक्षण है। परन्तु सीने के रोग की तकलीफ रोगी का प्रसन्न मुख दिखायी देना अच्छा नहीं माना ।

त्वचा की परीक्षा:—त्वचा कोमल, चिकनी तथा ठण्डी हो से शरीर के स्वस्थ होने का लक्षण समझना चाहिए। त्वचा रूखी तथा गर्म हो तो उसे ज्वर का लक्षण समझना ए।

शरीर के किसी स्थान विशेष पर पसीना दिखाई दे तो उसे ता एवं उस स्थान के नीचे प्रदाह का लक्षण समझना ए।

नये ज्वर के हटने पर पसीना आता है, यह अच्छा लक्षण रन्तु पुराने ज्वर में यदि रात के समय पसीना आये तो उसे र क्षय कारक यक्ष्मा (टी. बी.) आदि का लक्षण समझना ए।

विषम ज्वर, मलेरिया, सूतिका ज्वर तथा अन्य तीव्र ज्वरों रीर में कमजोरी के लक्षण प्रकट होते हैं। थोड़े परिश्रम से दि शरीर मे पसीना आ जाए तो उसे निर्बलता का लक्षण ना चाहिए।

बार । 6 वर्ष से 15 वर्ष की आयु तक प्रति मिनट 80 से 9[illegible]
बार । 16 से 60 वर्ष की आयु तक प्रति मिनट 70 से 3[illegible]
बार । 60 वर्ष से अधिक आयु में प्रति मिनट 50 से 60 बार

पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की नाड़ी प्रति मिनट 10 से 1[illegible] बार अधिक चलती है ।

भोजन अथवा व्यायाम के पश्चात नाड़ी की चाल कुछ [illegible] जाती है—जबकि सोते समय कुछ कम हो जाती है ।

स्वाभाविक गति की अपेक्षा नाड़ी यदि प्रति मिनट 20 बार कम चले तो जीवन शक्ति को घटता हुआ मान लेना चाहिये ।

नाड़ी का अपनी गति से तेज अथवा अधिक तेज [illegible] बीमारी के लक्षण हैं ।

यदि नाड़ी चलते-चलते एकदम रुक जाती [illegible] भयानक रोग का आक्रमण हुआ मानना चाहिए

नाड़ी की गति को रोगी की [illegible] [illegible] अंगुलियों को रखकर जाना जा सकता [illegible]

नाड़ी परीक्षा का अभ्यास किसी [illegible] निकट रहकर किया जा सकता है [illegible]

[illegible]

नाड़ी की परीक्षा [illegible] [illegible]य, दोनों पैर [illegible] के [illegible]न, दोनों बगल की [illegible]ता है ।

नाड़ी देखने [illegible] [illegible] से रोगी [illegible]ती, मध्यम [illegible]स प्रकार [illegible]तथा [illegible]

श्वास की परीक्षा:—सामान्यत: स्वस्थ शरीर वाला व्यक्ति निम्न अनुसार सांस लेता और छोड़ता रहता है – जन्म से दो वर्ष की आयु का प्रति मिनट में ३५ बार दो से १५ वर्ष की आयु का प्रति मिनट में २५ बार १५ वर्ष से अधिक आयु का प्रति मिनट में १८-२० बार कमजोरी की स्थिति में सांस की चाल धीमी पड़ जाती है।

फुफ्फुस अथवा छाती के रोग में सांस की चाल तेज हो जाती है। मृत्यु के समय सांस बहुत तेज तेज चलती है तथा धीमी होती है।

सामान्यत: सांस का धीमा चलना शुभ तथा जल्दी चलना अशुभ लक्षण होता है।

मुख की परीक्षा—चेहरे पर प्रसन्नता दिखायी देना—अच्छे स्वास्थ्य का लक्षण है। परन्तु जीने के रोग की तकलीफ बाद रोगी का प्रसन्न मुख दिखायी देना अच्छा नहीं माना जाता।

त्वचा की परीक्षा:—त्वचा कोमल, *चिकनी तथा ठण्डी* हो तो उसे शरीर के स्वस्थ होने का लक्षण समझना चाहिए। त्वचा रूखी-सूखी तथा गर्म हो तो उसे ज्वर का लक्षण समझना चाहिए।

शरीर के किसी स्थान विशेष पर पसीना दिखाई दे तो उसे शिथिलता एवं उस स्थान के नीचे प्रदाह का लक्षण समझना चाहिए।

नये ज्वर के हटने पर पसीना आता है, यह अच्छा लक्षण परन्तु पुराने ज्वर में यदि रात के समय पसीना आये तो उसे शरीर क्षय कारक यक्ष्मा (टी. बी.) आदि का लक्षण समझना चाहिए।

विषम ज्वर ... सन्निपात ज्वर तथा अन्य तीव्र ज्वरों
शरीर में ... प्रकट होते हैं। थोड़े परिश्रम से
... तो उसे निर्बलता का ...

[illegible] १५ वर्ष की आयु [illegible] फिट १०.५ [illegible]
[illegible] की आयु [illegible] फिट १० से ३० [illegible]
[illegible] आयु [illegible] फिट १५ से ६५ [illegible]
[illegible] फिट १० से ११ [illegible]

[illegible] है।

[illegible] की [illegible]
[illegible] है — [illegible] हो जाती है।

[illegible] फिट [illegible]
[illegible] की [illegible] हुए [illegible]
[illegible] है।

[illegible] है।

[illegible] है तो [illegible]
[illegible] चाहिए।

[illegible] की [illegible] की [illegible] पर [illegible]
[illegible] है।

[illegible] लिखता है

[illegible] अनुभव के
[illegible] है [illegible]

आये तो यकृत विकार समझना चाहिये।

स्नायविक पीड़ा में पेशाब अधिक मात्रा में आता है। पेशाब का रंग धुमैला हो तो यह समझना चाहिये कि उसमे रक्त भी आ रहा है।

पेशाब करने के बाद अन्त में दूध अथवा चूने के रंग का गाढ़ा सा पेशाब आये तो कृमि का कारण समझना चाहिये।

मधुमेह (डाइबिटीज) में पेशाब का रंग चूने जैसा होता है और उस पर चोटियां लग जाती हैं।

पथरी, मूत्र, कृच्छ, मुत्रदाह एवं सान्निपातिक ज्वर में पेशाब गहरे लाल रंग का होता है।

काले रंग का पेशाब मृत्यु सूचक होता है।

मल का परीक्षण:—स्वाभाविक स्थिति मे मल का रंग पीला होता है।

पित्त का भाग अधिक होने पर मल काला, भूरा अथवा अधिक पीले रंग का होता है।

पित्त का भाग कम होने अथवा यकृत दोष रहने पर मल का रंग मटमैला, भूरा अथवा कीचड जैसा होता है।

पकाशय में श्लेष्मक की अधिकता होने पर मल का रंग गहरा हो जाता है।

आंतों का प्रदाह होने पर मल के साथ रक्त मिला हुआ कफ निकलता है।

अंतड़ियों की क्रिया में व्यवधान हो जाने पर मल कड़ा—सूखा होता है।

यकृत अथवा प्लीहा के रंग मे यदि मल का रंग लाल हो तो समझना चाहिए उसके साथ रक्त भी आ रहा है।

चावल के धोवन अथवा माड़ की भांति पतले दस्त होने

किसी भी रोग में पसीना आना, परन्तु बराबर सवाँ ना होना शुभ होता है।

एकदम पसीना आ जाना शुभ लक्षण नहीं होता।

दर्द का परीक्षण:—शरीर पर यदि किसी स्थान पर बराबर दर्द बना रहता हो, दर्द बढ़ जाता हो तो वहाँ प्रदाह कारण उत्पन्न हुआ समझना चाहिए।

यकृत के प्रदाह में दायें कन्धे में तथा हृत पिण्ड के रोग में बायीं बांह में दर्द होता है।

हिलने डुलने पर बढ़ने वाले दर्द को पेशी का दर्द समझना चाहिये। छूने के दर्द को पुट्ठे की गिल्टी का दर्द समझना चाहिए।

मूत्रेन्द्रिय के अग्र भाग में दर्द होने पर उसे पथरी का विकार समझना चाहिए।

मूत्र परीक्षण:—स्वस्थ मनुष्य चौबीस घण्टे में एक लीटर से डेढ़ लीटर तक पेशाब करता है। अधिक पेशाब होने पर स्नायु विकार पीड़ा समझना चाहिए।

पेशाब का कम आना अथवा बार-बार आना, अधिक आना, रोग का लक्षण है।

ज्वर की स्थिति में नाड़ी का वेग तीव्र रहते समय पेशाब कम मात्रा में तथा लाल रंग का आता है।

स्वस्थ व्यक्ति का पेशाब थोड़ा पीलापन लिये हुये, सफेद रंग का होता है।

वृद्धावस्था में पेशाब थोड़ा-थोड़ा तथा बार-बार आता है। वह बदबूदार तथा गन्दला भी होता है।

गहरे लाल रंग का पेशाब हो तो शरीर में अम्ल की अधिकता समझनी चाहिये।

गहरे मटैला अथवा काले रंग का पेशाब हो तो रोग को बढ़ा हुआ समझना चाहिये।

बहुत पीले रंग का पेशाब हो और नीचे कुछ भाग सा

गहे विसूचिका (हैजा) रोग का लक्षण समझना चाहिये।

मात्रा बार बार न ही आना मृत्यु पूर्वक अशुभ लक्षण समझना चाहिये।

रोगी के लक्षण :— प्रत्येक होमियोपैथिक चिकित्सक के लिए जरूरी है कि रोगी के मल मूत्र आदि की परीक्षा करें साथ-साथ रोगी से निम्नलिखित बातों की जानकारी भी प्राप्त करें। इससे उसे औषधि का सही-सही निर्णय करने तथा रोग के यथार्थ कारण को समझने में सहायता मिलेगी।

निम्न प्रश्नावली को लिखवाकर या छपवाकर रख लेना चाहिए—तथा प्रत्येक प्रश्न के आगे, रोगी द्वारा दिये उत्तर को लिखने का स्थान भी छोड़ लेना चाहिये।

परीक्षा विषयक सभी बातों पर पूरा-पूरा ध्यान देने से यदि उचित औषधि का चुनाव कर लिया गया हो तो औषधि की केवल एक मात्रा ही रोग को दूर करने के लिये पूर्ण प्रभावशाली सिद्ध होती है।

रोगी से उत्तर प्राप्त किये जाने वाले प्रश्नों की सूची इस प्रकार है—

1. रोगी की मानसिक स्थिति और स्वभाव की बातें—उदाहरणार्थ—रोगी चिन्तित बना रहने वाला, डरपोक, ... तथा शीघ्र घबड़ा जाने वाला है या वह स्वभाव से ही ... धैर्यवान और निश्चय पर डटे रहने के स्वभाव वाला है।

2. रोगी की प्रकृति कैसी है — अधिक गर्मी लगती ... अथवा ठण्ड। किन ऋतुओं में वह ... अथवा ... अनुभव करता है?

25. रोगी को भोजनोपरान्त डकारें आना, मुंह में पानी ना, जी मिचलाना, मुंह से लार गिरना, वमन होना अथवा न, रक्त गिरना आदि की कोई शिकायत तो नहीं है ?

26. रोग होने से पहले अथवा बाद में कोई टीका अथवा इंजेक्शन तो नहीं लिया गया ?

27. रोग का इलाज क्या किसी अन्य चिकित्सक से क या चुका है—? यदि हां तो आयुर्वेदिक, यूनानी, एलोपै अथवा होमियोपैथिक आदि किस विधि से ? उक्त चिकि में किन-किन औषधियों का सेवन किया जा चुका है ?

28. रोगी के शरीर पर चींटियां सी रेंगना, गले में सा हुआ सा लगना अथवा हाथ पांव भीगा होना जैसी अनुभव तो नहीं होती ?

29. क्या रोगी के शरीर में कहीं दर्द है—यदि है तो किस प्रकार का ? दर्द वाले स्थान पर सूजन तो नहीं ? सूजन क्या उस स्थान को दबाने से गड्ढा सा बन जाता है ?

30. रोगी को पाकस्थली, यकृति अथवा प्लीहा की शिकायत तो नहीं है ? भोजन के बाद शरीर की हालत कैसी जाती है ? भोजन ठीक से पच जाता है या नहीं ?

31. रोगी को कफ खांसी की शिकायत तो नहीं ? य ो कफ का रंग-रूप, गंध तथा स्वाद कैसा है ? खांसी के खांसते समय कैसी आवाजें होती हैं ?

32. फेफड़ों में कोई शिकायत तो नहीं है ? सांस या गहरी सांस लेते समय कोई तकलीफ तो नहीं होती कम अथवा अधिक लेने या दमा की शिकायत तो नहीं है

33. रोगी ने कभी खून साफ करने वाली अथवा धा क औषधि का सेवन तो नहीं किया ? यदि हां तो व सी दवा थी ?

34. रोग किस समय घटता या बढ़ता है ? उस सम

कष्ट तो नहीं है ?

14. रोगी के पेट की हालत कैसी है ? पेट में [illegible] दर्द अथवा [illegible] की शिकायत तो नहीं है।

15. शरीर के किसी भाग में सूजन, दर्द, फुन्सी, फोड़े की शिकायत तो नहीं है ? यदि है तो कब से और किस प्रकार की है ?

16. रोगी को कभी कोई चर्म रोग तो नहीं हुआ, अथवा इस समय तो नहीं ?

17. रोगी को पसीना कैसा आता है ? पसीना का रंग और गंध कैसी है ?

18. रोगी को डायबिटीज (मधुमेह) अथवा प्रमेह की शिकायत तो नहीं है।

19. रोगी होने का कारण क्या है—रोग आस-पास से हुआ अथवा किसी रोग का विष शरीर में प्रविष्ट हो जाने से रोग हुआ ?

20. रोग कितने दिनों से है ? क्या पहले भी किसी रोग की शिकायत रही थी ?

21. रोग की वर्तमान स्थिति क्या है ? यह कब और किस प्रकार घटता बढ़ता है ?

22. क्या यह रोग कभी रोगी के माँ-बाप को भी हुआ था ? अथवा उस रोग के अतिरिक्त माता-पिता के वंश में से किसी को कभी गर्मी, उपदंश, सूजाक, बवासीर इत्यादि अथवा कण्ठमाला रोग की शिकायत तो नहीं रही थी ?

23. वर्तमान रोग के होने के पहले कोई अन्य तीव्र रोग अथवा चर्म रोग तो नहीं हुआ था।

24. शरीर के अन्य अंगों की स्थिति क्या है ? आंख, नाक, कान, दांत, मुंह, जीभ व जननेन्द्रिय आदि की स्थिति क्या है ? कोई खराबी तो नहीं है ? यदि है तो किस प्रकार की ?

इसका सम्पूर्ण विवरण।

44. रोगी चिकित्सा के द्वारा दिये गये निर्देशों का पूर्णत: पालन करने के लिए तैयार है अथवा नहीं ? औषधि और उसके सेवन के मामले में सजग रहेगा या नहीं।

45. रोगी के व्यवसाय, सम्पर्क, यात्रा, शिक्षा, रुचि आदि का विवरण।

उपर्युक्त तथा अन्य जो भी बातें जान पड़ें उन सबके विषय में साफ-साफ पूछना आवश्यक है। प्रश्नों की उपरोक्त तालिका में से आप जो बात रोगी से पूछने की हों वही पूछें—चूंकि केवल चिकित्सा का मामला है, अत: अनेकानेक बातें तो आपको रोगी के बारे में स्वयं मालूम होनी ही चाहिए।

इन बातों को ध्यान में रखकर ही रोगी की चिकित्सा शुरू करनी चाहिए तथा ठीक-ठीक औषधि का चयन करना चाहिए।

रोगी के लक्षणों की जानकारी के बाद—अब आइये शरीर के अन्य अंगों की परीक्षा का ज्ञान प्राप्त करें।

अन्य अंगों में वक्ष या छाती की परीक्षा होमियोपैथी और एलोपैथी दोनों में खास महत्व रखती है। वक्ष की परीक्षा कैसे होती है—आइये अब इसका ज्ञान प्राप्त करें।

छाती की परीक्षा।—छाती या वक्ष की परीक्षा साधारणत: तीन प्रकार से होती है—

1. देखकर 2. छूकर

3. सुनकर

देखकर :—रोगी को स्थिर भाव से बैठाकर देखना चाहिए कि वक्षस्थल अच्छी तरह से फैलता और संकुचित होता है या नहीं। हर बार श्वास लेने और छोड़ने में ठीक-ठीक ऊंचा होता है और झुकता है या नहीं तथा किसी जगह पर सूजन तो नहीं है।

छूकर :—बायें हाथ के पंजे को औंधा करके रोगी की

रोगी को कैसा अनुभव होता है ?

35. यदि रोगी स्त्री है तो उसके मासिक धर्म की क्या हालत है। वह समय का ठीक आता है या नहीं होता ? और अधिक या थोड़ा होता है या नहीं ? कष्ट सहित होता या कष्ट रहित ? कितने दिन तक होता है ?

36. स्त्री रोगी को कभी गर्भपात नहीं हुआ ? यदि हुआ तो कारण ? उस समय क्या तकलीफ थी ? क्या गर्भपात स्वयं हो जाने की शिकायत है ? क्या गर्भपात कराया गया था ?

37. स्त्री रोगी को प्रदर की शिकायत तो नहीं है ? यदि है तो कब से और प्रदर का रंग कैसा है ?

38. स्त्री रोगी विवाहिता है अथवा कुमारी। बन्ध्या है अथवा सन्तानवती—यदि सन्तानवती है तो कुल सन्तानों की संख्या ? उसने कितनी बार गर्भ धारण किया ? कितने बच्चे जीवित है, कितने मर गये ? बच्चों की मृत्यु का क्या कारण था ? विवाह किस आयु में हुआ था ?

39. स्त्री रोगी बच्चे को स्वयं दूध पिलाती है अथवा नहीं। उसके स्तन अथवा गुप्तांग में कोई रोग तो नहीं हुआ ?

40. क्या स्त्री रोगी गर्भवती है ? यदि हां तो गर्भ कितने दिनों का है ? गर्भावस्था अथवा बाद में कोई तकलीफ की शिकायत तो नहीं रहती ?

41. स्त्री रोगी के पति को कोई बीमारी तो नहीं है ? अथवा पहले उसे कोई बीमारी तो नहीं थी ? यदि हां तो किस प्रकार की ?

42. रोगी यदि बच्चा है तो उसकी मां है अथवा नहीं, वह अपनी मां का दूध पीता है या ऊपरी। उसे पहले कौन-कौन सी तकलीफें हो चुकी हैं ?

43. रोगी ने कोई ऑपरेशन आदि तो नहीं कराया ? यदि

र लाल हो जाता है। नवीन ज्वर तथा तीव्र सन्निपातिक
कार में जीभ सूख जाती है। आरक्त ज्वर में जीभ के ऊपर
द रंग का लेप चढ़ जाता है तथा उस पर लाल दाने दिख
ते हैं।

पैतृक ज्वर में जीभ का अग्र भाग अथवा जड़ का हिस्सा
ढ़ जाता है।

शरीर में रक्त की कमी तथा दुर्बलता में जीभ का रंग
द हो जाता है।

पक्वाशय में गड़बड़ी होने पर जीभ के ऊपर श्वेत रंग का
प सा चढ़ जाता है।

रक्त परिभ्रमण में विकार होने पर जीभ का रंग नीलापन
से होता है।

पीलिया रोग में यदि जीभ पर काली मिट्टी सी चढ़ी हो
ो यकृत का गहरा रोग समझना।

नाड़ियों में रक्त का रुकना आरम्भ हो जाने पर जीभ का
ग हल्का, काला अथवा बैंगनी हो जाता है।

पाचन क्रिया में गड़बड़ी होने से जीभ पर घाव तथा छाले
ो जाते हैं।

मस्तिष्क में खराबी होने पर जीभ या तो बाहर निकल
र एक ओर लटक जाती है अथवा उसका हिलना बन्द हो
ाता है।

आमाशय के रोग में जीभ पर काले रंग का दाग दिखाई
े तो उसे मृत्यु का लक्षण समझना चाहिये।

चेचक में जीभ का काला पड़ जाना—बहुत अशुभ लक्षण
है।

किसी भी स्थिति में जीभ का काला होना अशुभ समझना
चाहिये।

सूखी जीभ तर होकर आगे की तरफ से साफ होती चले

छाती पर रखकर दाहिने की मध्यमा उंगली से ठक-ठक करे। ऐसे में यदि 'ठन-ठन' की आहट हो तो समझना चाहिये कि स्वाभाविक अवस्था है। 'टन-टन' हो तो फेफड़े का प्रदाह, या की सूजन आदि समझना चाहिये।

दमा रोग में अधिक परिमाण में वक्ष में हवा घुसती है इसलिये 'ढम-ढम' आहट होती है।

सुनकर :- यह काम डाक्टर लैनेक साहब के आविष्कार किये हुये यन्त्र स्टेथोस्कोप की सहायता से होता है। श्वास नली प्रदाह, दमा-खांसी, यक्ष्मा की खांसी प्रभृति रोगों में कितने ही तरह की ध्वनियां सुनाई पड़ती हैं।

यदि बलगम अधिक रहता है तो घर्र-घर्र स्वर सुनाई पड़ता है। फुफ्फुस प्रदाह में केश घिसने की तरह और फुफ्फुस को ढकने वाली झिल्ली के प्रदाह में खन-खन ध्वनि होती है।

स्टेथोस्कोप यन्त्र—थर्मामीटर की तरह यह भी रोगी के रोग की जांच करने वाला एक यन्त्र होता है। यह तीन भाग में बना होता है। ऊपर और नीचे के भाग धातु के बने होते हैं, जिन पर चमकदार पानी चढ़ा होता है और नीचे के भाग दो रबड़ ट्यूब का बना होता है, जो ऊपर और नीचे के भागों को मिलाता है।

ऊपर वाला भाग कान में लगाया जाता है और नीचे वाले भाग को उस स्थान पर लगाते हैं जहां की आहट सुननी होती है। इसके प्रत्येक रबड़ की लम्बाई एक बराबर होती है तथा $1\frac{1}{2}$ फिट से छोटा न होना चाहिए।

इस यन्त्र के द्वारा छाती की अनेकानेक व्याधियों का सही ढंग से निदान किया जाता है।

जिह्वा की परीक्षा :—स्वस्थ शरीर वाले मनुष्य की जीभ नरम तथा निर्मल होती है।

हाजमे सम्बन्धित विकार तथा फोड़े के कारण जीभ का

वमन और हिचकी :—मस्तिष्क सम्बन्धित रोग, फेफड़े वक्षस्थल, जरायु अथवा मस्तिष्क यन्त्र में किसी विकार के उत्पन्न हो जाने पर वमन (उल्टी) होती है।

कृमि, आमाशय अथवा यकृत के प्रदाह में हिचकी आती हैं।

एनीमा क्या है :—डूश एनीमा सीरिंज या किसी अन्य यन्त्र की सहायता से आंतों के अन्तिम भाग को पानी या किसी औषधि से धोने को एनीमा कहते हैं।

पेट में मल के सूख जाने और प्रयास करने पर भी पखाना न होने की स्थिति में एनीमा का प्रयोग किया जाता है।

दस्त लाने वाली औषधि भी इस्तेमाल की जा चुकी हो और अजीर्ण हो, आंते निर्बल हो गई हों या पेट में सख्त दर्द हो तो इसका प्रयोग आवश्यक हो जाता है।

इसके द्वारा औषधि मल द्वार के रास्ते रोगी की आंतों में पहुँचाई जाती है।

एनीमा चार प्रकार के होते हैं—

1. इवैक्वेंट 2. न्यूट्रेंट
3. स्टिमुलेन्ट 4. मेडीकेटेड

एनीमा के लिये इन यन्त्रों की विशेष आवश्यकता पड़ती है—

(1) डूश (2) एनीमा सीरिंज
(3) ग्लीसरीन सीरिंज

इवैक्वेंट एनीमा :—डूश की सहायता से एनीमा कराना हो तो लगभग 600 ग्राम गर्म पानी किसी तसले में डालकर साबुन को हाथों से मलकर पानी में डाल दें। जब खूब सफेद झाग बन जायें तो उनमें लगभग एक औंस कैस्टर आयल (रेंडी का तेल) मिलाकर डूश में भर लेते हैं।

रोगी को किसी पलंग अथवा मेज पर दायें या बायें करवट

वस्तु की औषधि को—किसी रोग को अच्छा करने के लिये पहुंचाने को मेडिकेटेड एनीमा कहते हैं ।

इसका प्रयोग कम ही किया जाता है—हैजे के रोग में ऐलाईन सैल्यूशन का मेडिकेटेड एनीमा बहुत उपयोगी होता है।

कैथेटर:—यह एक यंत्र है जिसके द्वारा मूत्र उतारा जाता है। यह निकिल, सिल्वर या रबड़ का बना होता है। यह कोमल तथा लचकदार होता है और अन्दर से खाली होता है। अगले भाग में कटा हुआ छेद होता है जो मूत्र द्वार में प्रविष्ट कराया जाता है।

चूंकि स्त्रियों का मूत्राशय निकट होता है इसलिये उनका कैथेटर कम लम्बा होता है और केवल एक ही कैथेटर प्रयोग में आता है। यह धातु का बना होता है—जो सिरा मूत्र के छिद्र मे प्रविष्ट किया जाता है उस पर चार-चार छिद्र होते हैं-और शेष समस्त बातों में पुरुषों के ही समान होता है।

इस यंत्र को प्रयोग करने से पूर्व जल से भली-भांति साफ कर लेना चाहिये। मूत्र द्वार में प्रविष्ट करने वाले चौथाई भाग में ग्लेसरीन या वैसलीन लगा देना चाहिये।

रोगी को चित पलग पर लिटा देना चाहिये और कमर के नीचे तकिया लगा देना चाहिये। रोगी के बायें ओर कैथेटर लगाने वाले को होना चाहिये तथा प्रयोग करना चाहिये।

उपरोक्त सभी यन्त्र भी थर्मामीटर और स्टेथेस्कोप की ही भांति किसी भी सर्जिकल स्टोर मे मिलते हैं।

चूंकि यह घरेलू और आपात कालीन पुस्तक है और इसके माध्यम से आप अपने घर मे मरीज के इलाज के लिये खुद को तैयार करना चाहते हैं अतः उपरोक्त यन्त्रों और ... की जानकारी दी गई है।

भाग को दबाते हैं और दबाकर धीरे-धीरे छोड़ते हैं।

इसके बाद सीरिंज को निकाल लेना चाहिये तथा रो को शान्त करने के लिये बैठा देना चाहिये।

ग्लीसरीन सीरिंज:—पाखाना कराना हो तो सीरिंज ऊपरी भाग को खोलकर एक ओर, ग्लीसरीन उसमें भर देते और दोनों को कसकर मिलाकर सीरिंज को मल द्वार में प्रवि करा देते हैं।

सिरिंज को धीरे-धीरे दबाकर औषधि को प्रवेश करा —तेजी से प्रवेश कराने पर आँतों में जख्म होने का भय हो ।

बच्चों को अधिक से अधिक चार ग्राम और वयस्क को दं तोल तक दिया जा सकता है।

न्यूट्रेंण्ट एनीमाः—मुंह, कंठ, जिह्वा के सूज जाने पर भोजन का मुंह द्वारा प्रवेश करना जब असम्भव हो जाता तो ऐसी अवस्था में खाद्य पदार्थ मल द्वार से पहुंचाते हैं। आँतें उसको सोखकर शरीर को भोजन पहुँचाती है। इस प्रकार किसी द्रव्य पदार्थ को मल द्वार से शरीर में पहुंचाने को न्यूट्रेंण्ट एनीमा कहते हैं।

पेप्टोनाइजिंग चूर्ण, ठण्डा पानी तथा दूध के द्वारा एक तरल पदार्थ तैयार किया जाता है।

स्टिमुलेण्ट एनीमाः—अत्यधिक कमजोरी हो जाने पर मल द्वार के रास्ते अन्दर ब्रांडी पहुँचाने को स्टिमुलेण्ट एनीमा कहते हैं।

एक छटांक ब्रांडी, एक छटांक गरम पानी में मिलाकर ग्लीसरीन सीरिंज के द्वारा अन्दर प्रविष्ट कराते हैं। तत्पश्चात कुछ समय तक मल द्वार को कपड़े से दबाये रखते हैं ताकि दवा बाहर न निकलने पाये।

एनीमाः—मल द्वार मार्ग से किसी भी द्रव्य

उसके दौरे में मदद पहुंचाता है। भोजन को साफ करने में सहायता पहुंचाता है और बचे हुये खाद्य को पतला बनाकर खून के साथ मिल जाने की सुविधा पहुंचाता है।

इन उपादानों का सही मात्रा में शरीर में रखने से शरीर स्वस्थ रहता है—ज्यादह या कम हो जाने से शरीर अस्वस्थ हो जाता है।

पथ्य :—बुखार या बुखार से मिली दूसरी बीमारियों की नयी दशा में पतला या हल्का जौ का पानी अरारोट, सागू आवश्यकतानुसार दिये जा सकते हैं। कब्जियत में सागू और पतले दस्त होने पर अरारोट अच्छा पथ्य है। जिन बच्चों को कृमि हो उनके लिए बार्ली, (जौ का पानी) बढ़िया पथ्य माना जाता है।

बुखार जाने के कई दिन बाद—हल्का दूध दिया जाता है। पेट की गड़बड़ी में दूध नुकसान दे जाया करता है।

निमोनिया, ब्रानकाइटिस इत्यादि बलगम वाली बीमारियों की पहली अवस्था में दूध न देकर जब बलगम पीला हो जाये तो एक सप्ताह बाद दूध देना चाहिए।

अतिसार और पेट की गड़बड़ी वाली बीमारी में छेने का पानी बढ़िया पथ्य है।

पेट की गड़बड़ी में किशमिश, मुनक्का, अंगूर, नींबू, आंवला न देना चाहिए—पर अनार कब्जियत व दस्त दोनों में उपयोगी है।

मसूर का पानी टायफाइड जैसी बीमारियों में बहुत उपयोगी है। यह पतले दस्त या कब्ज की अवस्थाओं मे दिया जाता है।

नारंगी, अनार, गन्ना, महतावी नींबू, न
इत्यादि खट्टे-मीठे फल, बहुत से चिकित्सक ज्वर के
दिया करते हैं। पर बलगम और सांस की ि

यंत्र प्रयोग करने की यदि आपातकालीन आवश्यकता पड़ जाये तो किया जा सकता है, बेहतर होगा कि अगर कोई जानकार व्यक्ति मिले तो उससे सहायता लें-अन्यथा 'आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है' इस सिद्धान्त के बहुत आप इस्तेमाल कर सकते हैं।

भोजन और पथ्य

शरीर को निरोग रखने के लिए उचित और सही मात्रा में भोजन का सेवन करना सबसे आवश्यक बात होती है। भोजन के मामले में थोड़ी सावधानी करने पर आप रोगों के बहुत से आक्रमण से बच सकते हैं।

तो आइए देखें—हमें निरोग रखने के लिए भोजन का क्या महत्व है।

साधारणतः पांच प्रकार के उपादान हमारे खाद्य पदार्थ में मौजूद रहते हैं—

1. धाना जाति (Protien), 2. चीनी या श्वेतसार जाति (Carbohydrate), 3. चर्बी जाति (Fat), 4. लवण (Salt) 5. पानी (Water)।

इसके अलावा विटामिन उपादान का भी आविष्कार हुआ है। विटामिन की कमी भी बहुत सी बीमारियों का कारण बनती है।

प्रोटीन से शरीर पुष्ट होता है।

शर्करा जाति कार्बोहाइड्रेट शरीर में गर्मी उत्पन्न करते हैं और उसमें काम करने की शक्ति बढ़ाते हैं। चर्बी जाति के उपादान से भी शर्करा जाति के उपादान की तरह ताप उत्पन्न होता है उससे काम की शक्ति बढ़ती है-शर्करा जाति की अपेक्षा गर्मी अधिक उत्पन्न होती है। लवण भी प्रोटीन की भांति

शरीर पर हमला हो जाने और छूत का रोग
हो जाया करता है। ज्वर की चिकित्सा
मुख्य कारण का पता लगाना चाहिए।
बना रहे उसे अविराम ज्वर कहते हैं।
फिर बढ़ जाता है उसे स्वल्प विराम ज्वर

फिर आ जाता है उसे विषम

प्रकार के ज्वर होते हैं जिनका वर्णन आगे

:— ऋतु परिवर्तन के समय सर्दी लगने
घूमने, खान-पान में लापरवाही से, अधिक
से सामान्य ज्वर हो जाया करता है।
रोग के सूक्ष्म कीटाणुओं का हमला
परेशान होने की आवश्यकता नहीं। पर
कीटाणुओं के बढ़ जाने का खतरा

ठण्ड के साथ सम्पूर्ण शरीर तथा सिर
रोग के प्रारम्भिक लक्षण हैं। इसमें शरीर
02 से 103 डिग्री तक रहता है। अधिक
कारणों तक वह 104 डिग्री तक भी पहुंच
की गति तीव्र हो जाती है, आंखें लाल,
तथा पसीना रुक जाना आदि भी इसके

की अधिकता होने पर पतले दस्त भी आने

बना रहे और लक्षण भी
नूतन होमियोपैथिक गाइड, पार्ट

सब प्रयोग करने की यदि आपातकालीन आवश्यकता पर अपने भी किया जा सकता है, बेहतर होगा कि अगर कोई जानकार व्यक्ति मिले तो उससे सहायता लें—अन्यथा 'आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है' इस सिद्धान्त के सहारे आप स्वयं प्रयोग कर सकते हैं।

भोजन और पथ्य

शरीर को निरोग रखने के लिए उचित और सही मात्रा में भोजन का सेवन करना सबसे आवश्यक बात होती है। भोजन के मामले में थोड़ी सावधानी करने पर आप रोगों के बहुत से आक्रमण से बच सकते हैं।

तो आइए देखें—हमें निरोग रखने के लिए भोजन का क्या महत्व है।

साधारणतः पांच प्रकार के उपादान हमारे खाद्य पदार्थों में मौजूद रहते हैं —

1. मांस जाति (Protien), 2. चीनी या श्वेतसार जाति (Carbohycrate), 3. चर्बी जाति (Fat), 4. लवण (Salt) 5. पानी (Water)।

इसके अलावा विटामिन उपादान का भी आविष्कार हुआ है। विटामिन की कमी भी बहुत सी बीमारियों का कारण बनती है।

प्रोटीन से शरीर पुष्ट होता है।

शर्करा यानि कार्बोहाइड्रेट शरीर में गर्मी उत्पन्न करते हैं और उसमें काम करने की शक्ति बढ़ाते हैं। चर्बी जाति के उपादान से भी शर्करा जाति के उपादान की तरह ताप उत्पन्न होता है उससे काम की शक्ति बढ़ती है—शर्करा जाति की अपेक्षा इसमें गर्मी अधिक उत्पन्न होती है। लवण भी प्रोटीन की भांति ... में सहायता करता है पानी खून को पतला रख

झुकाकर आंखें बन्द किये पड़ा हो—हिलना डुलना पसन्द न करे, एकान्त चाहे, हाथ-पांव तथा जीभ कांपते हों, भयानक कम्पन के समय रोगी उसे यह चाहें कि उसे कोई थाम ले इन लक्षणों के समय सिर दर्द हो, सिर को ऊंचा करने से आराम तथा नीचा करने में तकलीफ का अनुभव हो, पैर ठण्डे, माथा गरम रहे, पीठ पर ऊपर नीचे शीत चलने का आभास हो, प्यास अधिक न लगे—शरीर पर हाथ सहलाना भी अच्छा न लगता हो तो उपरोक्त दवा का सेवन करें।

इपिकाक :—3, 30—ज्वर के साथ वमन, मिचली, हृदय शूल, मुख में बदबू, तृष्णा, शरीर कम्प साथ ही शरीर कम्प लक्षणों में यह औषधि हितकर है। कुनैन के असफल होने के बाद यह औषधि लाभ करती है।

रोग के लक्षण स्पष्ट न हों और ठीक औषधि का निर्वाचन न हो पा रहा हो उस समय इसकी एक मात्रा देकर क्रिया को देखना चाहिए।

यूपेटोरियम :—30, 200—सर्दी का ज्वर, सविराम ज्वर के आने का समय प्रातः चार-पांच बजे तक हो, रोगी खुली हवा में रहना चाहे, रात भर बुखार रहकर प्रातः काल उतर जाये, ज्वर रहते समय—हाथ पांव तथा आंखों में जलन हो—प्यास न लगे, आदि लक्षणों पर यह लाभकारी है।

[illegible] :—6 30—सामान्य ज्वर, सर्दी के ज्वर [illegible] बन्द हो गयी हो, मलेरिया, प्लीहा तथा यकृत के [illegible] में उपयोगी [illegible]। इसमें रोगी अपने शरीर को [illegible] है [illegible] लगने पर भी वस्त्र ओढ़ना [illegible] पीले पड़ जाते

रहे तो इसे साधारण जुकाम ज्वर समझना चाहिये।

इसमें निम्नलिखित लक्षण अनुसार निम्नलिखित लाभकारी होती है—

एकोनाइट —3 X 6, 30, 200—सर्दी लगजाने, कठोर ठण्डी हवा, शरीर में जलन आदि उत्पन्न होने के उपरान्त आधी रात से पूर्व रोग हुआ हो—नाक से पतला पानी गिरता हो—पसीना नहीं आता हो तो एकोनाइट 3 X (डी एक्स) चाहिये। रोग के बढ़े-चढ़े लक्षण को देखकर इसे 30, 200 मात्राओं वाली दवाओं का इस्तेमाल भी सकता है, ध्यान रखें होमियोपैथिक औषधि में यदि आक्रमण हुआ ही है तो इसी मात्रा की दवा से ही इलाज करना चाहिये—पर यदि रोग बढ़ा हुआ है तो अधिक की दवा देनी चाहिए।

ब्रायोनिया :—6, 30, 200—एकोनाइट जैसी टूटन-सा हो, रोगी शान्त पड़ा हो—शरीर में दर्द, आंख कनपटी तथा सिर में दर्द, मुंह का स्वाद तीता, अ प्रमेह, पानी पीते ही वमन हो जाना, सूखी खांसी, सांस कष्ट आदि लक्षणों में यह औषधि उपयोगी है।

रस टॉक्स :— 6, 30—ज्वर, विशेषकर बरसात हवा लगने अथवा पानी से भीगने के कारण उत्पन्न ज्वर दर्द एवम् छटपटाहट के लक्षण हों—जीभ की नोक पर चिन्ह इसका प्रमुख लक्षण है।

फेरम फॉस :—6 X, 30—एकोनाइट जैसी तथा सुस्ती न होने पर यह एकोनाइट के ठीक बाद की है। इन औषधि के विचूर्ण को भी गर्म पानी के साथ में दिया जा सकता है।

जेलसीमियम :—3 X, 6 30—रोगी अत्यन्त

अवस्था में जब पसीना आकर ज्वर का वेग कम होने लगता है उस समय घबड़ाहट बढ़ जाती है।

ज्वर उतर जाने पर अत्यन्त कमजोरी का अनुभव होता है। इस ज्वर के विभिन्न लक्षणों पर विचार करके औषधि का चयन करना चाहिये।

ज्वर के उतरने या ज्वर के आने के 1 घंटा पूर्व तक औषधि देने से यह रोग दूर हो जाता है। चढ़े हुये ज्वर में औषधि नहीं देना चाहिये।

मलेरिया ज्वर की मुख्य औषधि कुनैन मानी जाती है परन्तु जिस बुखार में पसीना आता हो उसमें कुनैन हर्गिज न देनी चाहिये क्योंकि इससे शरीर में अन्य विकार पैदा हो जाता है। कुनैन देते समय खूब विचार करने की आवश्यकता है—आसाम, बंगाल राज्यों में मलेरिया का रूप भयावह होता है। वहाँ कुनैन के अतिरिक्त अन्य किसी औषधि से काम नहीं चलता। परन्तु उत्तर प्रदेश में होने वाले मलेरिया ज्वर की चिकित्सा में 'चायना' तथा 'नक्स वोमिका' का पर्याय क्रम से उपयोग विशेष लाभकारी सिद्ध हुआ है।

विभिन्न लक्षणों के आधार पर, इस ज्वर में निम्नलिखित औषधियां हितकर रहती हैं।

आर्सेनिक एल्ब :—30, 200—यह नये पुराने दोनों ही प्रकार के मलेरिया ज्वर में हितकर है। दिन अथवा रात्रि में बारह से दो बजे के बीच नित्य आने वाले ज्वर में-यह बहुत लाभ करती है।

मलेरिया आफसे नेलिस :—30, 200—प्लीहा एवम् यकृत के साथ, मलेरिया ज्वर, कफ ज्वर, मलेरिया के बाद कमजोरी तथा सुस्ती आदि में लाभकारी है।

चिनिनम सल्फ या कुनीन सल्फेट :—प्रातः दस बजे दोपहर तीन बजे या रात 10 बजे ठण्ड लगकर प्यास के

[illegible] ([illegible]) :—[illegible]
[illegible] है। [illegible]
. है। इसके [illegible] और [illegible]
[illegible] है। [illegible]
[illegible] है—

यह रोग अधिक दिनों तक बना रहे तो [illegible] में भी वृद्धि हो जाती है। [illegible] होता है, [illegible] हो जाती है। रोगी का शरीर [illegible] हाथ, पाँव में दर्द—[illegible] हो जाती है। [illegible] पाँव के [illegible] रहते हैं। [illegible]
उसके शरीर का भार 125 किलो तक बढ़ जाता है।

में भीग जाने अथवा तेज ठण्डी हवा लग जाने से उत्पन्न ज्वर —जिसमें कमर में तेज दर्द हो, चुपचाप पड़े रहने से दर्द बढ़ता हो, तथा हिलने डुलने से घटता हो।

सल्फर 30:— ठण्ड लगने से पूर्व प्यास लगना, परन्तु बाद में प्यास न रहना। रात्रि के समय अधिक पसीना आना। जीभ का पीला या सफेद पड़ जाना। किसी चर्म रोग के दब जाने अथवा कुनैन के अपव्यवहार से उत्पन्न ज्वर में।

बेलाडोना 6, 30: सिर में तीव्र दर्द, आंखें तथा चेहरे का लाल होना, अधिक धूप सेवन के बाद आया हुआ ज्वर बकझक आदि के लक्षण पर।

चायना 3X, 6, 200:—दिन में ज्वर आना, भोजन के बाद नाड़ी के वेग में कमी, यकृत अथवा प्लीहा में वृद्धि, ज्वर आने से पूर्व दिल का धड़कना। सम्पूर्ण शरीर में कम्पन, जलन, ज्वर अवस्था में मुंह तथा होंठ का सूख जाना परन्तु प्यास न लगना। ऊष्ण अवस्था में अधिक पसीना आना, तथा तीव्र प्यास लगना आदि लक्षणों पर।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि ऐसा ज्वर कभी रात में नहीं चढ़ता। प्रत्येक पारी में ज्वर का प्रकोप दो-तीन घण्टे पहले आता है तथा तीसरे, सातवें अथवा चौदहवें दिन फिर पलटा खाता है। ज्वर को कोई समय निश्चित नहीं होता, परन्तु यह प्रायः पांच छः बजे मध्याह्न में अथवा सूर्यास्त से पहले आता है।

नेट्रमसल्फ 30, 200:—सील भरे स्थानों पर रहने के कारण आने वाले मलेरिया तथा चार से आठ बजें के भीतर जाड़ा लगकर आने वाले ज्वर में उपयोगी है।

ओपियम 6, 30:—नवीन ज्वर में नाड़ी की चाल का धीमा होना, रोगी का गहरी नींद में मुंह फाड़े रहना, नींद अधिक आना, पसीना आने के बाद ज्वर का तेज होना, विषम ज्वर में अधिक ठण्ड लगकर बुखार आना, प्यास न

[illegible]

[illegible]

त ज्वर के कारण हितकर है।

पसेटिला 6, 12, 30 :—पक्वाशय की गड़बड़ी से उत्पन्न , तीसरे पहर आने वाला ज्वर, सूर्यास्त के समय बिना ु के आने वाला ज्वर। ताप अवस्था का अधिक देर तक ाना। हाथ-पांव में जलन— भोजन आदि के बाद निद्रा आदि गों में तथा विचनितम आदि के लक्षण में।

लैकेसिस 30, 200 :—नींद खुलने पर ज्वर के सभी गों में वृद्धि, बगल में लहसुन जैसी गंध आना, शराबियों ऋतु स्नान से विवृत होने वाली स्त्रियों का शीत ज्वर वत समय पर ज्वर आना। तिजारी, चौथिया, साप्ताहिक-प्यास के ठण्ड, शीत—पांव से उठकर ऊपर आये तथा के कारण दांत बजे—ज्वर उतरने पर बेहद कमजोरी आदि लक्षणों पर।

लामी 6, 30 :—रोगी को शरीर के भीतर इतनी ठण्ड का अनुभव हो जैसे वह बर्फ की भांति जम जायेगा, ांव से ऊपर की ओर लहर की भांति बढ़े तथा पीठ के नीचे उतरे। इन लक्षणों पर उपयोगी है।

इना 3X, 200:—कृमि के कारण उत्पन्न बालकों का समें नाक में खुजली, प्यास न लगना, कभी-कभी मुख ाना, नाक का खुजाते-खुजाते लाल हो जाना आदि र।

ोटोरियमपर्फ 3, 6, 30 :—ज्वर आने से पूर्व ही , ताप चढ़ने तक प्यास लगना, पानी पीते ही वमन, ्त का वमन होना। सम्पूर्ण शरीर तथा जोड़ों में में जाड़ा लगकर जाड़ा आना आदि

रया कार्ब 30:—दिन में दो तीन बजे . ज्वर आना, घुटनों तथा पांवों का

ऊष्णावस्था में अधिक प्यास लगना, तथा पसीना आदि लक्षणों पर।

बच्चों तथा वृद्धों के ज्वर में ये औषधि अधिक उपयोगी है।

नक्सवोमिका 3X, 6, 30:—प्रातःकाल आने वाला ज्वर, तीसरे पहर, संध्या अथवा रात्रि के समय ज्वर आने से पूर्व ही हाथ-पाँव का शिथिल हो जाना, शरीर का टूटना, भीतर गर्मी तथा बाहर ठण्ड लगना, शरीर का अत्यन्त गरम हो जाना, सिर चकराना, मिचली, नाखूनों का नीला पड़ जाना, एवं प्रतिदिन आगे समय बढ़ाकर आने वाले ज्वर में अत्यन्त उपयोगी है।

आर्निका माण्टेना 30, 200:—प्रातः आने वाला विषम ज्वर, जिसमें ठण्ड लगने से पूर्व जमुहाई, तीव्र दर्द एवं दुर्बलता आदि अधिक प्रतीत हो। क्युनिनम सल्फ के अव्यवहार पर इसे देना लाभप्रद होता है।

साइमेक्स 30:—संधियों, विशेषकर घुटनों में दर्द, कंपकपी से पूर्व प्यास लगना, पसीना आना, सिर का भारी हो जाना, ठण्ड रुकने पर तीव्र प्यास लगना, तथा पानी पीते ही पेशाब लगना आदि लक्षणों पर।

कैप्सिकम 6:—ठण्ड लगने से पूर्व ही प्यास लगना। ज्वर आ जाने पर पित्त की कै होना, गर्मी लगना, ज्वर आरम्भ होने के कुछ देर बाद ही पसीना आना। हड्डियों में दर्द आदि लक्षणों पर।

सीपिया 12, 30:—पुराना ज्वर, गलभेही का ज्वर, अत्यधिक जाड़ा लगने वाला ज्वर, मासिक ज्वर आदि।

यह पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों, विशेषकर विनम्र स्वभाव वाली महिलाओं के ज्वर में अधिक लाभकारी है।

कार्बोवेज 6, 30:—शाम के समय अधिक ठण्ड लगना, आरम्भ होने से पूर्व ही हाथ-पैर का ठण्डा हो ... तथा शरीर के जोड़-जोड़ में दर्द आदि के ... धूप लगने के कारण ज्वर तथा क्विनिनम के कारण

और पीला हो जाना। सिर, गरदन एवं छाती पर अधिक पसीना आदि लक्षणों में हितकर है।

मलेरिया आफिशनेलिए 30:— मलेरिया के दिनों में इस औषधि की सप्ताह में एक दो मात्रा लेने से मलेरिया सुरक्षा होती है।

प्रायः मध्याह्न में ज्वर आना, कम्प व पसीना बार-बार आना, तथा पुराने ज्वर में यह उपयोगी है।

पाइरोजन 30:—साय सात बजे ज्वर आना, पसीना, मल तथा श्वास में दुर्गन्ध, नाड़ी की अधिक तीव्र गति, बेचैनी की अधिकता, ज्वर की तीव्रता एवं ज्वर के समय रोगी का अत्यधिक बोलना आदि लक्षणों में।

लाइकोपोडियम 200:—साय चार बजे से आठ बजे के बीच ठण्ड लगना, ठन्ड के बाद पसीना तथा ज्वर आना। पेट में अफारा, वायु, मुख में खुश्की, पेशाब का थोड़ा एवं गहरा होना, कपड़ा ना ओढ़ने की इच्छा होना आदि के लक्षणों में, इसकी एक दो मात्रा ही पर्याप्त रहती है।

एन्टीमोनिया 30:— [illegible] नौ से ग्यारह के बीच ज्वर होना, बहुत एवं [illegible], दस्त, पेचिश आदि के लक्षणों में।

[illegible] ग्यारह से बारह बजे तक ज्वर [illegible] शरीर में दर्द पर इसका [illegible]

[illegible] से पहले ही शरीर का गरम [illegible] अधिक लगना—तीव्र प्यास [illegible]

[illegible] अथवा रात्रि में ग्यारह बजे ठण्ड लगना, दिन को कमजोरी लक्षणों में।

। इन्हें मोतीझारा कहते हैं—इस ज्वर का एक खास
ण है।
आंतों में एक तरह का जख्म पैदा हो जाता है। कभी-
इससे रक्त स्राव भी होता है। पतले दस्त और अतिसार
ज्वर का प्रधान उपद्रव है।

इसकी चिकित्सा के लिये निम्नलिखित दवायें लाभप्रद

ब्रायोनिया 30 :—पहली अवस्था में बहुत लाभदायक

बैप्टीशिया 3X :—प्रलाप, विकार, उदासीनता, कुछ
ने पर बात का जवाब देते-देते सो जाना, जीभ पर भूरे रंग
मैल आ जाय। बिछावन कड़ा मालूम पड़े। रोगी समझे
उसके अंग-प्रत्यंग अलग पड़े हैं।

रस टक्स 30 :—आधी रात के बाद रोग का बढ़ना,
भ का अगला भाग तिकोने में लाल होना। याददाश्त का
आना, रोगी का कुछ बुदबुदा कर बकना।

30 :—तेज प्रलाप, रोगी उछलता है, दांत से
है, चेहरा लाल, सिर दर्द, रोशनी सहन नहीं

30 :—जब रोग का आक्रमण पतझड़ मौसम में
तथा जिगर दोनों बढ़ गये हों और दिमाग में
से अनिद्रा हो।

बल्म 30 :—जलन, गर्मी ऐसी जैसे नसों में
चल रहा हो। ठण्डा लसदार पसीना आये।
छाती में जलन, बदमिजाज, रात को

:—सांस मुश्किल से ले पाये, नाड़ी धीमी
सा नजर आये, सिर चकराये, आंखें

देते हैं। इन्हें मोतीझारा कहते हैं—इस ज्वर का एक लक्षण है।

आंतों में एक तरह का जख्म पैदा हो जाता है। क कभी इससे रक्त स्राव भी होता है। पतले दस्त और अति इस ज्वर का प्रधान उपद्रव है।

इसकी चिकित्सा के लिये निम्नलिखित दवायें ला हैं—

ब्रायोनिया 30 :—पहली अवस्था में बहुत लाभद है।

बैप्टीशिया 3X :—प्रलाप, विकार, उदासीनता, पूछने पर बात का जवाब देने देर भो जाना, जीभ पर भूरे का मैल आ जाय। बिछावन कड़ा मालूम पड़े। रोगी क कि उनके अंग-प्रत्यंग अलग पड़े हैं।

रस टक्स 30 :—आधी रात के बाद रोग का ब जीभ का अगला भाग तिकोने में लाल होना। यादाश्त गायब हो जाना। रोगी का कुछ बुदबुदा कर बकना।

बेलाडोना 30 :—तेज प्रलाप, रोगी उछलता है, दां काटना चाहता है, चेहरा लाल, सिर दर्द, रोशनी सहन होती।

आर्सेनिक 30 :—जब रोग का आक्रमण पतझड़ मौसम ... तिल्ली तथा जिगर दोनों बढ़ गये हों और दिमा ... में अनिद्रा हो।

... 30 :—जलन, गर्मी ऐसी जैसे मर ... रहा हो। ठण्डा लसदार पसीना आ ... बदमिजाज, रात को ...

... नाड़ी धीमी ... आंखें अधखु...

और उतरने के समय 103, 102, 101 या 100 डिग्री तक उतरता है उसे स्वल्प विराम बुखार के नाम से जाना जाता है।

इस बुखार की कुछ मुख्य दवायें इस प्रकार हैं—

एकोनाइट 30 :—सूखी ठण्डी हवा लगकर बुखार पैदा हो। प्यास, बेचैनी प्रधान लक्षण हैं। मृत्यु भय बहुत अधिक रहता है।

आर्सेनिक ... 30 :— ज्वर जब पुराना पड़ गया हो और कुनीन अधिक दिनों तक खिलाई गई हो।

अमोन म्योर 3, 6 :— हर सातवें दिन बुखार आवे।

पेटमफेट 30 :— अनियमित रूप से मलेरिया जिसमें तिल्ली और दोनों बढ़ गये हों और ठण्ड न सवे।

मियादी बुखार Typhoid Fever)

आयुर्वेद के मतानुसार वायु, पित्त और कफ तीनों ... हो जाने पर सन्निपात अवस्था होना कहते हैं। इस... नाम आन्त्रिक ज्वर है क्योंकि इसमें खासकर आँतों ... का हमला होता है। यह अछूत रोग है।

विष के कीटाणु शरीर में घुस जाने के बा... ...ने के किसी तरह की ... ...

बेलाडोना 6X :—जब बीमारी फैल रही हो उस समय इसकी 6X मात्रा की एक खुराक 'दवा घर के सभी लोगों के द्वारा नित्य एक बार प्रातःकाल लेनी चाहिये। इससे रोग निकट नहीं आयेगा।

इस दवा का प्रयोग उस समय भी करते हैं जबकि मस्तिष्क में रक्त इकट्ठा हो जाता है तथा तेज ज्वर, गले में लाली—घाव शरीर पर लाल रंग के दाने, चेहरे का लाल होना आदि लक्षण दिखाई पड़ते हैं।

एकोनाइट 1X, 3X :—प्रथम अवस्था में जब बेचैनी, प्यास और शरीर का ताप बहुत हो।

आर्सेनिक 6, 30, — 0 —अत्यधिक कमजोरी, शरीर ठण्डा, प्यास के साथ बेचैनी और मृत्यु का भय होने पर प्रयोग होता है।

रसटॉक्स 6, 30 :—यह आरक्त ज्वर की उत्कृष्ट दवा है। इसके दानों का रंग बैंगनी होता है। रोगी सदा करवट बदलता रहता है।

एल-यम 3, 6 :—उस आरक्त ज्वर की महौषधि है जिसमें आरम्भ में ही घातक रूप धारण कर लिया हो और दिमाग आक्रान्त हुआ हो। नब्ज अनियमित, त्वचा खुरदरी, सूखी, गहरे नीले दाने जो माथे और चेहरे पर अधिक हों। तेज की, सिर चकराये, चमक लगे, मूर्छा, पुतलियां फैली हुयीं। गला फूला हुआ। घाव बने, भारी थकान। दाने दबाने से गायब हो जायें और फिर धीरे-धीरे उभरें।

अमोनकार्ब 6, 30 :—घातक प्रकार का आरक्त ज्वर। गला भीतर बाहर से फूल जाता हो। गले की कोठियां फूल जाती हैं और उनका रंग गहरा लाल हो जाता है। गरदन की ग्रंथियां फूल जाती हैं—टॉन्सिलों के पास में कड़ाप सोप, नाक आती है—खासकर रात को बंद मुंह से सांस लेनी पड़ती

है।

ऊपर के धड़ पर दाने अधिक निकले हैं, जहाँ त्वचा सुखी होती हो। चारों से नाक से। पस, खून बहने हो जाये।

एन्थ्राकीनम 30, 200 :—फुंसी के नीचे की ग्रन्थि फूलकर पत्थर के समान कड़ी हो जावें, जिसमें से दर्द हो अवश्य हो।

एपिस 3, 30—दानों वाले आरम्भ ज्वर में। शरीर कहीं गरम कहीं ठण्डा। दोनों की रंगत गहरी लाल। उसमें जलन और डंक मारने जैसा दर्द हो, तन्द्रा, अधिकतर व्याकुलता, औन्द्रा, बड़बड़ाना, ऑप गहरी लाल, सूखी जिसमें से दर्द, गला फूल जाए, पेशाब न हो या कम आवे, टायफाइड जैसे लक्षण आ जावें।

अर्निका 30 :—टायफाइड जैसे लक्षण, नाक से खून गिरे, खून थूके, शरीर पर लाल दाग पड़ जायें।

कार्बोअर्स 6 :—सारे शरीर पर दाने निकलें, गुर्दे और दिमाग भी प्रभावित हों, फेफड़ों में पानी आ जाये।

आरम ट्रिफाइलम 3, 30 :—नाक और मुंह से तीक्ष्ण स्त्राव आये। बच्चा बार-बार नाक में अंगुली करे, सिर बहुत गरम, चेहरा फूला हुआ, जबड़े की ग्रन्थियां और कर्णमूल फूल आये।

इस दवा के देने से पेशाब खुब आये तो समझिये इसने पूरा काम किया है।

...:—गला पीला, जबड़े की ग्रन्थियां और ... है, लार अधिक गिरे, गले की कोड़ियां बढ़ ...

...के 3, 30 :—जब फेफड़ों पर ... हाथ पांव सर्द, आंखें अधखुली, कान बहे, ...

प्रदाह।

प्रोटेलस 6, 30 :—घातक प्रकार का आरक्त ज्वर, रोम-रोम से खून आये, पित्त और खून की कै।

डूप्रम 30 :—दानों को उभारने के काम में आती है। जब दानों के दबने से दिमाग के पर्दों मे पानी आया हो तो विशेष लाभ करता है।

हैलीबोर 30 :—जब आरक्त ज्वर के कारण पेशाब से श्वेत मार आने लगा हो तो अधिक उपयोगी है। रोगी आखें बन्द करके चुपचाप पडा रहता है। भोंगापन आ जाता है, सांस मुह से लेनी पडती है।

लैकेसिस 6, 30 :—घातक रोग में हितकर है। दबे हुए दानों को बाहर निकालती है।

काला ज्वर (Black Fever)

एक प्रकार के जीवाणु से इसकी उत्पत्ति होती है।

श्वास और खाने-पीने की चीजों तथा खटमल द्वारा भी इसका विष एक-दूसरे के शरीर मे प्रविष्ट होता है।

इसमें यकृत और प्लीहा बहुत जल्दी बढती है। खून की कमी, मसूढ़े और नाक से खून गिरना। बुखार अनिश्चित समय पर आना और उतरना—आदि लक्षण काला ज्वर के होते हैं।

इसमें सम्पूर्ण शरीर काला पड़ जाता है। इसमें निम्न-लिखित औषधियां लक्षण अनुसार देनी चाहियें—

एण्टिम टार्ट :—इस रोग की प्रधान दवा है।

आर्सेनिक 30, 200 :—शरीर में खून की कमी, शोथ, प्यास आदि के होने पर प्रयोग की जाती है। दिन में दो बार या किसी भी समय ज्वर आने पर।

फास्फोरस 6, 10 :—नाक और मसूढ़े से रक्त आना।

छाती में दर्द, खांसी आदि पर।

चिनिनम सल्फ 6, 30 :— जाड़ा, गर्मी और पसीना तीनों अवस्थाओं के स्पष्ट दिखाई पड़ने पर। ताप को बिना जाड़ा होकर ज्वर आने पर इसका प्रयोग ज्वर के आने पर करना चाहिये।

विशेष—बीमारी पर मालिश का तेल छिड़कने से ज्वर कम हो जाते हैं।

डेंगू ज्वर (Dengue Fever)

इसे हड्डी तोड़ बुखार भी कहते हैं—यह फैलने वाली बीमारी है। शरीर में दर्द, थोड़ा-थोड़ा जाड़ा लगकर ज्वर आना। एकाएक ज्वर का बढ़ना 103-106 डिग्री तक। इसकी मियाद एक सप्ताह तक हुआ करती है। इसमें निम्नलिखित औषधियां कारगर होती हैं।

युपेटोरियम 30 :—तेज बुखार, शरीर और हड्डियों में तेज दर्द, अस्थिरता, प्यास आदि होने में।

ब्रायोनिया 6, 30 :—सूखी खांसी, छाती में दर्द, हिलने डुलने से तकलीफ बढ़ना आदि लक्षणों में।

बेलाडोना 3, 6 :—दिमाग में विकार, सिर दर्द, बेहोशी। बिजली की तरह सम्पूर्ण शरीर में दर्द का बढ़ना।

ठण्डी हवा से बचना चाहिए, हल्का पथ्य लेना चाहिये।

हैजा (Cholera)

घरेलू चिकित्सा के लिये हैजे की औषधियां घर में रखना बुखार की दवाइयों की तरह आवश्यक है। हैजा जानलेवा ... है। अगर रोग के लक्षण पहचान कर तुरन्त ... न आरम्भ कर दिया जावे। हैजे की ... वर्णन हम अगली पंक्तियों में करेंगे। पहले ... है कि हैजा किसे कहते हैं और यह कैसे फैलता ...

यह एक जीवाणु से फैलता है जिसके आँतों में प्रवेश कर जाने से हैजा हो जाता है। यह शरीर में घुसकर करोड़ों जीवाणुओं को एकदम से पैदा कर देता है।

हैजा कड़ू देने से ही कै और दस्त समझ में आ जाता है। कच्चे फल, मूग, खट्टी या सड़ी चीजें खाकर सड़ी माम-मछली) खाना, दूषित वायु का सेवन, बासी दूध या गन्दा पानी पीना, बहुत ज्यादा खाना, पीना, रात्रि में जागना, नशा करना आदि इसके गौण कारण हैं।

सड़े कोहड़े या पानी में डुबोकर रखे हुए बासी चावल के नीचे का पानी अथवा चावल के धावन या मांड़ की तरह दस्त और पानी की तरह गन्धहीन दस्त होना—हैजे के प्रधान लक्षण हैं।

इसके बाद सुस्ती, आंख मुंह धंस जाना, प्यास लगना, पेशाब बन्द हो जाना, अकड़न, ऐंठन, सारा शरीर नीला और ठण्डा पड़ जाना, नब्ज आदि लक्षण दिखलाई पड़ते हैं।

हैजा होते ही तुरन्त उपचार न करने से मर्ज के बढ़ जाने और खतरनाक स्थिति में पहुंच जाने की सम्भावना रहती है। इस रोग में शरीर में पानी की तेजी से कमी होती जाती है—पानी की कमी हो जाने के बाद ग्लूकोज चढ़ाये बगैर काम नहीं बनता।

आइये हैजे के प्रकार पर नजर डालें—

1. अतिसार हैजा (Diarrhoeaica Variety) :—जिसमें प्रबल दस्त, अधिक परिमाण में और जल्दी-जल्दी होता है। डायरिया हैजे का प्रथम लक्षण माना जाता है, पर इसे हैजा ही न समझ लेना चाहिये। डायरिया पर तुरन्त काबू पाया जा सकता है।

2. पाकाशयिक हैजा (Gastrica Variety)—जिसमें पाकस्थली में उत्तेजना, मिचली और लगातार के दस्त होता है।

3. पक्काशयिक आन्त्राशयिक प्रकार का (Gastro rica Variety)—जिसमें कै और दस्त दोनों ही समान रूप से होता है।

4. शुष्क हैजा (Dry Variety,—पतले-पतले दस्त एक रोग का घातक होना। यह भयकर होता है। प्रायः रोगी के जीवन को खतरा हो जाता है।

5. नये प्रकार का (Acute Variety)—जिसमें रोग तेजी से फैलता है जिसके लक्षण तुरन्त समझ में नहीं आ पाते, शरीर नीला पड जाना मुख्य पहचान है।

6. रक्तस्रावी प्रकार का (Hoemarrhegic Variety) इसमें दस्त में रक्त दिखाई पड़ता है। यह रोग नशेड़ियों शराबियों को अधिक होता है।

7. प्रदाहिक हैजा—(Inflammatory Variety) नाड़ी पूर्ण और चलन रहती है। शरीर लाल हो जाता है।

साधारणतया हैजा दो भागों में बांटा जा सकता है—

1. विशूचिका (Chlorine)—असली हैजा (Asi Cholera)

विशूचिका में नाभि के चारों ओर खोंचा मारने की तरह दर्द होता है। पित्त विकार हरे रंग का दस्त होता है। पेट ऐंठन होती है, शरीर की गर्मी धीरे-धीरे घटती जाती है, पेशाब बन्द नहीं होता, चेहरा पदरग नहीं होता।

असली हैजा मे पेट दर्द नहीं रहता। इसमें पहले से पित्त नहीं रहता, पहने व गुलियों में ऐंठन होती है फिर हाथ पैरों ... गर्मी एकाएक घट जाती है। पहने से ... है, नाक की जड़ नीली पड़ जाती है।

... याएं—

(Stage of Invasion)

(Stage of full development)

3. पतनावस्था (Stage of Collapse)

4. प्रतिक्रियावस्था (Stage of Reaction)

5. बाद में उपसर्ग (Stage of Sequela)

इस रोग की चिकित्सा की दवाएं इस प्रकार हैं—

रूबिनी स्प्रिट कैम्फर :—सभी प्रकार के हैजा और उसकी सभी अवस्थाओं में उपयोगी है।

कैम्फर Q, 30, 200 :—द्वितीय और बढ़ी अवस्था में लाभकारी है।

क्यूप्रम 30 :– ऐंठन प्रधान होने पर इस दवा को देनी चाहिए।

विरेट्रम एल्बम 30 :—लगातार परिमाण में अधिक दस्त होते हैं इसी वजह से एकाएक रोग बढ़ जाता है। बदन से ठण्डा पसीना आने लगता है। माथे पर अधिक पसीना आता है।

कैन्थरिस :—पेशाब के बन्द होने पर बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है। बार-बार वेग मालूम होने पर भी पेशाब न होने पर, प्रलाप में इसे देना चाहिए।

एकोनाइट 3X :—बुखार वाले हैजा की अवस्था में अथवा खून की दस्त आता हो तो उस हैजा में उपयोगी है। यह आक्रमण की अवस्था में जितनी उपयोगी दवा है उतनी ही उपयोगी बढ़ी हुई अवस्था में भी है।

आर्सेनिक 30 :—पूर्ण विकासावस्था की प्रधान दवा है। एशियाटिक या संस्थानिक हैजा की उत्तम औषधि है। इसमें तेज प्यास बहुत बेचैनी और मृत्यु का भय रहता है।

टिलियम 6 :—इसमें पेट में दर्द नहीं होता। दस्त चावल के धोवन की तरह कोहड़े के पानी की तरह होता है।

पोडोफाइलम 30, 200 :—बिना दर्द वाले हैजा की आक्रमणावस्था की बहुत बढ़िया दवा है। उबकाई आती हो,

3. आमाशयिक आन्त्रिक प्रकार का (Gastro Enteric Variety)—जिसमें कै और दस्त दोनों ही बराबर मात्रा में होता है।

4. शुष्क हैजा (Dry Variety,—इसमें दस्त वमन एक दो बार का पता होता। यह भयंकर होता है। अतः इसमें रोगी के जीवन को खतरा हो जाता है।

5. तीव्र प्रकार का (Acute Variety —जिसमें रोग इतनी तेजी से फैलता है जिससे दवा तुरन्त प्रभाव में नहीं आ पाती। शरीर नीला पड़ जाता मृत्यु हो जाती है।

6. रक्तस्रावी प्रकार का (Haemorrhagic Variety)—इसमें दस्त में रक्त दिखाई पड़ता है। यह रोग गर्भिणियों तथा शराबियों को अधिक होता है।

7. प्रदाहिक हैजा—(Inflammatory Variety)—नाड़ी पूर्ण और प्रबल रहती है। शरीर लाल हो जाता है।

साधारणतया हैजा दो भागों में बांटा जा सकता है—

1. विशूचिका (Chlorine)—असली हैजा (Asiatic Cholera)

विशूचिका में नाभि के चारों ओर चौंचा मारने की तरह दर्द होता है। पित्त विकार हरे रंग का वमन होता है। पेट में ऐंठन होती है, शरीर की गर्मी धीरे-धीरे घटती जाती है, पेशाब बन्द नहीं होता, चेहरा बदरंग नहीं होता।

असली हैजा में पेट दर्द नहीं रहता। इसमें पहले से ही पित्त नहीं रहता, पहले अंगुलियों में ऐंठन होती है फिर हाथ-पैरों में, शरीर में गर्मी एकायक घट जाती है। पहले से ही पेशाब बन्द हो जाता है, नाक की जड़ नीची पड़ जाती है।

रोगी की अवस्थाएं—

1. आक्रमणावस्था (Stage of Invasion)
2. पूर्ण विकासावस्था (Stage of full developments)

3. पतनावस्था (Stage of Collapse)
4. प्रतिक्रियावस्था (Stage of Reaction)
5. बाद में उपसर्ग (Stage of Sequela)

इस रोग की चिकित्सा की दवाएं इस प्रकार हैं—

रुबिनी स्प्रिट कैम्फर :—सभी प्रकार के हैजा और उसकी सभी अवस्थाओं में उपयोगी है।

कैम्फर Q, 30, 200 :—द्वितीय और बड़ी अवस्था में लाभकारी है।

क्युपरम 30 :- ऐंठन प्रधान होने पर इस दवा को देनी चाहिए।

विरट्रम अल्बम 30 :—लगातार परिमाण में अधिक दस्त होते हैं इसी वजह से यकायक रोग बढ़ जाता है। बदन में ठण्डा पसीना आने लगता है। माथे पर अधिक पसीना आता है।

कैन्थरिस :—पेशाब के बन्द होने पर बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है। बार-बार वेग मालूम होने पर भी पेशाब न होने पर, प्रलाप में इसे देना चाहिए।

एकोनाइट 3X :—बुखार वाले हैजा की अवस्था में अथवा खून की दस्त आता हो तो उस हैजा में उपयोगी है। यह आक्रमण की अवस्था में जितनी उपयोगी दवा है उतनी ही उपयोगी बढ़ी हुई अवस्था में भी है।

आर्सेनिक 30 :—पूर्ण विरामावस्था की प्रधान दवा है। एशियाटिक या संस्थातिक हैजा की उत्तम औषधि है। इसमें तेज प्यास बहुत बेचैनी और मृत्यु का भय रहता है।

टिसिनस 6 :—इसमें पेट में दर्द नहीं होता। दस्त चावल के धोवन की तरह कोहड़े के पानी की तरह होता है।

पोडोफाइलम 30, 200 :—बिना दर्द वाले हैजा की आक्रमणावस्था की बहुत बढ़िया दवा है। उबकाई आती हो,

अगर उल्टी न होती हो तो उसके लिए भी अचूक है।

सिकेलिकोर 6X 30 :—शरीर बर्फ की तरह ठण्डा, परन्तु रोगी बदन पर कपड़ा न रखना चाहे।

कॉलेरा एशियाटिका :—कॉलेरा के बढ़ी हुई अवस्था कालरा एशियाटिका कहलाता है। कै और दस्त बार बार होते हैं। पाखाना पानी सा पतला पूरा सा चावल सा और बदबूदार है। या मांड जैसा हो। इसके साथ पेट में ऐंठन और जलन हो, तेज प्यास हो और घूंट-घूंट पानी मांगे, शक्ति क्षीण होती चली जाए। मल द्वार और मल आन्त्र में जलन हो।

इसमें निम्नलिखित दवाएं लाभप्रद हैं—

कार्बोवेज 30 :—जब पतनावस्था आ चुकी हो, नाड़ी का मुश्किल से पता चलता हो। शरीर ठण्डा और नीला पड़ गया हो। सांस भी ठण्डा हो, पाखाना बन्द हो गया हो, मस्तिष्क में खून अधिक आ गया हो।

कॅम्फर :—रोगी को प्रारम्भिक अवस्था में हितकर है।

इपिक 30 :—प्रारम्भिक अवस्था में काम आती है जब कै और मिचली का जोर हो और पाखाने अधिक न हों।

फास 60 :—जब पाखाने अधिक पतले हों।

फास ए :—यह रोग की अचूक दवा है। पाखाने बार-बार पतले, चिकने, सफेद से हों और उनमें अनपचा खाद्य आ रहा हो।

सल्फर 30 :—जब अमाशय अधिक खराब हो, निगाह धुंधली पड़ गयी हो, कान गूंजते हों, पाखाने पानी से पतले, झागदार, आंव या रोग सफेद सा या हरा सा और जब रोग रात को आया है।

सावधानी :—हैजा का रोग देखते ही खोलाया हुआ पानी ठण्डा करके देना चाहिये। बर्फ चूसने के लिए देना चाहिए। कच्चे नारियल का पानी फायदेमंद है। मल-मूत्र को दूर ले जाकर जमीन में दबा देना चाहिये। हाथ पैर में जहां अकड़न

हो वहा नमक या बालू की पोटली से सेकना चाहिए।

अन्य दवाएं :—ओपियम, लोरोसिरेसस, कोबा, टेरिबिन्थ केलि, बाइक्रोम, बेलाडोना, स्ट्रोमोनियम, चाइना, एसिड-फास कैमोमिला, पोडोफाइलम, नक्स वोमिका आदि।

क्यूप्रम, कैम्फर दिन में 3 बार देने से रोग होने का डर नहीं रहा करता। रोग फैल रहा हो तो एक चुटकी काफूर पानी में डालकर सेवन करें।

प्लेग (Plague)

14वीं शताब्दी में 'ब्लैक डेथ' के नाम से इस रोग का आविर्भाव इंग्लैण्ड में हुआ।

यह संक्रामक तथा स्पर्श क्रमक रोग है जो विशेषतया मनुष्यों तथा छोटे जानवरों में पाया जाता है। 'कोक्को बैसिलस' नामक जीवाणु इसके प्रादुर्भाव के कारण माने जाते हैं। प्रायःकर चूहे इस रोग के दूत माने जाते हैं। इसके जीवाणु अंधेरी कोठरियों तर सील भरी जगहों में बढ़ते हैं।

यद्यपि माना जाता है कि संसार से इस संहारक रोग को मिटा दिया गया है पर कुछ प्रचलित दवाओं और लक्षणों के बारे में जानकारी हासिल कर ली जाए तो हितकारी रहेगी।

ब्युबोनाइनम 200 :—ब्युबेनिक प्लेग की गुणकारी दवा है।

अन्य दवाएं—हायोसायमस, स्ट्रैमोनियम, बैप्टिशिया, कोबा, लैकेसिस, पाइरोजिनम क्रोटेलस आदि।

इन्फ्लुइन्जा (Influenza)

एक तरह से यह छूत की तरह फैलने वाली बीमारी है। जीवाणु इसके प्रमुख कारण है।

जाड़ा लगना, बुखार सिर दर्द, पलकों में दर्द, खांसी, नाक से पानी गिरना छींक, देह टूटना इसके प्रधान लक्षण हैं। इसका ज्वर 100 डिग्री से 103 डिग्री तक चढ़ता है। कभी-

[illegible] सिर दर्द [illegible]
[illegible] चिकित्सक [illegible]

कुछ विशिष्ट रोगों के लक्षण तथा इलाज

जैसा कि पहले भी लिखा जा चुका है होमियोपैथिक चिकित्सा में रोग के नाम का कोई महत्त्व नहीं है, लक्षणों का महत्त्व है। पर यह कि यह पुस्तक केवल चिकित्सा के उद्देश्य से लिखी गयी है। अतः इस बात का ध्यान भी है कि रोग के [illegible] रोग और लक्षण के अनुसार दवा बतायी जाए।

मानसिक रोग अनेक प्रकार के होते हैं। कुछ शारीरिक कारणों से होते हैं कुछ बढ़ी हुई अवस्था के। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है।

विषाद (Melancholia) :—किसी बड़ी चिंता या दुख के कारण उदास रहना, दुखी रहना ही विषाद कहलाता है। छोटी बातों-बातों, [illegible] रहने की चिंता छोड़ देता है। एकान्त में रहना पसन्द करता है। काम-काज या किसी से बातचीत करना भी पसन्द नहीं करता। आत्महत्या करने की

बात सोचने लगता है। रोगी बदमिजाज भी हो जाता है। विषाद रोग अनेक कारणों से जन्म लेता है। इसकी अनेक दवाएं हैं। लक्षण देकर दवाएं दें।

अर टेमन :—निराशा, व्यग्रता, हतोत्साह, बदमिजाज बात-चीत या दिमागी मेहनत से आसानी से थक जाना। कोई शारीरिक मेहनत न करना चाहे, चेहरे पर झुर्रियां, पीला पानी आदि में।

एग्नस कैस्टस 12, 30 :—अधिक सहवास से आया उपद्रव समझता हो कि मौत आने वाली है इसलिए कुछ करने-धरने की जरूरत नहीं।

अक्नागिग्निया 30, 200 :—कई-कई दिन तक रोता रहे, एकान्त प्रिय, परेशान रहे—निराश, चिन्तित रहे।

एनाकार्डियम 6, 12, 30 :—हर चीज स्वप्न जान पड़े, स्मृति, अभी-अभी क्या हुआ है यह न रहे। समझता हो कि रा शरीर व आत्मा अलग-अलग है। जरा-जरासी बात पर राज होकर गालियां और शाप देने लगे—अपने को घायल ना चाहे।

प्रसव के बाद का उन्माद

बीमारी के बाद आया मानसिक विकार, जिसमें वह आत्म ा करना चाहे। खिन्न निराश रात में घबड़ाकर उठ बैठे—ी और दम घुटे कांपे और मूर्छित हो जाए, मौत से डरे भी आत्म हत्या करना चाहे। व्याकुल, अस्थिर कहीं भी न मिले ये लक्षण प्रसव के बाद के उन्माद के हैं।

औरममेट 30, 200 :—प्रसव उन्माद, जिगर और अन्य र के साथ मानसिक खराबियां, निराश एकांत प्रिय। रोए ा करे मरना चाहे। झगड़ालू, लड़खड़ाए, डगमगाए। तो भयानक स्वप्न आये। कामेन्द्री में जाय।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] वस्तु [illegible] पूर्ण [illegible] मे [illegible]

कॉस्टिकम 30, 200 :—शाम [illegible] का [illegible] करने से [illegible], बिगाड़ पर [illegible] करने के लिए मैं बाहर [illegible]। [illegible], फिर भी [illegible] न रहता [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]।

[illegible] 30 :—[illegible] वर्षा [illegible]। अकेले रहने से डरे। धीरे धीरे [illegible] आते [illegible] है। फिर [illegible] यदि [illegible] न मिले। धार्मिक भ्रमों में अनिद्र[illegible]। [illegible] में [illegible] [illegible] व [illegible] [illegible]।

इग्नेशिया 30 :—भीतर ही भीतर रोए। एकांत प्रिय, [illegible] हो सके। [illegible] पर इच्छा नहीं।

नेट्रम कार्ब 30X, 200 :—संगीत सुनकर मन घबड़ाए, आत्महत्या करने की प्रबल इच्छा। निम्न [illegible] में [illegible]

नम मौसम में तकलीफ बढ़े ।

ओलिण्डर 30, 200 :—अन्य मनस्यक, कुछ भी न करना चाहे । कोई छूये तो नाराज हो जाए । सांस भरने से दम घुटने का आभास हो । हर दम सिर घुमलाता रहे । अफारा, हवा पेट में गड़गड़ाए । पसीना अधिक आवे ।

पल्स 30, 20 :—हर दम ईश्वर पूजा में मन लगा रहे । छाती में घबड़ाहट और आत्मघात करना चाहे, दूसरों की बात मान ले । आंखों पर गहरे स्याही । चेहरा, पीला । हाथ सर्द, मुंह कड़वा ।

सीपिया 30, 200 :—स्त्री कामांगों के रोग के साथ मानसिक विकार । उत्साह हीन अपने आप हंसे व रोये । घर के काम धन्धों में कोई दिलचस्पी न ले ।

सल्फर 30, 200 :—पूजा पाठ में ही लगा रहे, आत्मा की फटकार से दुःखी महसूस करे । मुक्ति की चिंता । रोये, घबड़ाहट के दौरे उठें । रक्त संचार मंद, जीवन से निराश । सारे शरीर विशेषकर अमाशय में दुर्बलता का बोध ।

वराट अल्ब 30 :– धार्मिक कामों में व्यस्त रहे । धर्म चर्चा करता रहे । आत्मघात करना चाहे । शाप दे, कोसे ।

वाक् रोध : आंशिक : पूर्ण
(Aphasia, Agraphia)

यह स्नायविक विकार है । इसका सम्बन्ध मस्तिष्क से है । रोगी बिल्कुल नहीं बोल सकता या रुक-रुककर अस्पष्ट बोलता है–लिख भी नहीं सकता ।

इस विकार में निम्नलिखित औषधियां काम करती हैं–

बैराइट असेट 30 :—शब्दों या अक्षरों का अनुपयुक्त व्यवहार चीजों के नाम याद न रख सके ।

कैलकेरिया कार्ब 30 :—सोच, विचार न कर सके जो

कुछ कहना चाहिये वह न कह पाये।

एमोनिया 30, 200 :—लिखते या बोलते समय अक्षर और शब्द छोड़ जाये।

कोनियम 30, 200 :—बोलते-बोलते भूल जाये, क्या कहा था यह न समझ पाये। बोलते समय सोचे कि उसे क्या कहना है।

कालीमिम 6 30 :—पढ़ सके परन्तु समझ न पाये। सुनकर शब्दों का सही उच्चारण न कर पाये। लिखते समय अक्षर और शब्द छोड़ जाए।

नैट्रोमम-3, 30 :—दिमागी कमजोरी, अपने विचार निर्बाध रूप से व्यक्त न कर पाये। लिखने और बोलते समय भूल करे।

लैकेसिस 20, 30 :—सुन सकता है परन्तु समझ नहीं सकता कि क्या कहा गया है। लिखने में भूल करे।

कैलीफॉस 6X, 30X, 200 :—अधिक दिमागी मेहनत करने के बाद आयी कमजोरी का परिणाम।

लाइकोपोडियम 12, 30, 100 :—स्मरण शक्ति दूषित। पढ़ने और जोड़ लगाने मे भूल करे। उत्तर देते समय प्रश्न दोहराये। स्मरण शक्ति कमजोर। दूसरों की बातें कर सहन न कर सके।

दिमागी कमजोरी (Brain Fbg)

दिमागी कमजोरी में निम्नलिखित दवाएं हितकर हैं—

अगारि, अनाकार, मर्क, बैराइकाकार सोनिफि, इग्ने, फीकॉस, मेक्स, साइलीशिया।

मानसिक आवेग में

इस रोग मे निम्नलिखित दवाएं लाभप्रद हैं :—

एकोन 12, 30 :—बहुत दिन पहले कभी डर लगा था, उसके उपद्रव अत्याधिक डर, स्नायविक उत्तेजना, घर के बाहर जाने से डरे। सड़क या रास्ता खासकर तंग रास्ता पार करने से डरे। भीड़ मे जाने से डरे। भय लगने के कारण गर्भपात की आशंका।

अल्युमिना 30 :—डर, आशंका। कोई दुःख आने वाला है। अकारण व्याकुलता।

एनाकार्डियम 30 :—आतुर, भयभीत, लोगों से घृणा करे। हरदम आग या लकवा मार जाने की आशंका। सोचना हीं मौत आने वाली है। आत्मबल का अभाव।

आर्जेनाइट्री :—अकेले रहने से डरे, भय और चिंता के मारे दहलता रहे। ऊंची जगह जाने से या पुल पार करने से डरे कि कहीं कूदकर आत्महत्या न कर लूं।

आर्स एल्ब :—मौत का भय, एकान्त मे सोने जाते मे डरे। बिस्तर से उछल पड़े। सर्द पसीना आये, कांपने लगे, निढाल हो जाये। आधी रात क बाद कष्ट बढ़े।

बोरैक्स 30 :—यदि आस-पास कोई छींके या नाक साफ करे तो बच्चा डर जाये। बच्चा नीचे लिटाये जाने से डरे, बादल गरजने से डरे।

ग्रावोनिया 30, 200 :—भावी घटनाओं का भय, ताजी हवा मे प्रसन्न चित्त रहे, चिड़चिड़ा मिजाज जल्दबाज।

कास्टिकम 30 :—रात्रि जागरण, चिंता और भय से दुष्ट परिणामों की कल्पना मे खोये। दिल घबराये। अपने को हर काम के अयोग्य माने।

सिक्यूटा 30 :—दूसरे के पास रहने या बैठने मे

है, एकान्त में अब भी दरवाजा खोले पकड़ा जाये।

ब्रूमम 30 : धूप में तेज चलने से डर लगे। बच्चा हर समय मां की गोद में ही रहना पसन्द करे।

हायोसा 30 :—डरता हो कि कोई मुझे जहर दे देगा।

जेल्स 30 :—बादल बिजली की कड़क का डर, परीक्षा या श्रोताओं के सामने आने से डरे। डर से गर्भपात हो जाये।

मर्क 30 :—भय, दुर्बलता, मरणासन्न, रात को कष्ट बढ़े। घर से बाहर तक जाकर घूमे।

— ◦ —

सामान्य रोग चिकित्सा

पिछले अध्यायों में आपने होमियोपैथिक और बायोकैमिक दवाओं के बारे में जानकारी, उन दवाओं की उपयोगिता, प्रयोग और लक्षण के आधार पर रोग निदान के बारे में आवश्यक जानकारियां ली।

अब आपकी सुविधा के लिए रोग के अनुसार दवाओं की जानकारी दी जा रही है। एक ही रोग के अनेक लक्षण होते हैं —जरूरी है कि आप रोग के लक्षण मिलाकर दवा लें।

सरदर्द :—सरदर्द आज के जमाने में आम रोग है। सरदर्द की दवाएं सड़क, गली, मौहल्ले की परचून और जनरल स्टोर की दुकानों पर (एलोपैथी) आप आमतौर से लोगों को खरीदते देखते हैं—हो सकते हैं स्वयं भी आप खरीदते हों। सरदर्द की सैकड़ों दवाएं प्राप्त हैं। पर आप शायद कभी इस बात को नहीं सोचते कि अंग्रेजी दवाएं बगैर किसी डाक्टर के परामर्श के आप जो सेवन कर रहे हैं उनका साइड इफेक्ट भी हो सकता है। कुछ लोग तो सरदर्द की दवाएं खाने के इतने आदी हो जाते हैं कि दिन में कई-कई गोलियां खाते हैं। निश्चित रूप से वे अपने स्वास्थ्य के साथ ही नहीं जीवन के साथ भी खिलवाड़

करते हैं। सरदर्द के बारे में एक प्रसिद्ध शेर याद आ रहा है—

दर्देसर में चन्दन का लगाना है मुफीद
लेकिन उसका घिसना और लगाना भी तो दर्द सर है।

उपरोक्त शेर से यह आशय निकलता है कि दर्दे सर में चन्दन को घिसकर उसका लेप लगाना भी लाभप्रद होता है। आयुर्वेद हिकमत में भी इस मर्ज की हजारों दवाएं हैं। पर वही बात 'घिसना और लगाना भी तो दर्देसर है' अर्थात आज के व्यस्ततम् जीवन में दवाओं को कूटने, छानने, घिसने की झंझट कौन मोल ले। नतीजा सामने आता है—रेडियो पर टी. वी. पर सुने—देखें प्रचार के अनुसार आपको किसी भी सरदर्द निवारक दवा का नाम स्मरण रहा, दुकानदार से खरीदा और खा लिया। टैम्परेरी फायदा भी हो गया मगर रोग का पूरी तरह निदान नहीं हो पाया। सरदर्द के मूल में क्या है, कब्ज है शरीर में आन्तरिक कोई खराबी है? इन बातों को समझकर आप जड़मूल से रोग से छुटकारा पा सकते हैं और इसी छुटकारे की सहज विधियां हैं, होमियोपैथिक और बायोकेमिक की औषधियां—रोग के लक्षण के अनुसार जिनका सेवन कर सदा के लिए निरोग हो सकते हैं इनका कोई भी साइड इफेक्ट नहीं होता। न सिर्फ सरदर्द से ही आपको छुटकारा मिल जायेगा बल्कि शरीर के अन्दर के अन्य सभी विकार खत्म हो जायेंगे जो सरदर्द को पैदा करते हैं तो आइए अब इन दवाओं की ओर इनके लक्षणों का परिचय प्राप्त करें—

बेलेडोना :—जोरदार धप-धप करने वाला, माथा फटता हुआ मालूम दे, कनपटियों में दर्द, दाहिनी ओर का दर्द, रोशनी असहनीय, आंखें लाल, दोपहर बाद दर्द का बढ़ना।

ब्रायोनिया :—सर और माथे में दर्द, खोपड़ी फटी जाती है आंख खोलने, सर घुमाने, हिलने-डुलने, बैठने से, दर्द वृद्धि का लक्षण। कब्ज रहना, जी मिचलाना, और

[illegible] —[illegible] के साथ सर दर्द, चक्कर, [illegible]
[illegible] से [illegible] की कुछ है।

[illegible] —मानसिक [illegible] [illegible] का [illegible]
[illegible] और [illegible] के कारण सर दर्द [illegible]
[illegible] से [illegible] और [illegible] का सरदर्द।

[illegible] हिस्सों के ऐसे सरदर्द जो [illegible] ठीक है [illegible]
[illegible] की अनियमितता से कमजोरी हो जाना। [illegible]
[illegible] पुराना सरदर्द।

कल्केरिया फास :—विद्यार्थी बालक तथा बालिकाओं का सरदर्द, सर भारी तथा ठण्डा प्रतीत है। खोपड़ी पर दर्द। सर के पिछले भाग में दर्द। [illegible] से कभी दर्द बढ़ जाए कभी घट जाये।

काली फॉस :—स्नायविक सर दर्द, बूढ़ों का दर्द, विद्यार्थी जो पढ़ाई के परिश्रम से सुस्त हो गये हों, सरदर्द के रोगी का दर्द हों। ठण्ड से तथा ज्वर के साथ हो तो फेरम फास के साथ बारी-बारी से प्रयोग में लाया जा सकता है।

नेट्रम म्यूर —ऐसा दर्द जिससे मालूम हो कि छोटी-छोटी हथौड़ियों से सर पीटा जा रहा है। सुबह से सूर्यास्त तक रहने वाला दर्द। सुबह 10–11 बजे सर दर्द। मासिक ऋतुओं के दिनों में स्त्रियों का सिर दर्द।

साइलीशिया :—ठण्ड से, दिमागी मेहनत के कारण सर

थकावट का सर दर्द, जीर्ण सर दर्द, कमजोरी से और स्नायविक सर दर्द।

सर चकराने या सर का चक्कर खाने का इलाज

एकोनाइट—वमन, मिचली, बेचैनी, धूप लगने पर, सर उठाने से चक्कर आते हैं। नाड़ी तेज, प्यास की अधिकता, ज्वर की तेजी के साथ अन्दर से सर गर्म मालूम हो।

बैलेडोना :—सर की तरफ रक्त की गति बढ़ने से, आँखें लाल, सभी चीजें चक्कर घूमती हुई दिखाई देने के साथ चक्कर।

ब्रायोनिया—पाकाशय विकार, जीभ मैली, मुँह का स्वाद कड़ुवा और मिचली, उठने-बैठने से चक्कर। (बढ़ जाना।

इपिकाक :—मिचली के साथ चक्कर आने में गुणकारी।

नक्सवोमिका :—अजीर्णता, कब्ज तथा अनिद्रा या शराब पैदा हुए विकार से सर के चक्कर।

पल्सेटिला :—गरिष्ठ भोजन से पाकाशय विकार, ... ऋतु में देर अथवा अल्प रज.स्राव के कारण सर में चक्कर।

रस टॉक्स—टांगों और बाहु में भारीपन, शरीर में दर्द, ...लने-डुलने तथा भीगने से और वृद्धावस्था में चक्कर का ...ना।

कल्केरिया फास :—कमजोरी तथा पौष्टिक भोजन की कमी ... चक्कर।

नेट्रम म्यूर :—पर में खालीपन, कमर दर्द, रक्त की कमी, ...ट कमजोर, चेहरा पीला तथा फीका-फीका रहने से होने ...ा सर का चक्कर।

नेट्रम सल्फ :—पित्त की अधिकता के कारण गर्मी के दिनों ...र्षा होने पर सर में चक्करों का आना या बढ़ जाना ...ा।

आंखों की तकलीफ

एकोनाइट :—पलकों की सूजन' आंख में सुर्खी, ताप और ज्वर। आंखों के आपरेशन के बाद आंखों में दर्द प्रकार के कष्टों को दूर करने हेतु एकोनाइट को याद रखना चाहिये।

बेलेडोना :—आँखें लाल, दर्द, रोशनी असहनीय, दर दोपहर बाद दर्द का बढ़ जाना।

कैमोमिला :—आंखों में सूजन, दर्द, सफेद भाग में पीलापन, कीचड़ से भरी आँखें, दांत निकालने वाले बच्चों की आंखों का दुखना और बच्चों का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाना। बच्चा सदा रोता रहे।

हीपर सल्फ :—पलकें भारी, पीप या कीचड़ निकलता रहे, सख्त दर्द, छूने से और रोशनी में दर्द बढ़ने के लक्षणों में प्रयोग करें।

इग्नेशिया :—आंख के आपरेशन के बाद कनपटियों में कांटा गड़ने की तरह का दर्द। आंखों के सामने बिजली की चमक; ऊपरी परत में रेता चुभने सा दर्द। मालूम होने पर कारगर औषधि।

मर्क सोल :—शाम और रात को, आंखों का दर्द बढ़ जाने का लक्षण, पलकों में जख्म, आंखें लाल, दर्द और पलकों के किनारों में, सूजन।

कल्केरिया कार्ब—बच्चों की आंख, दुखना, पलकें सूजी हुई, रात को पलकें चिपक जायें। आखों के आगे चिंगारियां उड़ती हुई नजर आयें। मोटे और पिलपिले, गोरे रंग के बच्चों के लिये यह औषधि अधिक उपयोगी है।

सल्फर :—आंखों में जलन, धुंधली, गंदी आंखें; सर में अथवा शरीर के चर्म रोग को मरहम आदि बाहरी प्रयोग से दबाने के बाद आंखों के रोग उत्पन्न हुए कष्टों में प्रयोग।

करें।

क्लेरिया फ्लोर—पलकों में कड़ापन, वृद्धों का मोतिया-बिन्द, आरम्भिक काल से इस्तेमाल करने से मोतियाबिन्द दूर हो जाता है।

फेरमफास—सुर्खी, चेहरा लाल और दर्द, आंखों में तकलीफ के साथ ज्वर, आंख दुखने की पहली अवस्था में उपयोगी।

काली म्यूर :—दर्द और सुर्खी कुछ कम होकर दूसरी अवस्था शुरू हो जाने पर, सूजन, कीचड़, सफेद भूरा जैसा निकला करता है, पाचन क्रिया की गड़बड़ी रहती है।

काली सल्फ :—आंखों में गाढ़ा मैला कीचड़ निकले, आंखों में दर्द, सुर्खी जो बहुत दिनों से चली आ रही हो, बच्चों की आंख दुखने में विशेष हितकर है। फेरमफास के साथ बारी-बारी से देने पर अधिक लाभ होता है।

नेट्रमम्यूर :—पलकों में कमजोरी, आंख दुःखने के साथ-साथ आंसुओं का बहना, कुकरों (रोहों) के कारण आंखें लाल और रेता घुसने की तरह मालूम होना।

गोहान्जली आदि के लिए :—पल्स, लाइको, हीपर, सलिका, फाईटो और सीपिया का सेवन लाभदायक है।

आंख रोग से सावधानी हेतु कुछ विशेष जानकारियां—

(6) नमक या बोरिक एसिड मिले पानी से आंखों को ाफ करते रहने से आंखें नीरोग रहती हैं तथा छूत की बीमा-ऱ्या आंखों को छू नहीं पाती।

(ब) आंखों में सूजन, लाली और मवाद से पलकें सट जायें बोरिक एसिड मिले पानी से धोना चाहिये। ऐसे समय में धिक मीठे तथा उत्तेजक खाद्य से परहेज करें।

(स) आंख में कोयला आदि पड़ जाये तो आंख से निकाल के बाद और यदि एसिड (तेजाब) या चूना आदि आंख में जाये तो आंख को धोकर बाद में ...... आयल की एक-

दो बूंद डालने से ठण्डक मिलती है।

(द) सुबह उठते ही ताजे पानी की छींटे आँखों में से आँखों को ताजगी मिलती है, दृष्टि क्षीण होने से है। लाली नहीं आने पाती।

गर्मी से आँखें लाल हुई हैं तो गुलाब जल की बूंदें से भी लाभ मिलता है।

(घ) बच्चे की आँख आयी हुई है, लाल है (दूध बच्चा) तो माता अपना दूध बच्चे की आंख में डाले मिलता है। बड़ा बच्चा हो तो बकरी का दूध आँखों में डा से भी राहत और ताजगी मिलती है। आँखें निरोग रहती

नजला-जुकाम

नाक की बीमारियां, लक्षण एवं इलाज

एकोनाइट :—यकायक ठन्डी सूखी हवा लगने से ना बन्द होना, जुकाम और ज्वर।

आर्सेनिक :—पतला पानी, जलन करने वाला पानी, जुकाम के साथ पानी का बहना। कभी नाक बन्द, कभी खुली। जुकाम के साथ छींकों का आना, अस्थिरता, आँख से कड़वा पानी निकलना।

डलका मारा :—ठण्डी तर हवा से जुकाम, वर्षा ऋतु में जुकाम या बिना स्राव का जुकाम।

मर्क सोल :—नाक से स्राव की अधिकता, सर दर्द, बुखार, छींकों का बार-बार आना, गले में खारिश के साथ खांसी और आँखों में जलन।

सोरिया :—बसन्त ऋतु में जुकाम का होना। मासिक ऋतु में जुकाम, गले से शुरू होने वाले जुकाम से नाक को तकलीफ पहुँचना।

सारकोपोडियम :-जुकाम होने पर नाक बन्द रहती है। बूँद-बूँद पानी टपकता है। नाक का पिछला छेद सूखा मालूम देता है। नाक बन्द होने के कारण बच्चा नींद में चौंक पड़ता है।

नक्स वोमिका :—नाक से सर्दी का स्राव, बारी-बारी से दाहिनी व बांयी नाक खुलती और बन्द होती रहती है। कब्ज के कारण से जुकाम और पुराना जुकाम इससे आराम होता है।

फेरम फास :—जुकाम के शुरु में जबकि ज्वर के साथ हो; नाक से पानी का स्राव, या रक्त मिला स्राव अथवा केवल रक्त स्राव (नकसीर) में लाभदायक है।

कलकेरिया फास :—गाढा श्लेष्मा पानी के रंग जैसा जुकाम में या वैसे ही नाक से बहने वाले स्राव में अथवा बच्चों में जब ऐसा नाक बहता हो तो इसके सेवन से लाभ प्राप्त होता है। बार-बार होने वाला जुकाम, पुराना (जीर्ण) जुकाम। काली म्यूर के साथ भी कभी-कभी देने से उचित लाभ दिखता है।

नेट्रम म्यूर—पानी की तरह का बहता जुकाम। सूंघने की शक्ति का कम हो जाना। जुकाम के कारण सर दर्द और कमर दर्द।

कान के रोग और इलाज

एकोनाइट—दर्द, दर्द के कारण तड़पना, बेचैनी और ज्वर। ठण्डी हवा लगने से कान में दर्द, कान में सूजन की पहली अवस्था।

बैलेडोना—अति उग्र दर्द, सूजन, फुन्सी की पहली अवस्था। दर्द एकदम आता है और एकदम चला जाता है।

कैमोमिला—बच्चा रात्रिकाल में कान दर्द की वजह से बेचैन और रोए। एक-एक घण्टे के अन्तर से या इससे कम

अन्दर से कभी-कभी करायें देने से बच्चा की आ
जमाने पर दर्द नहीं रहता।

मन्न—कान के दर्द में राग की वृद्धि हो जाती है
के बाहर या अन्दर मुख लगाना प्रारंभ हुन्द गुस्त।
दर्द-ख का होना या कान में सुजनी।

एप हालत—बाये कान में तेज दर्द, मुवा लाल
तक ठन्डी हवा से रोग उत्पत्ति या राग वृद्धि।

केरम फास—बार-बार हिलाने से दर्द से आराम
है।

बहेलिया मन्न-कान में मैला या पीवातन गिर
बहना, चिरकाल से बहता मवाद को इलाज कराने से भी
न हुआ हो। इस दवा को काफी समय तक सेवन कराने से
लाभ होता है।

काली सल्फ-हरा या पीली आभा लिये मवाद-मवा
बहना, गाढ़ा पीला या नारंगी रंग का मवाद। रक्त मिल
मवाद। सूजन के कारण बहरापन। नस्या के समय अक्सर
बढ़ जाया करते हैं।

साईलीशिया—पतला मवाद, सफेद या मैला मवाद,
मवाद का स्राव (नासूर) के लिये प्रसिद्ध औषधि है।

दांत दर्द और इलाज

बैप्टीशिया—मसूड़ों से रक्त निकलता है, रक्त का रंग
काला है। मसूड़ों की रंगत काली आभा वाली, पारा या पारा
मिश्री दवाइयों के खाने के फलस्वरूप मसूड़ों में जख्म, मसूड़ों
या पाकाशय की खराबी से सांस में गन्दी बू और जो
उसमें भी दुर्गन्ध होती हो।

—दांतों में तेज दर्द, असहनीय दर्द, कीड़ा लगे

दांत में दर्द, दर्द रात को बढ़ जाता है, दर्द के कारण क्रोधान्वित हो जाता हो। गर्म पानी आदि से दर्द बढ़ता है।

दर्द के समय खोखले दांत के गड्ढे में स्पिरिट कैम्फर रूई के फाये से भरने से भी तुरन्त लाभ होता है।

मर्क सोल—मसूड़े कमजोर तथा फूले हुए मसूड़े पर फोड़े और उससे मवाद आता हो, दांत की जड़ में फोड़ा। इस फोड़े के कारण सूजन जो बाहर दिखाई न दे।

सीपिया—गर्भावस्था में दांत दर्द, दर्द कानों तक जाता है, कभी-कभी इतना दर्द बढ़ जाता है कि बाजू और अंगुलियाँ तक प्रभावित हो जाती हैं।

कल्केरिया फ्लोर—दांतों की ऊपर वाली हड्डी (एनैमल) कमजोर या घिस जाने के कारण अथवा मसूड़ों के क्षय के कारण दांत का ढका हिस्सा नंगा हो जाने के फलस्वरूप ठण्डी या गर्म वस्तु या हवा लगने से दर्द का बढ़ जाने की अवस्था में।

मैग्नेशिया फास—ऐसा दांत का दर्द जो गर्म प्रयोग से घटे और ठण्ड से बढ़ जाये। गर्म पानी में घोलकर, पिलायें या गर्म जल से प्रयोग करें। पानी जितना ही गर्म होता है, लाभ उतना ही शीघ्रता से होता है।

कल्केरिया फास—दांतों में जल्दी-जल्दी कीड़ा लगता या गिरना। बच्चों के दांतों की रक्षा करने के लिए उत्तम औषधि है।

आर्निका—दांत उखड़वाने के पश्चात दर्द, रक्त प्रवाह की अधिकता के कारण प्रयोग करने से लाभ होता है।

ब्रायोनिया—ठण्डे पानी से दांत दर्द में कमी होती हो, इस लक्षण में ब्रायोनिया का प्रयोग हितकर है।

बच्चों के दांत के इलाज—

कल्केरिया कार्ब—दांत निकलते समय पतले दस्त, ढीले

खट्टे-कुछ सफेद या भूरे रंग के खट्टी बू वाले दस्त, म
बाहर दाँत निकलने में देर हो रही हो, या समय से पहले
निकल रहे हों। कभी-कभी मटमैले पीले रंग के हो जाने

कैमोमिला—बच्चा रोता ही रहता है। जिद्दी और
हो जाता हो। बहलाने पर भी री-री करता रहता है। गो
चढ़कर घूमना चाहता है। दस्त हरे-पीले, पेट में दर्द और
वायु से भरा मालूम देता हो—समझना चाहिए कि
निकलने में कठिनाई हो रही है।

इग्नेशिया—नींद में अचानक चौंक उठे और डरने
बना रहे। दौरा पड़ने की सी हालत हो जो दाँत का न
करें—ऐसी हालत में भी यदि बच्चे के दाँत निकलने की
है तो समझना चाहिए कि दाँत निकलने से होने वाला कष्टकार
रोग है—एक दो खुराक दवा लाभ कर रहती है।

बैलेडोना—यदि कैमोमिला और इग्नेशिया के लक्षण
और दोनों ही विफल हो रहे हों तो यह दवा लाभ करती है।
इसमें समझना उचित है कि दाँत निकलने से ही होने वाला
रोग है या नहीं।

सल्फर—दस्तों के कारण मल द्वार का रंग लाल, दस्तों
में खट्टी गंध, जीभ तथा मुँह के अन्दर सुर्खी, शरीर गर्म।
दाँत निकलने की उम्र में ये लक्षण हों तो दवा लाभप्रद है।

फेरम फास—दाँत निकलने के समय बार-बार दस्त और
ज्वर बना रहे। छाती में तकलीफ और साँस कष्ट। अथवा
बच्चे को सूखी खाँसी भी रहती हो।

कलकेरिया फास—बच्चों के दाँत निकलने के कुछ समय
पहले या दाँत निकलने के लक्षण देखने पर इस औषधि का
... चाहिये। बच्चा कमजोर है, पाचन शक्ति ठीक न
... दस्त की अधिकता को कम करने में यह

वा उत्तम है।

मैग्नेशिया फास—दाँत निकलते समय पेट दर्द और दस्त
ांग सिकोड़कर पेट के साथ लगाये, दर्द के कारण बच्चा
चिल्लाता रहे।

मुख के रोग और इलाज

हीपर सल्फ—मुंह में छाले, जीभ लाल, मैली, दर्द और
लन बहता हो। छालों या घाव में मवाद। पारा द्वारा मुंह
ग होने पर—इसके प्रयोग से मुंह रोग दूर हो जाता है।

मर्क सोल—मुंह में छाले, घाव, सारे मुंह में घाव जो
तड़ियों तक प्रभाव डाले हों।

आर्सेनिक—ऐसे छाले जो सड़ने लगे हों, मुंह में गन्दी बू
छले और जलन मालूम होती हो।

सल्फर—मुंह पकने वाली अवस्था अर्थात् सारे मुंह के
र गर्मी मालूम हो, मुंह के अन्दर सुर्खी हो, दूसरी दवाओं
रा लाभ न होने पर बीच-बीच में एक मात्रा देने से लाभ
है या इसके बाद कल्केरिया कार्ब से लाभ होता है।

फेरम फास—जीभ, गाल और होंठ सूजे और सुर्ख तथा
मुंह के अन्दर सुर्ख रंग और छाले, छालों में दर्द, धीमा
वर।

काली म्यूर—छाले, रंग सफेद, जीभ लाल या पतली
मैल, मैल से ढकी हुई और दर्द। यदि ज्वर भी हो तो
फास के साथ बारी-बारी से प्रयोग होता है।

कंठमाला (गल ग्रन्थि)

कल्केरिया कार्ब—कण्ठ माला या जोड़ों में गाँठें, पेट के
ग्रन्थियाँ। बच्चे के सर पर छोई हालत में पसीना। पेट

[illegible] ।

[illegible] के दर्शन [illegible] ।

[illegible] के [illegible] होता है ।

[illegible] के लिए [illegible] दोनों के लिए [illegible] है ।

[illegible] — [illegible] आदि [illegible] के साथ होता है ।

गला प्रदाह या गले के रोग

एकोनाइट— गले में सूजन के कारण दर्द और प्रदाह के लिए लाभदायक है । टान्सिल और बच्चों की तर श्वासों के प्रदाह को मिटाने के लिए समर्थ है ।

बैप्टीशिया—भोजन के पदार्थ निगलने में कठिनाई होना तथा शारीरिक निःसरण होने वाले मार्गों में वायु ।

बैलेडोना—गले प्रदाह, यदि एकोनाइट लाभ न पहुंचा सके तो इसके प्रयोग से होता है । सर की ओर रक्त संचय ।

इग्नेशिया—टान्सिल प्रदाह, दर्द कान तक जाता है, कोई चीजें निगलने से दर्द में कमी होने का अनुभव होता है । गले में एक गोला सा फंसा रहने की तरह मालूम होता है ।

लैकेसिस—गले में ऐसा मालूम होता है जैसे गला घुटा हुआ है । गले के बाईं ओर कष्ट, गले का छू जाना सहन न हो सके ।

फाईटोलैक्का—टान्सिल प्रदाह का रंग लाल नीलापन लिये होता है और निगलने के समय दर्द कानों तक जाता है। गले में गर्मी की तरह का अनुभव, स्वर भंग (गला बैठ जाने) में लाभप्रद।

वमन या उल्टी कै के इलाज

आर्निका—चोट लगने से, सर में चोट के कारण वमन। उछल-कूद के बाद वमन की प्रवृत्ति को रोकने में अत्युत्तम है।

आर्सेनिक—खाने या पीने के तुरन्त पश्चात् वमन होना, पेट में पत्थर की तरह दबाव और कमजोरी का अनुभव।

कैमोमिला—नाभि अथवा इसके ऊपरी भाग में दर्द, कै, हरी और खट्टी, बच्चों की वमन में ऐसे लक्षण होने पर विशेष उपयोगी।

इपिकाक—मिचली के साथ कै की प्रवृत्ति, रक्त वमन, खाया हुआ पदार्थ वमन होना है। वमन में श्लेष्मा, पाकाशय में कतरने की तरह दर्द। मिचली की अधिकता।

क्लेरिया कार्ब—बच्चों का दूध पीते ही कै होना। वमन किये हुए पदार्थ में खट्टी गन्ध। दांत निकालते बच्चे को फटे दूध की वमन।

नक्स वोमिका—अजीर्णता के कारण वमन। शराबियों की वमन। मिचली, अधिक औषधि के कुप्रभाव से वमन। रोगी की इच्छा पर वमन न होता हो।

फाइटोलैक्का—पित्त वमन तथा रक्त वमन में तेज दर्द। आमाशय की थैली कोष में दर्द। डकारों का बार-बार आना।

पल्सेटिला—औरतों के मासिक ऋतु की रुकावट से उत्पन्न वमन। गर्भावस्था में वमन। कै में बलगम की अधिकता। स्वाद कड़ुवा या खट्टा।

कार्बोवेज [illegible]—ज्यादा [illegible], कुल्फी का बड़ा खाना पीने के बाद तुरन्त जल्दी होना। [illegible] जो बार-बार हुआ करती है।

नैट्रम म्यूर—जिस व्यक्ति के लिए प्रसिद्ध है। [illegible] स्वाद तथा वमन करती। प्रातःकालीन वमन। [illegible] समय।

पुरुषेन्द्रिय रोग-स्वप्न दोष का इलाज

कैलेडियम—हस्त मैथुन का दुष्परिणाम, इन्द्रिय सरसराहट खुजली के [illegible] से उत्पन्न रोग। मैथुन का स्वप्न और स्वप्न में वीर्यपात।

चायना—उत्तेजना के साथ वीर्यपात। अधिक वीर्य के कारण आई कमजोरी के लिये श्रेष्ठ औषधि।

कल्केरिया कार्ब—वीर्य क्षय के कारण सर और टाँगें कमजोर। उत्तेजना के साथ रात्रि में वीर्यपात। टाँगें [illegible] जायें।

फास्फोरिक एसिड—बिना उत्तेजना के निद्रित अवस्था में वीर्य क्षय। लिंगेन्द्रिय में ठण्डापन रहता है।

नक्स वोमिका—पाचन क्रिया की गड़बड़ी, कब्ज और उत्तेजक खानपान के पदार्थों के सेवन से स्वप्न दोष।

सल्फर—निद्रित अवस्था में बार-बार वीर्य क्षय (स्वप्न दोष) होता है। जिसके पश्चात् बहुत कमजोरी सी महसूस होती है। वीर्य पतला पानी की तरह। सल्फर के कुछ समय प्रयोग के पश्चात् लाइको की कुछ मात्रा सफल सिद्ध होती है।

नेट्रम फास :—स्वप्न देखे बिना नींद में वीर्यपात। गुदा सरसराहट या कृमि होने पर अधिक लाभप्रद औषधि।

नोट—स्वप्नदोष रोगी सोने से तीन-चार घण्टा पूर्व

सुपाच्य भोजन करे। रात को दूध और कामेच्छा की ओर ले जाने वाला भोजन न करें।

नपुंसकता : नामर्दी का लक्षण और इलाज

आर्निका :—नवीन व पुरानी चोट के कारण आई हुई नामर्दी।

कल्केरिया कार्ब—क्षीण उत्तेजना के साथ कामोत्तेजक स्राव रमण के पश्चात् हाथों पर ठण्डा पसीना उसके बाद अति कमजोरी विशेषकर युवकों में।

लाइकोपोडियम :—अधिक विषय भोगों के पश्चात् पुरुषत्व में कमजोरी, जननेन्द्रिय का छोटा तथा पतला हो जाना और उत्तेजना रहित। रोग पुराना हो जाने पर लाभ की उम्मीद की जा सकती है। इस रोग में यह औषधि प्रसिद्ध है।

सल्फर :—जननेन्द्रिय शिथिल तथा आकार में मोटापन व भारी, उसमें ठण्डा रहने का भी और शक्तिहीनता का लक्षण रहता है। वीर्य पतला पानी की तरह और शीघ्र पतन तथा बार-बार या स्वतः ही चूना रहने की गति म ही रहता है। इस दवा को कुछ मात्रायें प्रयोग करके फल की प्रतीक्षा करनी चाहिये।

नेट्रम फास :—वीर्य में गाढ़ेपन की कमी। अम्ल पित्त के कारण नपुंसकता। पेट में कृमी।

विशेष :—नपुंसकता या नामर्दी को लोग भारी अथवा भयंकर रोग मानकर चलते हैं, जिसके कारण मन में हीन भावना प्रबल हो जाती है और इसका रोगी अन्दर ही अन्दर सहमा हुआ व डरा-डरा सा रहता है। नीम हकीम और विज्ञापन के जरिये इस मर्ज के रोगियों को अपनी ओर आकृष्ट करने

ऋतु विकार —इनमें होने वाले ऋतु विकार अधिकतर निम्नलिखित प्रकार के उत्पन्न होते हैं

डिसमेनोरिया —कष्टदायक ऋतु स्राव होता है और पीड़ा रहती है। ऋतु आने से पहले दर्द होता है। पाँव में भी पीड़ा रहती है, कमर में [illegible]।

मेनोरेजिया — ठीक समय पर ऋतु होता है परन्तु रज स्राव थोड़ा ज्यादा होता है और दर्द बना रहता है। जब स्राव अधिक होता है तो दर्द में कमी भी हो जाती है। ऋतु स्राव का रंग कालिमा लिये होता है।

[illegible] —ऋतु स्राव समय से पहले और अधिक दिन तक रहता है। मासिक रज कभी ठीक समय पर नहीं होता। हमेशा अनियमित रहता है अर्थात् कभी जल्दी और देर से होता है।

ओलिगोमेनोरिया —देर से ऋतु होता है और अल्प मात्रा व कम दिन स्थायी रहता है। ऋतु पतला-पतला सा होता है।

का स्राव। पित्त या उपदंश प्रकृति वालों को अधिक

करता है।

पल्सेटिला—कोमल स्वभाव वाली औरतों का

ऋतु के पहले या बाद। ऋतु थोड़ा और देर से होता

सफेद दूध की तरह या पीलापन लिये सफेद प्रदर स्राव।

सीपिया—योनि की राह के बाहर की ओर दबाव।

और जरायु में दर्द। मांस पेशियां कमजोर, श्लेष्मा जैसा

पीला और बदबूदार प्रदर स्राव।

सल्फर—गर्म और जलनदार पानी का बहना।

अन्दर जख्म कर देने वाला प्रदर। रोगिनी का सर

के तलुवे आग की तरह गर्म रहते हैं। ओढ़ने को निका

शरीर से अलग रखने की इच्छा है।

कल्केरिया फास—अण्डे की सफेदी जैसा प्रदर

दुर्बल शरीर। कमजोरी के कारण जल्दी थक जाना

दर्द, यह कमजोरी आदि प्रदर स्राव के कारण ही उप

जाती है। जवान औरतों को लाभप्रद है।

नेट्रम फास—प्रदर स्राव पीला या शहद की तरह

दोष, पेट में कृमि।

स्त्री रोग :

मूर्छा अथवा हिस्टीरिया

स्त्रियों, युवतियों में हिस्टीरिया या मूर्छा का

अक्सर देखने में आता है, जिसका उचित इलाज न

समझ या कम पढ़े-लिखे घरानों में झाड़-फूंक या

के चक्कर में पड़ते हैं। इसे ऊपरी हवा का असर

किसी न किसी रूप में मानसिक विकार से सम्बन्ध
लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियां सेवनीय हैं-

बैलेडोना—हठात् दौरा पड़ना। चेहरा फूला,
चेहरा लाल। नसों का फड़कना। नाड़ी उछलती हुई
अन्ट-शन्ट बोलना, आँखों के आगे चिंगारियां सी उड़ती
देती है।

चायना—शारीरिक दुर्बलता। वीर्य-मल-मूत्र
आदि शरीर के तरल पदार्थों के क्षय हो जाने से आयी
के कारण मूर्छा में लाभकारी है।

इग्नेशिया—हमेशा उदास भाव से रहना और
कारण से मूर्छा। पकाशय से गोला सा उठता है, जो
आकर रुक जाता है, उन औरतों के लिये अधिक लाभदा
जो अपने मन के भाव छुपाये रखती हैं। हिस्टीरिया
अक्सर इस औषधि के लक्षण मिला करते हैं।

पुल्सेटिला—स्वभाव में कोमलता तथा रोते रहने
आदत। यहां तक कि अपना दुःख प्रकट करते समय
रहना। कभी हिस्टीरिया के आक्रमण के समय हंसते-हंसते
लग जाना। अन्य अवस्थाओं में चुप रहने अर्थात् मौन
रहना।

मासिक ऋतु थोड़ा विलम्ब से होने वाली स्त्रियों के हि
रिया के लिए प्रधान औषधि है।

सीपिया—हिस्टीरिया की वह रोगिणी जो गर्भाशय वि
ग्रस्त हो, श्वेत प्रदर बाहुल्य रहता हो।

में रक्त पतन के कारण या र
के कारण रोगी को मूर्छा हुआ करे या पक्षा
में तो इसका प्रयोग जल्दी-जल्दी करा

पन—हिस्टीरिया रोग के पर भाग विशेष नहीं

मस पाते तो इस औषधि का प्रयोग सर्वप्रथम आरम्भ किया जाता है—क्योंकि यह स्नायु विकार सम्बन्धी रोगों की प्रधान दवा समझी जाती है।

नेट्रम म्यूर—हिस्टीरिया ग्रस्त रोगिनी को मासिक ऋतु देर से होता हो और सुस्त रहती हो। जननेन्द्रियों में ऐसा प्रतीत मालूम होता कि कुछ बाहर निकलेगा। इसे रोकने के लिये बैठ जाना पड़ता है। मानसिक लक्षणों से उसे सान्त्वना देने से वह और भी शोकान्वित हो जाती है। हाथ से चीजें गिर जाया करती हैं।

● नोट—हिस्टीरिया से मूर्छित रोगी बोल नहीं सकता और ज्ञानहीन भी नहीं होता।

मृगी से मूर्छित व्यक्ति ज्ञानहीन, मुंह से झाग, दांतों से जीभ कट जाती है।

प्रसव काल

प्रसव काल स्त्री के लिए बहुत महत्व का समय होता है। वह जिस बच्चे को जन्म देती है, उसका स्वास्थ्य आकार प्रसव काल की सावधानी पर बहुत कुछ निर्भर करता है। प्रसूता अगर प्रसवकाल में सावधानी बरत कर रोग-रहित रहे तो पैदा होने वाला बच्चा स्वस्थ रहेगा बल्कि जच्चा भी स्वस्थ रहेगी। लक्षण औषधियां निम्नलिखित हैं—

एकोनाइट—प्रसव वेदना कष्टकर और उग्रता पूर्ण हो, कष्ट के कारण, मृत्यु भय, बेचैनी व चिंता ऐसी कि न जाने क्या हो जायेगा।

बैलेडोना—दर्द यकायक आते हैं और चले जाते हैं, जरायु से बाहर की ओर कुछ निकल जाने की कल्पना मात्र और सम्भावना।

समानता लाकर शीघ्र काम कर देता है।

मैग्नेशिया फास:—प्रसव के दर्दों के साथ यदि ऐंठन हो तो
का प्रयोग लाभप्रद है।

प्रसव के बाद के रोग व इलाज

प्रसव के बाद खान-पान की असावधानी अथवा रोगग्रस्त
र होने के कारण अनेक बीमारियां हो जाती हैं। लक्षणा-
र उन बीमारियों में निम्नलिखित दवाएं लाभप्रद हैं।

एकोनाइट:—प्रसव के पश्चात् रक्त अल्प मात्रा में या
बन्द हो गया हो। ज्वर की उग्रता हो, डर या भय लगे
इसका इस्तेमाल फायदा पहुंचाता है।

आर्निका:—प्रसवोपरान्त दर्द, पेट दुखता हो मानो चोट
हो। प्रसूत ज्वर हो जाने का भय हो। पेट के भीतर दर्द,
वाला होने पर यह दवा निश्चित रूप से लाभकर है।

बायना:—अधिक रक्त स्राव होना और कमजोरी बढ़ती
दे तो इसका प्रयोग कष्टों को दूर करता है। पेट में वायु
ना, दस्त आने लगे तो इसका प्रयोग हितकर है।

कैमोमिला:—पेट में दर्द और वायु की अधिकता।

कोलोसिन्थ:—पेट में दर्द, पेट को दबाने से रोगिणी टांगों
टने को) अपने पेट के साथ लगाये तो यह दवा लाभप्रद
। कैमोमिला विफल होने पर इससे लाभ की पूर्ण आशा
है।

लाइकोपोडियम:—प्रसव के बाद बाल झड़ने लगें। सर में
पेट में वायु पर कारगर दवा।

कैरिया फास:—कमजोरी, रक्तस्राव की अधिकता।
। स्तनों का दूध पतला व नमकीन।

शिया फास:—प्रसव के बाद के दर्दों को मिटाने के

जानी ऊपर से प्रकार गड़िया का बाज के
फिरना, उठना बैठना भी जाता रहता है
होकर रह जाता है होमियोपैथिक की
ध्यान में रखें और लक्षणानुसार सेवन कर
सहारे की जरूरत नहीं।

ब्रायोनिया—मांस पेशियों में दर्द — म
दर्द। छाती की मांस पेशियों में वायु। मर्द
हिलने या खड़े होने पर और खांसने से दर्दों मे
करवट में अक्रान्त स्थान को दबाने से अथवा
से दर्दों में कमी होती है। पक्ष होने पर विशेष

कल्केरिया कार्ब—पानी में भीगने से मास
दर्द। आधी रात और सायं काल दर्द की वृद्धि
गर्मी से दर्द का घटना।

लाइकोपोडियम—दाहिनी तरफ का गृध्रसी (
ऊपरी भाग के जोड़ों मे दर्द। एड़ी मे दर्द। टांगों
का सुन्न होना। दर्द वाली करवट लेटने से वृद्धि।
दर्द—मूत्र त्याग के बाद घट जाता है।

मर्कसोल—रात को बिस्तर की गर्मी से गोली
रह दर्द। बरसात और ठण्ड से रोग की उत्पत्ति। पसीन
र भी आराम नहीं होता।

फाइटोलैका—लाल रंग की सूजन के साथ जोड़ो का
अपनी जगह बदला करते है। लम्बी हड्डी में दर्द। दाहि
े कन्धे मे दर्द इससे पित्त प्रधान रोगिय
है।

सूजन के दर्द। दर्द एक स्थान पर
करते है। रोगी खुली हवा में

बढ़ते हैं। दर्द संध्या समय बढ़ते हैं।

रसटाक्स—ठण्ड से दर्द पैदा होते हैं। कन्धे और बाजू में दर्द। नहाने धोने से दर्द बढ़ता है। सारे शरीर में दर्द। दबाते समय जबड़े कटकट करते हैं। वात व्याधि के दर्दों में इस औषधि को नहीं भूलना चाहिये।

कल्केरिया फ्लोर—कमर दर्द (लम्बेगो) के लिये उत्तम दवा है। कब्ज, बवासीर तथा सुजाक या अन्य शकी विकारों में उत्पन्न कमर दर्द बढ़े। शरीर के अन्य भागों के दर्द जो चलने फिरने के आरम्भ में बढ़े और हरकत जारी रखने के बाद दर्दों की कमी इस दवाई की विशेषता का लक्षण है।

कल्केरिया फास—मांसपेशियों में दर्द, हड्डियों और जोड़ों में दर्द। ऋतु के परिवर्तन से दर्दों में वृद्धि। दुबले-पतले रोगी इससे अधिक लाभ उठा जाते हैं।

मैग्नेशिया फास—तीव्रता लिए दर्द बढ़ रहा हो। दर्द बरदाश्त से बाहर हो। ठण्ड बढ़ने वाले दर्दों में गर्म पानी में घोलकर जल्दी-जल्दी दोहराने से लाभदायक सिद्ध होता है।

पित्ती या छपाक

घरेलू दवाइयों में पित्ती की दवा रखने और रोग के लक्षण समझने की आवश्यक हैं। बरसात के दिनों में अथवा मौसम बदलने पर पित्ती का रोग हो जाया करता है। इसके लक्षण और औषधियां इस प्रकार हैं।

डल्कामारा—वर्षा में भीगने या बरसाती हवा में पित्ती उछलेरं। पित्ती के साथ ही दस्त भी कभी-कभी लग जाते हैं। ऐसे लक्षण में लाभकारी।

नक्स वोमिका—मन्दाग्नि या तेज, गर्म मसाले अथवा शराब आदि के इस्तेमाल के पश्चात् पित्ती उछल जाये या फिर

पित्त उत्पन्न हो जानेकर पित्ती उछल पड़े।

अर्टीकेरिया — गरिष्ठ भोजन के बाद या पित्त रोग से अन्न रस के कारण चकत्तों के रूप में पड़े। इस दवा के प्रयोग से दाज और जलन आदि में आते ही कम हो जाती है। रोग पूरी तरह से ठीक जाता है।

रस टाक्स—तर ठण्डी हवा से पानी में स्नान के बाद पित्ती का अचानक उभरना।

हस्टर—बार-बार पित्ती का आक्रमण। मोटे-मोटे के रूप में। उनमें जलन और हथेलियों में या चर्म के नीचे भी सदा बनी रहे। (पित्ती का पुराना रूप) फोड़े और खाज आदि के दब जाने का दुष्परिणाम।

फेरम फास—छोटे या बड़े चकत्ते, लाल रंग के। के साथ यदि हो तो लाभदायक औषधि है।

नेट्रम म्यूर—चकत्ते निकलते हैं, उनमें जोरदार खुज दाहकारक होती है। रात्रि में और बिस्तर में बढ़ जाती है।

स्वचा रोग : चर्म रोग कील मुहांसे

दाद, खाज, खुजली, फोड़े-फुंसियां, युवा अवस्था में कील मुहांसे आदि रोग घर में बच्चों-बड़ों को होते ही रहते हैं। इनके इलाज देखें—

आर्सेनिक—त्वचा पर खुजली और जलन। चर्म में सूखा-पन (खुश्क) खुजलाने और ठण्डे प्रयोग से खुजली बढ़ जाती है।

(रस भरी फुंसियां खुजली के साथ करती है। गर्म करते समय जलन और लगे।

नाम्मी म्यूरः—मुख मण्डल पर फुन्सियां, युवा अवस्था में चेहरे पर कील फुन्सियां। मुहांसे निकलना। त्वचा पर मुर्दे खुरण्ड, एक्जिमा, चेहरा तथा शरीर पर झाइयां।

काली सल्फः—खाज वाली फुन्सियां। मवाद पीला व गाढ़ा। गोल आकार के दाद (रिंग वर्म) सर में खाज, रूसी व खुजली।

नेट्रम म्यूरः—तर दाने। गरदन और कानों के पीछे खुजली। तर दाद। बालों की जड़ में स्राव वाली फुन्सियां। स्राव जहाँ लगे वहाँ फुन्सी बना दे। छूत वाली फुन्सियां।

मैग्नीशिया फासः—चेहरे पर दाद, ठोडी पर फुन्सियाँ। इनका स्राव जहाँ लगे वहाँ के चर्म में जख्म या फुन्सी बना दे। दाढ़ी मुण्डाने के बाद चर्म रोग के हो जाने से लाभदायक।

सिलिकाः—चर्म रोग में पतला मवाद सफेद रंग लिये बहा करता है। पुराने जख्म। नासूर। चेचक का टीका लगाने के बाद खराबियाँ। अंगुलियों के पपोटे शुष्क और उनमें दरारें। नाखून टेढ़े-मेढ़े हो जायें तो इसके प्रयोग से सही परिस्थिति में आ जाते हैं।

चोट : हड्डी की टूट-फूट

घरेलू इलाज की दवाइयों में चोट और हड्डी की टूट-फूट की दवाइयों का बड़ा महत्व होता है। घर में बच्चे खेल कूद में चोट खा ही जाते हैं। उनके फौरन उपचार और दवा की जरूरत होती है।

[illegible]निकाः—मांस पेशी की चोट - इस चोट में अधिक [illegible] है जिसे अन्दरूनी चोट कहा जाता है। सर पर चोट [illegible] पर, दर्द रोकने अथवा मवाद पड़ने से [illegible]

का ही दर्द मिटाने में सफलता मिलती है। दर्द के कारण बेचैनी को मिटा देती है।

मेट:—चोट खुली है—खून बह रहा है अथवा घुरच लगा है तो साफ रूई को गीला कर तर कपड़ा बाँध कर खून बहना रोक देना चाहिए। उसके बाद औषधि खिलाने से दर्द बन्द होता है व घाव बढ़ने नहीं पाता। सड़ने गलने नहीं पाता। जल्दी भर आता है। इसी तरह हड्डी टूटने पर, हड्डी बिठाकर पट्टी कस देनी चाहिए। दवाए दर्द घोलकर जाड़ों को थरनी बन्द मिटाने में कारगर होती है।

निम्नलिखित औषधियाँ देखें —

आर्नेनिका:—छाती और पेट पर चोट लगे तो पहले इसी र ध्यान देना उचित है अर्थात आर्निका विफल हो जाय तो यौनिका सफल सिद्ध होता है। उछलने या कूदने के कारण ड्डियों पर चोट।

कल्केरिया कार्ब:—रीढ़ पर या पीठ में चोट लगे तो उस समय इसका प्रयोग लाभदायक है। पीठ की हड्डी का टेढ़ापन ठीक कर देना इसी का काम है।

रस टाक्स: गिर जाने के कारण नितम्ब में चोट। पुट्ठे भी आक्रान्त हों तो भी यह लाभप्रद है। जोड़ हिल जाने पर दर्द बैठा न हो तो यह दर्द को कम करके ... भी अपने स्थान पर बैठा देगा।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

बिच्छू के डंक का इलाज

बिच्छू काटने पर डंक [illegible] निकाल देने के बाद [illegible] दूर करने के लिये [illegible] के साथ [illegible] कर [illegible] नहीं [illegible] लिखी है [illegible] कर देना चाहिए और लगाने के लिये—

[illegible]—[illegible] के बाद [illegible] हो जाती है।

दूसरी विधि—इसके बाद पानी में नमक घोलकर डंक [illegible] स्थान के विपरीत कान में दो-चार बूंद टपकाने से शांति मिलती है।

सांप काटे का इलाज

सांप काटे तो [illegible] जगह से ऊपर के स्थान पर रस्सी या किसी अन्य ऐसी वस्तु से चार-तीन-चार अंगुली के फासले से कई जगह बांध दें ताकि विष [illegible] और जिससे रक्त का [illegible]

दात रीठे (काला बीज निकालकर फेंक दें) लेकर
पानी में पीस लें। पानी आधा गिलास से कम न हो।
कपड़े में छानकर सांप काटे व्यक्ति को पिला दें।

पुनः इसी तरह रीठे पीस छानकर दस-पन्द्रह मि
अन्तर से पिलाते जायें।

ऐसा करने से सांप काटे व्यक्ति को उल्टियां आनी
जायेंगी। उल्टी हो जाने के बाद भी रीठे का पानी
जाएं और वमन कराते जाएं--यदि एक दो बार पानी
से वमन न हो तो पानी पिलाना रोकें नहीं, रीठे
पिलाते जायें--दो-तीन बार पीने के बाद वमन शुरू
है, वमन द्वारा सांप का विष निकल जाता है। री
सुलभ वस्तु है।

इसी प्रकार तेल सरसों और शुद्ध घी पिलाने
कराकर विष दूर किया जा सकता है।

विष उतर जाने के बाद मक्खन खोर दें।

जिस व्यक्ति को सांप ने काटा है उसे किसी भी
सोने न दें। पानी के छींटे मार-मार कर उसे जागते
किये रहें।

कट जाना

चाकू, छुरी, कांच अथवा किसी शस्त्र आदि से शरीर के किसी भाग के कट जाने पर सर्वप्रथम उस स्थान का खून बन्द करना चाहिये।

ऐसे स्थान को तुरन्त ही कसकर दबा रखें फिर ठण्डे पानी में स्वच्छ कपड़े की पट्टी भिगोकर वहा बांध दें। बर्फ चढ़ाने से भी यही लाभ होता है। पानी की पट्टी को हमेशा तर रखें। इससे कटा हुआ स्थान जुड़ जायेगा।

यदि कटाव गहरा हो तो कैलेण्डुला मदर टिंचर 1 औंस को आठ गुने पानी में घोलकर, उसमें कपड़े की पट्टी को तर करके ज़ख्म पर रखें। इससे खून का बहना बन्द हो जायेगा। फिर ज़ख्म पर 1 औंस वैसीलिनि 40 बूंद कैलेण्डुला मदर टिंचर तथा बोरिक–एसिड मिलाकर मरहम बना लें और उसे कटे हुए घाव पर लगायें। घाव शीघ्र भर जायेगा।

आघात

चिरना, कुचलना, बिघना आदि को आघात कहते हैं। किसी भारी वस्तु के ऊपर से गिर जाने अथवा किसी कारणवश शरीर के किसी अंग के दब जाने को कुचलना कहते हैं।

इसके लिये सर्वप्रथम यदि रक्त बह रहा हो तो उसे रोकने के लिए ज़ख्म का मुंह ऊपर की ओर रखकर ठण्डे पानी अथवा बर्फ की पट्टी बांध दें।

यदि चोट के कारण ज़ख्म हो या मार आदि के कारण नील या काला दाग पड़ गया हो तो आर्निका मदर टिंचर के लोशन में पट्टी को तर करके बांधें। यह उपचार बिना धार वाले अस्त्र, लाठी डण्डा आदि के चोट पर विशेष लाभकारी है।

धारदार वस्तु—कांटा, छुरी, शीशा, आलपिन आदि के घुसने का घाव हो तो हाइपेरिकम 3 अधिक लाभदायक सिद्ध

[illegible]

[illegible]

सिर में चोट

सिर में चोट लगने पर भी आर्निका Q की पट्टी रखनी चाहिए। यदि चोट के कारण सिर फट गया हो या खोपड़ी की [illegible] 60 [illegible] [illegible] से लिपटाई हुई पट्टी बांधनी चाहिए। यदि सिर में चोट लगने के कारण [illegible] मस्तिष्क पर असर हो तो उसकी [illegible] आर्निका [illegible] देना चाहिए। [illegible] आर्निका, [illegible] आदि या [illegible] लक्षणानुसार देनी चाहिए।

मोच पड़ना

किसी चोट लगने, मरोड़ आदि के कारण यदि शरीर में कुछ नस आदि के कारण मोच हो गया हो तो उस स्थान पर आर्निका लोशन की पट्टी बांधना हितकर रहता है। यदि कुछ दिनों तक बराबर उसके प्रयोग से भी दर्द रह जाये तो [illegible] के लोशन की पट्टी बांधनी चाहिए।

मोच

ऊँचे-नीचे स्थान पर पैर पड़ जाने से पाँव में तथा [illegible]

सर न पाने के कारण गरदन में मोच आ जाती है। इसके
मालिश, ब्रिस्टाइटस अथवा हाइपेरिकम लोशन की प
बाँधनी चाहिये।

पानी में डूबना

पानी में डूबे व्यक्ति के पेट से पहले पानी निकालने
उसकी श्वास क्रिया को चालू करने का प्रयास करना चाहिए

पानी में डूबे व्यक्ति के पेट से पानी निकालने का
उपाय है कि उसे औंधे मुंह लिटाकर पेट के मध्य भाग
उसे अपनी दोनों हथेलियों के ऊपर इस प्रकार उठाया जाये
उसके सिर और पैर वाले भाग नीचे की ओर झूल जायें।
बार ऐसा करने पर उसके मुंह तथा नाक के रास्ते से पे
भरा हुआ पानी निकल जायगा। फिर कृत्रिम श्वास क्रिया
विधि से फेफड़ों की मालिश करके उसकी श्वास चालू क
चाहिए।

श्वास चलने से पहले ओपियम 30 का सेवन क
चाहिए।

बिजली गिरना

जिस व्यक्ति पर आकाश की बिजली गिरी हो उसे
गड्ढे में सूर्य की ओर मुंह करके बैठायें तथा गले तक का
मिट्टी से थोप दें। होश आने पर उसे गड्ढे से बाहर नि
लें। तथा शरीर को गरम कपड़े से ढक दें। श्वास न चलने
कृत्रिम श्वास क्रिया का प्रयोग करें। होश आ जाने पर
पहले नक्स वोमिया 6, 3 तथा उसके बाद फास्फोरस 30
लाभकारी है।

हड्डी उतर जाना

हड्डी का टूट जाना

पहले टूटी हुई हड्डी के जोड़ को ठीक से बैठायें। पीड़ित स्थान पर आर्निका मोन्टेना की पट्टी बांधें। कैल्केरिया फॉस 12, 30 दें।

डंक मारने का इलाज

पिछले पृष्ठों में बिच्छू, बर्र, मधुमक्खी आदि के डंक के बारे में इलाज की कुछ विधियों की जानकारी है। उसके अलावा भी भौंरा या चूहे के काटने या जहरीले कीटाणु के काटने का इलाज भी यही है कि डंक पहले चिमटी आदि द्वारा निकाल दें। फिर पोटाश परमैंगनेट को पानी में घोलकर डंक वाले स्थान पर रगड़ें।

मधुमक्खी के काटने पर कार्बोलिक एसिड 2X, 6 चूहे के काटने पर लैडम 6 का सेवन करायें।

कुत्ता या सियार का काटना

पागल कुत्ता या सियार द्वारा काटे हुए स्थान को गर्म लोहे अथवा कास्टिकम से जलाकर जहर खत्म करने का प्रयत्न करें, फिर घाव भरने के लिए बेलाडोना 6 का सेवन करायें।

उपरोक्त इलाज के अलावा सरकारी अस्पताल जाकर कुत्ता या सियार काटे का इन्जेक्शन लगवा लेना ज्यादा सन्तोषजनक बात रहती है।

बालकों के रोग

बच्चे घर की नियामत होते हैं। बच्चों से ही घर-परिवार की रौनक होती है। घर में बच्चा बीमार हो जाए तो छोटे-बड़े सभी परेशान हो उठते हैं। घरेलू इलाज के तहत होमियोपैथिक विधि से छोटे बच्चों को विभिन्न रोगों के लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियां देना लाभप्रद रहता है।

ी माता के दूध के साथ खिलाये।

कामला रोग :—कैमोमिला 6, मर्क 6, चायना 3, डोनियम 6।

छाती में घरघराहट :—इपिकाक 3, मर्क सील 6।

शरीर का नीला पड़ जाना :—डिजिटेलिस 3।

आंत उतर जाना :—आर्निका 3, सल्फ्यूरिक एसिड।

सिर का बड़ा होना :—आर्निका 3।

विसर्प :—बेलाडोना 2X, रसटाक्स 30।

खसरा :—मर्क्युरियस 6, रसवेन 3।

चमड़ी उधड़ना :—कैमोमिला 6।

मुंह का घाव :—सल्फर 30, बोरेक्स 6।

फोड़ा :—कल्केरिया कार्ब 6, 30, सल्फर 30।

शरीर फटना :—आर्सेनिक 6, सल्फर 30।

टिटनेस :—एकोनाइट 3, बेलाडोना 6, 30।

लकवा :—एकोनाइट 3, बेलाडोना 6।

मिर्गी :—कल्केरिया कार्ब 30, सल्फर 30।

दूध पलटना :—नक्सवोमिका 6, कल्के. कार्ब 30।

मितली और वमन :—इपिकाक, 6, आर्निका 3X।

हिचकी :—नक्सवोमिका 30, इग्नेशिया 6, 30।

नाक का लाल होना :—ऐपिस 3X, कार्बोवेज 3।

नाक में घाव :—कल्केरिया कार्ब 30, आरममेट 30।

नाक पर मवादी फुन्सी :—पैट्रोलियम 3।

नाक से खून गिरना :—ब्रायोनिया 3, आर्निका 3।

जुकाम खांसी :—एकोनाइट 3X, ब्रायोनिया 6।

हूप खांसी :—इपिकाक 6, ड्रोसेरा 3X।

ब्रोंकाइटस :—लाइको 12, हिपर सल्फर 6।

श्वास चलना :—इपिकाक 3X, आर्सेनिक 6।

भूख न लगना :—पल्सेटिला 30, नक्सवोमिका 30।

कुष्ठ रोग (Leprosy)

यह एक भयंकर रोग माना जाता है। इस रोग के कारण एक प्रकार के कीटाणु ही हैं—

इसमें रोग संक्रांत स्थल शून्य हो जाता है। बाद में शारीरिक अंगों का फूलना, गलना, छोटा हो जाना आदि लक्षण प्रकट होते हैं इसमें लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियां दें—

हाइड्रोकोटाइल Q 6 :—मोटा चमड़ा, छाती, हथेली तथा तलवे में बेहद खुजली के साथ आराम होने वाले रोग में विशेष लाभकारी। मूल अर्क को 5 बूंद दिन में तीन-चार बार देनी चाहिये।

आर्स आयोड 3X :— गांठ के स्थान फूले हों, अंगुलियां गलकर गिरती हों तथा टेढ़ी पड़ गयी हों, कांटे चुभने जैसा दर्द हो।

बेलाडोना 3X :—नवीन ज्वर के साथ यदि चमड़ा लाल हो।

सीपिया 6 :—चमड़े पर खारीपता या पीले रंग के दाग चकत्ते दिखाई देने पर, स्त्रियों के लिये विशेष हितकर।

आर्स एल्ब 3X, 30 :—घाव, तेज दर्द या विस्फुटन हो। सफेद दाग में।

जहरबाद (Erysipelas)

किसी अंग छिल जाने, जख्म पड़ जाने से सड़ान पैदा ... साधारण औषधि से ठीक न हो उसे जहरबाद का ...

प्रारम्भिक लक्षणों में शरीर में सिरहन, हल्का ... का कांपना आदि विकार दिखाई देते हैं ... अंग सूजना, उनका चमकीला या लाल दिखाई देना ... छाले उत्पन्न होना आदि।

इनमें निम्नलिखित औषधियां लक्षणानुसार दें

कैन्थरिस :— छालों का पानी लगने के कारण शरीर की खाल उपड़ने लगे एवं पानी भरी फुंसियां हों।

रसटाक्स 6 :—शरीर पर लाल रंग के पानी भरे छाले; सम्पूर्ण शरीर में डंक मारने जैसा दर्द, जलन फुंसियों से पानी निकलना आदि।

हिपर सल्फर 6 :—मवाद उत्पन्न होने अथवा पकने के लिये, स्पर्श तथा ठण्ड सहन न होने पर।

बेलाडोना 1, 3 :—लाल रंग की फूली हुई फुंसियां, विकार ग्रस्त त्वचा के प्रदाह, तीव्र उत्ताप, सिर दर्द, प्रलाप फुंसियां फैल जाना, पेशाब में भारीपन आदि लक्षणों में लाभप्रद।

आर्सेनिक 3, 30 :—दर्द युक्त काले रंग के मवाद वाला, छाला, सुस्ती, तीव्र ज्वर, प्यास बेचैनी तथा सड़न के लक्षण में।

ग्रेफाइटिस 6 :—भ्रमणशील विसर्प, रोग के बार-बार आक्रमण तथा आयोडीन के अपव्यवहार से उत्पन्न उपसर्गों पर।

एकोनाइट 6 :—दाहक विसर्प फुंसियां निकलने से पहले असह्य जलन, रक्त स्राव तथा सड़न में।

इकीनेशिया Q 3X :—शरीर में तीव्र ताप, बेचैनी रक्त दोष के लक्षण तथा संघातिक विसर्प में।

मूत्र रोग

मूत्र शूल :—कैन्थरिस 2X, 6।

मूत्रमार्ग में प्रदाह :—आर्निका 3X, एकोनाइट 1X।

मूत्र सन्धि में प्रदाह :—एकोनाइट 3X, कैन्थरिस 3X।

मूत्र नली का संकोच :—एकोन 3X, नक्सवोमिका 3X।

खून का पेशाब आना :—आर्निका 3X, बेलाडोना 3।

मूत्र रुक जाना :—एकोनाइट 1X, 3।

मूत्राशय में प्रदाह :—बेल 3X, कैन्थरिस 3।

कुष्ठ रोग (Leprosy)

यह एक भयंकर रोग माना जाता है। इस रोग के ... एक प्रकार के कीटाणु ही हैं—

इसमें रोग ग्रस्त स्थान शून्य हो जाता है। बाद में ... रिक अंगों का फूलना, गलना, छोटा हो जाना आदि ... प्रकट होते हैं इसमें लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियां दें—

हाइड्रोकोटाइल Q 6 :—मोटा चमड़ा, छाती, हथेली ... तलवे में बेहद खुजली के साथ आराम होने वाले रोग में विशे... लाभकारी। मूल अर्क की 5 बूंद दिन में तीन-चार बार दें... चाहिये।

आर्स आयोड 3X :— गांठ के स्थान फूले हों, अंगुलियां गलकर गिरती हों तथा टेढ़ी पड़ गयी हों, कांटे चुभने जैसा दर्द हो।

बेलाडोना 3X :—नवीन ज्वर के साथ यदि चमड़ा ... हो।

सीपिया 6 :—चमड़े पर खारीयता या पीले रंग के दा... चकत्ते दिखाई देने पर, स्त्रियों के लिये विशेष हितकर है।

आर्स एल्ब 3X, 30 :—घाव, तेज दर्द या बिल्कुल न... हो। सफेद दाग में।

जहरबाद (Erysipelas)

किसी अंग छिल जाने, जख्म पड़ जाने से सड़ान पैदा हो जाए और साधारण औषधि से ठीक न हो उसे जहरबाद कहते हैं।

इसके प्रारम्भिक लक्षणों में शरीर में सिरहन, हल्का ज्वर, रोगी अंगों का कांपना आदि विकार दिखाई देते हैं। फिर कंपकपी, अंग सूजना, उसका चमकीला या लाल दिखाई देना ... पानी-भरे छाले उत्पन्न होना आदि।

निम्नलिखित औषधियां लक्षणानुसार दें—

कैन्थरिस :— छालों का पानी लगने के कारण शरीर की
ान उधड़ने लगे एवं पानी भरी फुंसियां हो।

रसटाक्स 6 :—शरीर पर लाल रंग के पानी भरे छाले;
पूर्ण शरीर में डंक मारने जैसा दर्द, जलन फुंसियो से पानी
कलना आदि।

हिपर सल्फर 6 :—मवाद उत्पन्न होने अथवा पकने के
ये, स्पर्श तथा ठण्ड सहन न होने पर।

बेलाडोना 1, 3 :—लाल रंग की फूली हुई फुंसियों,
ार.ग्रस्त त्वचा के प्रदाह, तीव्र उत्ताप, सिर दर्द, प्रलाप
सियां फैल जाना, पेशाब में गाढ़ापन आदि लक्षणों में लाभ-
।

आर्सेनिक 3, 30 :—दर्द युक्त काले रंग के मवाद वाला,
ा, सुस्ती, तीव्र ज्वर, ब्याध बेचैनी तथा सड़न के लक्षण

ग्रैफाइटिस 6 :—भ्रमणशील विसर्प, रोग के बार-बार
मण तथा आयोडीन के अपव्यवहार से उत्पन्न उपसर्गों पर।
एकोनाइट 6 :—दाहक विसर्प फुंसियां निकलने से पहले
ड जलन, रक्त स्राव तथा सड़न में।
ग्नेशिया Q 3X :—शरीर मे तीव्र ताप, बेचैनी रक्त
 लक्षण तथा संघातिक विसर्प में।

मूत्र रोग

न शूल :—कैन्थरिस 2X, 6।
नमार्ग में प्रदाह :—आर्निका 3X, एकोनाइट 1X।
न सन्धि में प्रदाह :—एकोनाइट 3X, कैन्थरिस 3X।
 नली का संकोच :—एकोन 3X, नक्सवोमिका 3X।
त का पेशाब आना :—आर्निका 3X, बेलाडोना 3।
 रुक जाना :—एकोनाइट 1X, 3।
ाशय में प्रदाह :—बेल 3X, कैन्थरिस 3।

पढ़ते समय आँखों का शीघ्र थक जाना :—नेट्रमम्यूर ६, ३० ।
पढ़ते समय अक्षर सटे हुए दिखाई :—नेट्रमम्यूर ३० ।
पढ़ने समय अक्षर गायब दिखना :—साइक्यूर ३ ।
आँखों की पुतली फँस जाना :—ड्रेम ६, स्ट्रैमो ३ ।
आँखों की पुतली सिकुड़ जाना :—ओपियम ६, साइना २X ।
पलकों का लटक जाना :—जेलसियम ३X, ३० ।
पलकों का बार-बार फड़कना :—पल्सेटिला ६ इग्नेशिया ६ ।
किसी वस्तु का ऊपरी अंश दिखाई न देना :—आरममेट ।
किसी वस्तु का आधा दाहिना अंश न दिखना :—लीथियम कार्ब 6 ।
किसी वस्तु का बाँया आधा भाग न दिखना :—लाइको 12 ।
किसी वस्तु का बांया आधा भाग न दिखना :—कैलकेरिया ।
किसी वस्तु को थोड़ी देर तक देखने पर आँखों का थक जाना :—कल्केरिया कार्ब 6, नेट्रमम्यूर 30 ।
दूर की वस्तु का दिखाई न देना :—फाइजास्टिग्मा 3, 6 ।
पेट में कृमि के कारण टेढ़ा दिखाई देना :—स्पाईजीलिया 3 साइना 3, जेल्स 3, साइक्लेमेन 3 ।
रतौंधी :—नक्सवोमिका 3, बैलोडोना 6, लाइको 30 ।
दिनौंधी :—फास्फोरस 6, बेलोडोना 30 ।
पुतली के चारो ओर के रंगीन मण्डल मे प्रदाह :—आर्निका 6 ।
गुहेरी या अन्जनहारी :—पल्सेटिला 6, 30 ।
ऊपरी पलकों में गुहेरी :—सल्फर 30 ।
निचली पलकों में गुहेरी :—रस टाक्स 6, फास्फोरस 6 ।
कोये में गुहेरी :—स्टेनम 6, लाइकोपोडियम 11 ।
बार-बार गुहेरी होना :—सल्फर 6, ग्रेफाइट्स 6 ।
गुहेरी पकने पर :—सल्फर 6 ।
पलकों का सिकुड़ना :—अर्जेन्टम नाई 6 ।

मूत्र देह :—एपिस फास 3X, हैपिवार्ड 6।
आने और पेशाब निकल जाना :—बैल 6 कैन्थरिस 6।
बूंद-बूंद पेशाब आना :—बैरा 6, एकोनाइट 3X।
मूत्र पथरी :—गौरिया, आर्निका, सार्सी आदि।

आंखों के विभिन्न रोगों का इलाज

विभिन्न कारणों से आंखों में विभिन्न रोग हो जाते हैं। उनकी चिकित्सा के लिये लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग लाभकारी होता है।

आंखों का दुखना :—बेलाडोना 3X, फेरम फास 6।
आंख में काला दाग पड़ जाना :—आर्निका 3, 30।
आंख में जाला पड़ जाना :—थायजा 6।
आंख के आगे धुंध दिखाई देना :—एकोनाइट फास्फोरस 6।
आंखों में जलन होना :—सल्फर 30, बेल 3।
आंखों से पानी गिरना :—यूफ्रेशिया 3।
आंखों में दर्द होना :—सल्फर 6।
आंखों में असह्य दर्द :—कैमोमिला 12।
आंखों में भारीपन :—जेल्सीमियम।
आंखों से अधिक पानी गिरना :—एलियम सिपा 6।
आंखों में खून इकट्ठा होना :—आइलेन्थस 3।
आंखों में किरकिराहट होना :—फाइजस्टिग्मा।
अस्पष्ट दिखाई देना :—साइक्लामिन 3।
आंखों का फूल जाना :—रसटाक्स 6।
आंखों का चिपकना :—अरजनटाइम 3।
अचानक दृष्टि क्षीण होना :—एकोनाइट 3।
दृष्टिहीनता :—थायजा 6, 30।
छोटी चीजों का बड़ा दिखाई देना :—स्ट्रोमोनियम 3।
वस्तु का दो दिखाई देना :—स्ट्रोमोनियम 3।

पढ़ते समय आंखों का शीघ्र थक जाना :—नेट्रमआर्स ३, ३० ।

पढ़ते समय अक्षर सटे हुए दिखाई :—नेट्रमम्यूर ३० ।

पढ़ते समय अक्षर गायब दिखना :—साइक्यूर ३ ।

आंखों की पुतली फैल जाना :—बेल ६, स्ट्रैमो ३ ।

आखों की पुतली सिकुड़ जाना :—ओपियम ६, साइना २X ।

पलकों का सटक जोका :—जेलसियम ३X, ३० ।

पलकों का बार-बार फड़कना :—पल्सेटिला ६ इग्नेशिया ६ ।

किसी वस्तु का ऊपरी अंश दिखाई न देना :—आरममेट ।

किसी वस्तु का आधा दाहिना अंश न दिखना :—लीथियम कार्ब 6 ।

किसी वस्तु का बांया आधा भाग न दिखना :—लाइको 12 ।

किसी वस्तु का बांया आधा भाग न दिखना :—कैलकेरि ।

किसी वस्तु का थोड़ी देर तक देखने पर आंखों का थक जाना :—कल्केरिया कार्ब 6, नेट्रमम्यूर 30 ।

दूर की वस्तु का दिखाई न देना :—फाइजास्टिगमा 3,

पेट में कृमि के कारण टेढ़ा दिखाई देना :—स्पाईजोलिया साइना 3, बेल्स 3, साइक्लेमेन 3 ।

रतौंधी :—नक्सवोमिका 3, बैलोडोना 6, लाइको 30

दिनौंधी :—फास्फोरस 6, बेलोडोना 30 ।

पुतली के चारों ओर के रंगीन मण्डल में प्रदाह :—आर्निका

गुहेरी या अन्जनहारी :—पल्सेटिला 6, 30 ।

ऊपरी पलकों में गुहेरी :—सल्फर 30 ।

निचली पलकों में गुहेरी :—रस टाक्स 6, फास्फोरस 6

कोये में गुहेरी :—स्टैनम 6, लाइकोपोडियम 1। ।

बार-बार गुहेरी होना :—सल्फर 6, थेराइड्स 6 ।

गुहेरी पकने पर :—सल्फर 6 ।

पलकों का सिकुड़ना :—अर्जेंटम नाई 6 ।

नाक का बाहरी भाग लाल होना :—एपिस 3X, बेल 2X।

नाक में फुंसियां होना :—पैट्रोलियम।

नाक की नोंक में फुंसियां होना :—साइलीसिया 3; कैलीफ्रोम 3X।

नाक में दर्द :—केलीआई 3X।

नाक की झिल्लियों के प्रदाह :—एकोनाइट 3X, बेलाडोना 1X।

नाक से खून बहना :—एकोनाइट 3X, बेलाडोना 3X।

नासा ज्वर :—बेल डोना 1X, फास्फोरस 3।

नाक का अर्बुद :—फास्फोरस 6, सोरिनम 3।

रात में नाक बन्द हो जाना तथा सुबह खून गिरना :—मोनकार्ब 6।

नाक में घाव :—हीपर सल्फर 3X।

नाक में कष्ट तन्तुओं का बढ़ना :—सोरिनम 30, पल्स।

सूंघने की शक्ति नष्ट हो जाना :—पल्स 3, सल्फर 30।

पीनस रोग :—आरममेर 6, सोरिनम 50।

मुंह के भीतर के मुख्य रोग

मुंह गह्वर म प्रदाह अथवा घाव :—बारेंसद 3X।

मसूड़ों मे खून जाना :—कार्बोविज 6।

बहुत लार बहना :—मकरयूरिस 6।

श्वास मे बदबू आना :—आर्निका।

मुंह में घाव :—कार्बोवेज 6, नाइट्रिक एसिड 6।
गले में घाव :—मर्कसोल 6, एकोनाइट 3X।
दांत दर्द :—एकोनाइट 3, बेलाडोना 3X।
जीभ का अधिक फूलना :—एपिस 3X, 30।
जीभ का प्रदाह :—मार्कसायनस 3X, 6X।
जीभ में चोट लगना :—आर्निका 3X।
जीभ के छाले :—हीपर सल्फर 6, 30 नाइट्रिक ए
जीभ में जलन :—एलुमेन 30।
जीभ का मोटा हो जाना :—जेल्सीमियम 6।
जीभ के नीचे फुंसियां होना :—थाइको 12, 30।
जीभ में पक्षाघात होना :—कास्टिकम 6।
गले में दर्द होना :—बेलाडोना 6X, 30।
घूंट निगलने समय दर्द होना :—बैराइटा कार्ब 6।
तालुमूल की घण्टी बढ़ जाना :—कल्केआयोड 6।
उपजिह्वा का लम्बा होना :—कल्केरिया फास 6X।

डिप्थीरिया या झिल्ली प्रदाह

यह रोग प्रायः बच्चों को होता है, कभी-कभी बड़ों को भी हो जाता। इससे गले की श्लैष्मिक झिल्ली में एक प्रकार का धुंधला पर्दा सा पड़ जाता है—जिसके कारण श्वास बन्द होकर रोगी की मृत्यु तक हो जाती है।

सामान्य लक्षणों में गले में दर्द, किसी वस्तु को निगलने में कष्ट। गले में कफ या थूक निगलने का निरन्तर प्रयत्न। गले की गांठों का बढ़ जाना अथवा कड़ा हो जाना आदि लक्षण दिखाई देते हैं।

रूप में तीव्र ज्वर, कम्पन, वमन तथा बेचैनी के प्रकट होते हैं।

भयंकर उपसर्गों मे कफ या अधिक पक्षाघात, थूक निगलने कष्ट एवं हृदय की गति मन्द या क्रिया बन्द हो जाना है।

यह बड़ी सक्रामक बीमारी है।

डिफ्थीरिनम तथा मर्कसियानेटस—का प्रयोग अत्यन्त हितकर माना जाता है। पहली खुराक डिफ्थीरिनम 3 या 200 और उसके एक घण्टे बाद मर्कसियानेटस 6 या 30 दें। इस प्रकार हर घण्टे बाद देते रहें।

रोग के भयकर लक्षण प्रकट होने पर पर्याय क्रम से आर्सेनिक तथा एमोन कार्ब देने से अधिक लाभ होता है।

डिफ्थीरिनम 200 :—यह औषधि रोग के सक्रमण काल में केवल एक खुराक खा लेने से ही रोग को बढने से रोक देती है।

अन्य लक्षणो मे निम्नानुसार औषधि दें—

मर्कविन आयोड 1X :—गर्दन की ग्रन्थियो तथा लाला-ग्रन्थियों के सूज फूल जाने, गले के घाव, घूंट लेने मे कष्ट आदि लक्षणों पर।

एकोनाइट 3X :—स्वर नली का प्रदाह, सिर दर्द, चेहरे तथा आखों में रग लाल होने पर।

एपिस 3 :—चमकीला लाल रंग, पेशाब का रुकना, अधिक सूजन।

मर्क्यूरियस 3X :—निगलने में कष्ट, गला छूने पर दर्द। जकोस का लाल हो जाना, अधिक लार बहना, श्वास मे गंध।

आर्सेनिक 6 :—रोग की अन्तिम अवस्था में।

स्वर भंग के विभिन्न रोग

स्वर यंत्र मे प्रदाह अथवा अन्य कारणों से यह रोग होता

है। लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियां देनी चाहिए—

एकदम गला बैठ जाने पर :—कास्टी 6।

गले के घरघराने पर :—हीपर सल्फर 6।

पुराने रोग में :—कार्बोवेज 6।

आवाज बिगड़ जाने पर :—कास्टिकम 6।

सर्दी के कारण गला बैठ जाने पर :—कास्टिकम 6।

कमजोरी के कारण गला बैठ जाने पर :—कालीब आयोडियम 6।

हृदय रोग

हृदय सम्बन्धित विभिन्न रोगों में निम्नलिखित औषधि लाभ करती हैं।

हृतपिण्ड की वृद्धि :—आर्निका 6, स्पाईजीलिया 3।

हृदय शूल :—आर्स 3, 30, एकोन 3, 30।

हृतपिण्ड के बाहरी आवरण में प्रदाह :—स्पाईजीलिया 3, 30 एकोन 3।

हृतपिण्ड आवरण झिल्ली में नया प्रदाह :—कोलचिकम 3X एकोन 3X।

हृतपिण्ड की पेशियों में प्रदाह :—डिजीटेलिस 1X।

हृतपिण्ड में दर्द :—स्पाईजीलिया 3।

हृतपिण्ड में कम्पन :—जेल्सीमियम 3, 30।

हृतपिण्ड में वात अर्थात् बाईं या दाईं ओर भार मालूम होने पर :—रस टाक्स 6, आर्सेनिक 3X।

हृतपिण्ड की कमजोरी :—क्रेटिगस 3X।

मूर्छा :—चायना 6, एकोनाइट 3X।

... या ब्लड प्रेशर :—बेलाडोना 30, नाइट्रिक 30।

फेफड़ों के विभिन्न रोग

फेफड़ों से सम्बन्धित विभिन्न रोगों की चिकित्सा के विषय में नीचे लिखे रोगों के अनुसार दवा देनी चाहिये।

न्युमोनिया :—फेफड़े के विधान तन्तु में प्रदाह होना, न्युमोनिया या निमोनिया कहलाता है। इसमें एक अथवा दोनों ओर के फेफड़े प्रदाहित हो सकते हैं। इसमें कन्धे तथा सीने के नीचे हड्डी में दर्द, ज्वर, सूखी खांसी, नाक तथा कानों का सूज जाना। लाल रंग का पेशाब होना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। इसमें निम्नलिखित औषधियां देनी चाहिये—

एकोनाइट 3X, 6 :—रोग की प्रारम्भिक अवस्था में।

ब्रायोनिया 6, 30 :—बार-बार सूखी खांसी, थोड़ा बलगम निकलना, वक्षस्थल में सुई चुभन जैसा दर्द, श्वास लेते समय कष्ट, तीव्र प्यास आदि।

फास्फोरस 6, 30 :—कष्टकर खांसी, वक्षस्थल में तीव्र दर्द, बच्चों का निमोनिया।

एण्टिम टार्ट 12 :—श्वास नली में प्रदाह, नाड़ी के [illegible] का बढ़ जाना, परन्तु शरीर के तापक्रम का कम रहना। अति बेचैनी, चेहरा पीला या काला पड़ जाना आदि।

लाइकोपोडियम 12, 30 :—रोग की तीसरी अवस्था टाइफाइड के साथ निमोनिया, बलगम अधिक निकलना, [illegible] ओर की बीमारी, यकृत की गड़बड़ी आदि।

जुकाम या सर्दी
(Cold or Coryza)

इस रोग के सामान्य लक्षण —सिर भारी होना, ना[illegible] पानी बहना आदि हैं।

दूरस्त होमियोपैथिक गाइड, पार्म न

इस रोग के लिए कभी [illegible], इसके अतिरिक्त [illegible] होते हैं। [illegible] की एक प्रकार के [illegible] होती है। इसके लिये [illegible] हैं—

[illegible] रोग की [illegible] अवस्था में, [illegible] नाक में नहीं [illegible] आदि लक्षणों पर।

[illegible] 30, 200 :—[illegible] और नथुनों [illegible] छींके आना। नाक बहना, [illegible] के साथ दर्द, सिर में [illegible] दर्द।

[illegible] 3,200 : दिन में एक ओर रात को [illegible] नथुने बन्द रहें, नाक में [illegible], बार-बार छींके आना। [illegible] वायु अधिक आवे।

[illegible] 30,200 :—श्वास, वायु, नाक और [illegible] कमजोर—नथुने फटे तथा [illegible] भरे होने के कारण [illegible] हों।

[illegible] 30 200 :—नाक कभी बहे, कभी बन्द जावे—नकसीर फूटना, नाक का फिर बहना तथा छींके आना।

[illegible] नम्बर 3 :—पुराने जुकाम को बढ़ाने के लिये।

[illegible] 30,200 :—जुकाम बहते-बहते [illegible] हो जाये। निगलने समय गले का दुखना। नाक की जड़ में दर्द। नरम एवम् तर मौसम का जुकाम।

फाइटो 30,200 :—नाक एकदम बन्द हो जाये, मुँह से साँस लेना पड़े। एक नथुना बहे दूसरा बन्द रहे। बार-बार [illegible] साफ करने की इच्छा।

[illegible] 30,200 :—नाक से जलता हुआ सा पानी [illegible] घर में आते ही नाक बन्द हो जाये—बाहर [illegible] [illegible]।

ब्रायोनिया 6,30 :—श्वास नली में जलन। कष्टकर सूखी खाँसी। कफ के कारण नाक का छिद्र बन्द रहे। खाँसते समय पसलियों में दर्द। आँखों में पानी निकलना। सीने में सुई चुभाने सा दर्द।

नक्स वोमिका 6, 30 :—नाक दिन में सूखी और रात बन्द रहे। कब्ज, टट्टी न लगना। पाखाने जाने पर न होना आदि लक्षणों पर।

एकोनाइट 3X :—सूखी ठण्डी हवा लगकर जुकाम होना और के साथ हल्का ज्वर। शरीर टूटना, आँखों में जलन, प्यास, घबराई आना।

दमा

इस रोग में साँस लेने में बहुत कष्ट होता है।

इसमें निम्नलिखित औषधियाँ इस प्रकार है—

रोने की प्रारम्भिक अवस्था में :—ब्लाटा ओरियन्टालिस Q 30।

नवीन रोग में :—हाइड्रोसियानिक एसिड 3X।

वक्षस्थल में मवाद होने पर :—एपिकाक 1X, 6।

कफ के पतला और पीला होने पर :—कार्बोवेज।

फेफड़ों में रक्त इकट्ठा हो जाने से साँस लेने में कष्ट विशेषकर दुर्बल एवं वृद्ध लोगों के लिये :—आर्सेनिक 3X, 6, 12, 30।

चेहरे पर ठण्डा पसीना आना :—वेरेट्रम विरिडि 3।

यक्ष्मा या तपेदिक : टी० बी० (Tuberculosis)

यह रोग मुख्यतः दो प्रकार का होता है—

1. फेफड़े का यक्ष्मा (टी० बी०)
2. आँतों का यक्ष्मा (टी० बी०)

फेफड़े के [illegible] में कफ जमा हो जाते हैं। कुछ दिन के बाद [illegible] में खांसी शुरू होती है — शुरू नहीं [illegible]। [illegible] की [illegible] हो जाती है। [illegible] में [illegible] बढ़ जाता है। [illegible] [illegible] होते हैं। शरीर को [illegible] [illegible] अपने [illegible] रहता है। [illegible] [illegible] आदि में कफ जमा हो जाने से थूक निकलने लगता है।

खांसी के साथ में कफ़ या थूक निकलता है, [illegible] में खून आता है। [illegible] हुई वायु का न पचना, [illegible], [illegible] आना, क्रोध, [illegible] आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

फेफड़े के यक्ष्मा में निम्नलिखित दवाइयाँ देना ठीक हैं—

ट्युबरकुलिनम 30,200 — [illegible] देश के रोगी के लिये यह दवा उत्तम है। 15 दिन अथवा एक मास के अन्तर से इसे व्यवहार दें।

बैसिलिनम 200 — ऊपर बताए देश के रोगी के लिये यह दवा उत्तम है। इसे भी ट्युबर्कु दवा के समान दें।

कल्केरिया कार्ब 30,200 — अश्मरी तथा मन्दाग्नि के मरीजों में टी॰ बी॰ का पता बाएँ फेफड़े के ऊपरी भाग में हो तो यह दवा अच्छी सिद्ध होती है।

फास्फोरस 6,30 — सूखी खांसी, खांसी, छाती में दर्द, दुर्गन्धयुक्त, हरा, मैला कफ निकलना। भूख की कमी, शाम को ज्वर एवं कष्ट बढ़ना। दिन में केवल एक मात्रा दें।

कल्केरिया फास 6X,30,200 — पाण्डु रोग के कारण टी॰ बी॰ की प्रारम्भिक अवस्था में जबकि पसीना अधिक आता हो।

एकोन 3X — फेफड़े में आये खून को कम करने के लिये।

एमोनम्योर 3,30,200 — गहरी साँस लेने तथा खाँसी

...पर लेटने पर खांसी आवे, कभी या सर्दी लगने के बाद रात ...पसीना आवे, दांतों में मुजन, मसूड़ों से खून आना आदि लक्षणों में।

कलेरिया 6,30—लेटने पर खांसी आना, दम घुटना, दाएँ फेफड़े के ऊपरी भाग में अथवा पूरे भाग में भाला चुभने जैसा दर्द। दिन में कमजोर ज्वार आना एवं आना, रात को पसीना। आधी रात के बाद पसीना अधिक आना आदि लक्षणों में।

आर्स आयोड 6,30—दमा, ज्वर, श्वासनली एवं कण्ठ नली का दमा। श्वास की चाल में तेजी, दायें फेफड़े के ऊपरी भाग में सटके आना, दर्द, खांसी, बलगम निकलना आदि लक्षणों पर।

आरमेट—यह रोग के अन्तिम चरण की औषधि है।

कार्बोवेज + 7,30,200—स्वर भंग, बदबूदार व रंगीन कफ, ...व ठण्डे रहना, ऊपर के धड़ का गरम रहना, ठण्डा पसीना आदि।

ट्युबरकुलिनम 30,200—कण्ठमाला पीड़ित व्यक्तियों की टी० बी० पर।

फेरम आर्स 12,30—युवकों पर होने वाले रोग के आक्रमण पर।

आंतों की टी० बी० के लिये औषधियाँ इस प्रकार हैं—

ज्वर रहने पर—चायना, फेरमफास, एकिनेशिया।

ज्वर के साथ-खून आने पर—फेरमफास, आर्सआयोड 6X ...में तीन बार।

अधिक पसीना आने पर—कल्केरिया कार्ब, सिलिशिया।

पाचनाशय की गड़बड़ी पर—नक्सवोमिका, पलोरिला।

खून आने पर—इपिकाक, फेरम एसेट।

[illegible]

सिर दर्द [illegible]

सिर का दर्द [illegible]

[illegible]

यह बड़ा ही कष्टदायक रोग है । आधे सिर में जो दर्द होता है उसे आधासीसी कहते हैं ।

[illegible] के कारण जो दर्द होता है उसमें बुखार, शरीर की नसों की तड़कन, दर्द वाले [illegible] सिर हिलाने में दर्द का बढ़ना । गर्म रहने और कम्बल-वस्त्र ओढ़े रहने पर आराम मालूम पड़ना - इसके लिये ब्रायोनिया, युपेटोरियम, बेलाडोना, [illegible] वगैरह अच्छी दवाएं हैं।

बेलाडोना 30—बच्चों का सिर दर्द, एकाएक बन्द हो जाना, सिर में गर्मी, रोशनी या आवाज बिल्कुल बर्दाश्त न होना । दर्द के कारण आंखें बन्द कर रखना । रात दोपहर से आधी रात तक दर्द का होना दाहिनी ओर दर्द होने पर अधिक [illegible]

ग्लोनाइन 30—सिर में एकाएक तेज दर्द, सिर में मानो [illegible] रहा हो । गैस या बिजली की बत्ती के नीचे काम करने [illegible] । उसकी गर्मी से सिर दर्द होने पर यह दवा देनी [illegible]ये ।

अन्य दवाएं—कैमोमिला, आर्निका, कैल्केरिया कार्ब, इग्नेट, चायना, कॉफिया, साईलीशिया, मर्क्यूरियस, सीपिया। आदि।

विशेष—उत्तेजक और घी तेल का सामान न खाना चाहिए जब तक सिर दर्द का रोग जड़ से नहीं मिट जाता। सभी तरह की मानसिक उत्तेजनाओं से बचना चाहिये। स्नायविक दर्द में हो तो ठन्डे पानी से स्नान करना चाहिये। यदि दबाकर पकड़ने से दर्द कम हो तो गीला कपड़ा माथे पर बांधने से फायदा होता है ठण्डे कमरे मे विश्राम, थोड़ी मात्रा में बीच-बीच में खूब गर्म चाय पीना भी फायदा पहुंचाती है।

आधे सिर में दर्द (Hemicrania)

आर्सेनिक 30—किसी एक जगह दर्द होता है, जैसे छुरी लगी हो। यह दर्द रोज नियत समय पर, खाने के बाद, सोने के बाद या सुबह उठता है और दोपहर को मिट जाता है। शाम को फिर लौटता है, ऐसा जान पड़े कि सिर भिन्न रहा है। कनपटियों पर जोर रहता है, दर्द के साथ कम्पन या सिहरन होती है।

स्पाईजेलिया 30—बायें आधे सिर का दर्द जो सूरज निकलने से सूरज छिपने तक रहे। दर्द सारी आंख के घेरे में होता है। जैसे वह वहां से उखाड़ी जा रही हो। निगाहें धुंधली हो जायें।

नक्सवोमिका—सुबह जागते ही दर्द आता है और दोपहर तक बढ़ता है। घटते-घटते शाम तक चला जाता है। सिर में जैसे कील ठोंकी जा रही हो या जैसे दिमाग कुचला जा रहा हो। दर्द के साथ के, चेहरा पीला पड़ जाये।

नेट्रम म्यूर 30—बड़े सवेरे ही सिर दर्द शुरू हो जाता है

और जैसे-जैसे सूरज चढ़ता है दर्द भी बढ़ता है। दोपहर से घटने लगता है। सूरज छिपते-छिपते बन्द हो जाता है। फिर जैसे पट पड़ेगा। आधु अधिक आवे—मासिक धर्म से पहले या उसके दौरान दर्द हो।

निद्रम 30—समय की पाबन्दी के साथ आने वाला सिर दर्द।

स्पैजिलिया—बायें आधे सिर का दर्द, जिसके आने से पहले निगाह धुंधली पड़ जाये और ज्यों-ज्यों दर्द बढ़े निगाह साफ होती जाये। दर्द की जगह बदलकर नीचे आती जाती है शरीर के अन्य अंगों में भी दर्द होने लगता है।

सैड्रिसेरिया 30—उन स्त्रियों के लिये विशेष हितकारी है जिन्हें अतिरज: भी हो, सिर में बिजली के से झटके आवें। हर सातवें दिन आने वाला सिर दर्द।

आंत उतरना (Hernia)

आंत्रिया नाड़ी का थोड़ा सा अंश उदर प्राचीर के भीतर से बाहर निकलकर फूल जाता है उसी को आंत उतरना कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है—

1. इंगइनल 2 अम्बलिकल

जंघा संधि या गिल्टी की जगह के हर्निया को इंगइनल कहते हैं। इनमें आंत पेट से निकलकर अण्डकोष में आ जाती है निकली हुई आंत उसी वक्त पेट के अन्दर चली जाती तो ... और अंग थैली के बाहर निकलकर अण्डकोष ही रुकी रहे और उसे अपने स्थान पर न लाया जा ... स्ट्रेंगुलेटेड हर्निया कहते हैं।

... जब बाहर निकलकर वापस नहीं आती या वापस ... बाहर निकल आती है तो ऐसी अवस्था ...

हराती है।

प्रश्वलिकल-हर्निया विशेषकर बच्चों को होता है इसमें ...नाभि का फूलना। दबाने से एक प्रकार की आवाज करना आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

एक प्रकार का और भी हर्निया होता है जिसे फिमोरैल ...हते हैं और जो केवल स्त्रियों को ही होता है।

...काँख कर मूत्र त्याग करना, घुड़सवारी, भारी चीज उठना ...आदि कारणों से हर्निया का रोग हो सकता है। इसका निरा-...करण करें-पेट साफ रखें।

चिकित्सा—

काक्युलस 30—नाभि स्थान उतरने की अच्छी दवा है—...कर दायीं ओर के हर्निया में लाभदायक है। आंतों में ...अफारा, तनाव जैसे वह जगह फट जायेगी। उलझी हुई आंत के ...लिये भी महौषधि समझी जाती है। खड़ा न हो सके, खड़े होते ही आंत खिसक पड़े। सख्त कब्ज, जब नक्सवोमिका काम न दे तो इसका सेवन लाभप्रद है।

लैकेसिस 6—जब आंत सड़ने लगे तो इसका प्रयोग करना चाहिये।

एमोन कार्ब 30—पेट में शूल की तरह दर्द का होना—आंत विशेषकर बायीं ओर की उतरती हो।

लाइकोपोडियम 30—दाहिनी ओर की बीमारी में अधिक लाभदायक है।

नक्सवोमिका 2X, खासकर बायीं ओर की बीमारी में जब ...र्निया नीचे आकर कहीं उलझ गयी हो और ऊपर न लौटे। ...कोन 30, के साथ अदल-बदल कर दें ऐसी दशा में एकोन और ...सल्फर भी लाभदायक है।

वेरेट्रम 30—जब उपरोक्त दवाएं काम न कर सकी हों।

दर्द, जलन बहुत अधिक होता है। भीतर आग सी जलती रहती है। किसी एक जगह सुर्खी और चमक रहती है। फिर एक दो दिन बाद वहां काली आभा दिखाई देती है। पकने के पहले कुछ पीला या काला रंग दिखाई देता है। पकने पर छेदों से खून मिश्रित बदबूदार मवाद निकलता रहता है। भीतर सड़ा हुआ भाग खिसक कर ऊबड़-खाबड़ घाव उत्पन्न करता है।

इसमें बुखार, कमजोरी, प्यास, सिर दर्द, भूख की कमी, अनिद्रा आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

यह बीमारी उन्हीं लोगों को ज्यादा होती है जिनके पेशाब में सुगर आता है अथवा उन लोगों को होती है जिनके हृदयिक सम्बन्धित रक्त वाहिनी कोई बीमारी होती है। इसकी चिकित्सा इस प्रकार है –

एन्थ्रासिनम 30—कार्बंकल की बेजोड़ दवा है।

आर्सेनिक 200—बुरी तरह जलन, रोगी जलन दूर करने के लिये उस पर पानी डालना चाहे, भयानक प्यास, रोगी बार-बार परन्तु थोड़ा पानी पीना चाहता है।

कल्केरिया सल्फ 30—बहुत ज्यादा मवाद होने पर इसका व्यवहार होता है। मवाद का परिणाम, घटाने के लिये यह हितकारी दवा है।

कोरर ... 30—चोंचा मारने जैसा दर्द होने पर देना

... की जगह सड़ने लगे तो इसका

...

अण्ड प्रदाह
(Orchitis)

इस रोग के होने पर अण्डकोष की थैली में प्रदाह होता है। प्रायः इसमें एक ओर का अण्डकोष प्रदाहित होता है। अण्डकोष लाल हो जाना, फूल जाना और दर्द होना इसके प्रमुख लक्षण हैं।

कभी-कभी अण्डकोष में मवाद भी पड़ जाता है और वह फूट भी जाता है। इसकी चिकित्सा इस प्रकार है -

स्पांजिया 30—अण्डकोष में सूजन और दर्द, फूलकर कड़ा हो जाना। बिछौने पर हिलने डुलने या कपड़ा छू जाने से टपक जैसा दर्द।

मार्क्युरिस 6—सूजाक और गर्मी के कारण इस रोग के होने पर देना चाहिए।

आर्निका 30—चोट लगने के कारण अण्डकोष फूलने पर।

एकोनाइट 30—प्रदाह के साथ जोरों का बुखार। अण्डकोष में दर्द और सूजन। अण्डकोष का कड़ा हो जाना आदि।

कोनायम 30 – बूढ़े आदमियों के लिये उपयुक्त है।

अण्डकोष का प्रदाह
(Scrotitis)

प्रायः चोट लगने से या आतशक या सुजाक के उपद्रव स्वरूप अण्डकोष की थैली का चर्म फूल जाता है। उसमें पानी भर जाता है और दर्द होता है।

यहाँ हाइड्रोसील का भ्रम नहीं होना चाहिये। हाइड्रोसील

[illegible]

... हितकारी बात है।

... 30 — ... [illegible]

... 30 — ... [illegible] ... चाहिये।

अण्ड प्रदाह
(Orchitis)

इस रोग के होने पर अण्डकोष की थैली में प्रदाह होता है। प्राय: इसमें एक ओर का अण्डकोष प्रदाहित होता है। अण्डकोष लाल हो जाना, फूल जाना और दर्द होना इसके प्रमुख लक्षण हैं।

कभी-कभी अण्डकोष मे मवाद भी पड़ जाता है और वह फूट भी जाता है। इसकी चिकित्सा इस प्रकार है –

स्पांजिया 30—अण्डकोष मे सूजन और दर्द, फूलकर कड़ा हो जाना। बिछौने पर हिलने डुलने या कपड़ा छू जाने से टपक जैसा दर्द।

मार्क्युरियस 6—सुजाक और गर्मी के कारण इस रोग के होने पर देना चाहिए।

आर्निका 30—चोट लगने के कारण अण्डकोष फूलने पर।

एकोनाइट 30—प्रदाह के साथ जोरों का बुखार। अण्डकोष मे दर्द और सूजन। अण्डकोष का कड़ा हो जाना आदि।

बारायटा 30 – बूढ़े आदमियों के लिये उपयुक्त है।

अण्डकोष का प्रदाह
(Scrotitis)

प्राय: चोट लगने से या आतशक या सुजाक के उपद्रव स्वरूप अण्डकोष की थैली का चर्म फूल जाता है। उसमें पानी भर आता है और दर्द होता है।

यहां हाइड्रोसील का भ्रम नहीं होना चाहिये। हाइड्रोसील

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] 30—[illegible] मारते हैं [illegible] होने पर देना चाहिये।

[illegible] —प्रकार को बाद [illegible] गये तो दूसरा [illegible] करना चाहिये।

अण्ड प्रदाह

(Orcbitis)

इस रोग के होने पर अण्डकोष की थैली में प्रदाह होता है। प्राय: इसमे एक ओर का अण्डकोष प्रदाहित होता है। अण्डकोष लाल हो जाना, फूल जाना और दर्द होना इसके प्रमुख लक्षण हैं।

कभी-कभी अण्डकोष मे मवाद भी पड़ जाता है और वह फूट भी जाता है। इसकी चिकित्सा इस प्रकार है –

स्पांजिया 30—अण्डकोष मे सूजन और दर्द, फूलकर कड़ा हो जाना। बिछौने पर हिलने डुलने या कपड़ा छू जाने से टपक जैसा दर्द।

- मार्क्यूरिस 6—सूजाक और गर्मी के कारण इस रोग के होने पर देना चाहिए।

आर्निका 30—चोट लगने के कारण अण्डकोष फूलने पर।

· एकोनाइट 30—प्रदाह के साथ जोरो का बुखार। अण्डकोष में दर्द और सूजन। अण्डकोष का कड़ा हो जाना आदि।

कोनायम 30 - बूढ़े आदमियों के लिये उपयुक्त है।

अण्डकोष का प्रदाह

(Scrotitis)

प्राय: चोट लगने से या आतशक या सुजाक के उपद्रव स्वरूप अण्डकोष की थैली का चर्म फूल जाता है। उसमें पानी आ जाता है और दर्द होता है।

यहाँ हाइड्रोसील का भ्रम नहीं होना चाहिये। हाइड्रोसील

[illegible]

[illegible]

अण्डकोष में पानी उतरना

(Hydrocele)

अण्डकोष की दोनों थैलियां या कोशिकायें [illegible] हुई हैं। [illegible] कहते हैं कि [illegible] की एक थैली। अण्डकोष को [illegible] रहती है। इस थैली में एक प्रकार का तरल पदार्थ [illegible] जमा हो जाता है और यह थैली के बढ़ने को [illegible] है। इस थैली में जल भर जाना रोग को उत्पन्न करता है। इस रोग को पानी उतरना भी कहते हैं। इसमें धीरे-धीरे पानी बढ़ता जाता है और अण्डकोष फूलकर बहुत बड़ा हो जाता है।

कभी-कभी चोट लग जाने पर अण्डकोष में मवाद पड़कर दर्द भी होता है। इसकी चिकित्सा इस प्रकार है।

ओरममेट 200—दाहिनी अण्डकोष की वृद्धि में अधिक लाभदायक है।

एपिस 30—अण्डकोष में सूजन और भिड़ के डंक जैसी लाली होने पर इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला 30—बायें अण्डकोष की बीमारी में देना लाभप्रद है।

रसटाक्स 30—सर्दी लगने के कारण रोग उत्पत्ति में।

सामी, सूजन होने पर उपयोग करना चाहिये।

मलेरिया कार्ब 30—छोटी उम्र के बच्चों को इस रोग के होने पर देना चाहिये।

उपदंश या गरमी

(Syphilis)

मशहूर नाम सिफलिस है। उपदंश मे घाव हो जाता है—यो दो प्रकार का होता है—हार्ड शैंकर, सापट शैंकर। यह तीन प्रकार की अवस्थाओं में प्रकट होता है—

शरीर मे रक्त दूषित होने पर, नाना प्रकार की बीमारियों के उत्पन्न होने पर, घाव के उत्पन्न होने पर।

पुरुषों के लिंगेन्द्रिय के पिछले भाग मे, स्त्रियों के योनि कपाट में। शुरू में लिंग के किसी स्थान का चमड़ा छिल जाता है, बाद में लाल रंग के मटर के दाने जैसी फुंसी आ जाती है। इसकी चिकित्सा इस प्रकार है—

मर्कूरियस सॉल 200—इस रोग की प्रधान दवा है। शर्त कि पहले पारे का व्यवहार न हुआ हो। जिस समय शरीर के स्थान पर मवाद पड़े उस समय ही दवा करने से लाभ हो जाता है। बड़ी अवस्था में भी लाभकर।

विशेष—मरीज के साथ यदि सम्बन्ध करना आवश्यक हो तो मिलन से पहले वैसलीन या लेने से उसके शरीर में कभी असर नहीं फैलता अन्यथा यह रोग पुरुष से स्त्री में और स्त्री से पुरुष में फैल जाता है।

दूसरो के काम में लाया हुआ तौलिया, कपड़ा, बिछौना व्यवहार करना उचित नहीं है। यह छूत का एक दूसरे से लगने वाला रोग है तथा शरीर विरत से बचना चाहिये।

[illegible] का सुजाक

([illegible])

सुजाक [illegible] छूत का रोग है [illegible], एक दूसरे [illegible] यह बीमारी [illegible] है। इस बीमारी को [illegible] गोनोकोकस नामक कीटाणु होते हैं जो बड़े भारी [illegible] करके [illegible] कर देते हैं। मूत्र की मूत्रनली [illegible] तक [illegible] होता है [illegible] इस रोग [illegible] होती है। [illegible] बढ़कर मूत्राशय, [illegible] और [illegible] तक रोग फैल जाता है।

स्त्रियों को योनि के पास वाले अन्य गुप्त दुग्रन्थि, [illegible], [illegible] [illegible] हो जाते हैं। इसका [illegible] शरीर के किसी भी स्थान की [illegible] से [illegible] इस स्थान को रोग से ग्रसित कर देते हैं। चिकित्सा इस प्रकार है—

कैनाबिस इण्डिका 30—इस समय देते हैं जब सुजाकी के उसके ऊपर को चमड़ी के प्रदाह से लाल सूजी, सुजाकी में मूत्र पेशाब के समय और बाद में मूत्रनली में असह्य दर्द, समय में दर्द और बूंद-बूंद पेशाब आता हो।

कैन्थरिस 30—उस व्यक्ति को देना चाहिये जिसे पेशाब की राह से खून आता हो। मूत्रनली में डंक मारने की तरह दर्द या टीस हो तो विशेष लाभदायक है।

स्त्रियों के सुजाक में—कैन एण्ड सेड, कैल्या तथा सुजा का उपयोग कराना लाभदायक है।

विशेष—इस रोग के हो जाने पर साइकिल चलाना, घुड़सवारी करना मना है। जननेन्द्रिय को धोकर साफ रखना चाहिये। लाल मिर्च, खट्टा-मीठा और उत्तेजक वस्तुओं का [illegible] एकदम वर्जित है।

बाँझपन (Sterility)

स्त्रियों को सन्तान न होना बाँझपन कहलाता है। शारीरिक दुर्बलता, गर्भाशय का टेढ़ा हो जाना, योनि संकोचन, शरीर में चर्बी का बढ़ जाना, ऋतु में गड़बड़ी, प्रदर रोग, मानसिक ईर्ष्या, अप्राकृतिक विहार करने से बाँझपन हो जाया करता है।

गर्भ रहने के लिये स्त्री के रज और पुरुष के वीर्य दोनों को निर्दोष होना चाहिये। दो में से किसी एक के दोष से गर्भाधान नहीं हो सकता। अनेक बार पुरुषों के दोष अर्थात् उपदंश, प्रमेह, शुक्र निकलने वाली राह का रुकना। लिंग का पतलापन या बहुत मोटापन आदि कारणों से भी उनकी स्त्रियों के बच्चे नहीं होते, किन्तु घर और बाहर की स्त्रियां उनको ही दोष दिया करती हैं।

होमियो पुस्तक रत्नाकर ग्रन्थ में लिखा है कि दो मिट्टी के नये गमलों में गेहूं या जौ के चार दाने डाल दो। फिर उन गमलों में स्त्री-पुरुष अलग-अलग सात दिन तक पेशाब करें। जिसके गमले में दाने उग आवें वह दोष रहित है और जिसमें न उगें वह दोषयुक्त है। संगम के समय समस्त शुक्र बाहर निकल जाता है इस कारण गर्भ स्थिर नहीं होता—ऐसी स्थिति में योनिद्वार में शुक्र के प्रवेश करते ही सावधानी से नितम्ब देश को ऊपर उठाकर जांघ को छाती की ओर झुकाकर रखने पर शुक्र का बाहर निकलना रुक जाता है।

बाँझपन को दूर करने के लिये निम्नलिखित चिकित्सा सहायक होती है—

[illegible]

[illegible]

[illegible] 10 — [illegible]

[illegible] 10 — [illegible]

[illegible] धातु की चीजें, छुरी, कैंची, सीसी, [illegible] धातु का प्रयोग वर्जित है। इनका ध्यान रखें। यदि कुछ [illegible] से बनती है तो उन्हें अवश्य हटा देना चाहिये।

महत्वपूर्ण और प्रमुख होमियो-पैथिक औषधियाँ

औषधियों के नाम तथा गुण धर्म :

होमियोपैथी में कुछ अति महत्वपूर्ण औषधियाँ होती हैं, जिनमें अनेक गुण और धर्म होते हैं कि एक औषधि अनेकानेक रोगों में काम करती है। उनके विवरण इस प्रकार हैं—

आर्सेनिक एल्बम (Arsenic Album)

इसे हिन्दी में संखिया कहते हैं। इसकी विशेष क्रिया शरीर के प्रायः सभी अंगों पर प्रकट होती है। रोगी के प्यास की बहुत अधिकता रहती है और वह पानी भी पीता है किन्तु थोड़ा-थोड़ा। कमजोरी और बेचैनी भी अधिक रहती है। रोगी को [illegible] का भय सताता रहता है [illegible]

इन्तर लगाते रहते हैं मानो वह अवश्य ही मर जायेगा।

मुर्नी, उदासीनता, हताशा, विषाद, घबराहट, डर, बेचैनी ज्यादह उद्वेग, उत्तेजना, छूने से तकलीफ, चिड़चिड़ा मिज़ाज और विरक्त चित्त।

आर्निका माण्ट (Arnica Mont)

स्नायविक स्त्रियों को और रस रक्त प्रधान मनुष्यों को, जिनका चेहरा बहुत लाल और जो बहुत प्रफुल्ल चित्त रहते हैं, उनके लिये यह उपयोगी है। चोट या गिरने की वजह से किसी प्रकार का भी उपसर्ग और बीमारी में भी लाभदायक। यदि बहुत दिन पहले भी चोट आयी हो तो उसमें भी यह फायदा करती है। कहरा, कोपमय विधान, पेशी इत्यादि में इसकी विशेष क्रिया प्रकट होती है। चोट आदि में इसका मूल अरिष्ट औंस पानी में 10–15 बूंद मिलाकर बाहरी प्रयोग किया जाता है। गर्मी के दिनों में जो फोड़े फुंसियां होती हैं उसकी यह एक मात्र दवा है।

आयोडियम (Iodium)

यह गण्ड माला दोष को नष्ट करने वाली दवा है। बहुत ज्यादा दुबलापन इसका निर्देशक लक्षण है। यह प्रदर रोग में भी मुफीद है। इसका प्रयोग जख्म भरने में भी विशेष लाभकारी है।

युपेटोरियम पर्फ (Eupatorium Perf)

वृद्ध पुरुषों की बीमारियों में इसका प्रयोग होता है। यह औरतों के मूत्राशय की जकड़न की बेहतरीन दवा है। हड्डियों के दर्द में भी बहुत मुफीद है। सारे शरीर में दर्द, पीठ, मांस, कलाई आदि में दर्द। सविराम ज्वर, शोथावस्था की तकलीफ में अचूक औषधि है।

[illegible]

[illegible] (Ignatia [illegible])

[illegible] है। [illegible]

इग्नेशिया (Ignatia)

प्रेमभंग और [illegible] होती है। ऐसे रोगियों को सर्वोत्तम दवा समझना चाहिये। मानसिक कष्ट होने से यदि पहले से [illegible] और [illegible] हो जाये तो इसका प्रयोग [illegible] रहता है। शरीर के किसी [illegible] में [illegible] को बहुत अच्छी दवा है। [illegible] के [illegible] के [illegible] है। [illegible] की यह सर्वोत्तम दवा है।

इथूजा (Aethusa)

बच्चे का दूध न पचना, दूध पीते ही दही की तरह कै हो जाती है। बच्चे के [illegible] बाद ही नींद आ जाती है। लेकिन इसमें बाद ज्यों ही दूध पीता है त्यों ही कै कर देता है। बच्चों के [illegible] की अच्छी दवा है।

एबीज नाइग्रा (Abies Nigra)

कब्ज, खांसी, मन्दाग्नि, डकार आना, रक्त स्राव, चाय और तम्बाकू व्यवहार करने के बुरे परिणाम पर इसका सेवन करना चाहिये।

एब्रोटेनम (Abrotanum)

बच्चों के सुखड़ी रोग की महौषधि है। एक बार दस्त और

एक बार पाले दस्त आते हों तो देना चाहिये। पतले दस्तों में खाई हुई चीजों को पचाने की शक्ति नहीं रही है। बच्चा बद-मिजाज, चिड़चिड़ा, जिद्दी रहता है, प्रचण्ड निर्दयी और नुकसान करना पसन्द करता है।

एकोनाइट नेप (Aconite Nap)

एशियाटिक हैजा, मया प्रदाह और प्रदाह से पैदा हुआ बुखार,पेरड में इसका बहुत आश्चर्यजनक फल होता है। किसी भी बीमारी की नयी अवस्था में इसका प्रयोग किया जा सकता है। इसकी प्रधान क्रिया पीठ, मस्तिष्क और स्नायुमण्डल पर प्रकट होती है।

ऐगनस कैस्टस (Agnus Castus)

धातु वाले व्यक्तियों के लिये उपयोगी। घोर नपुंसकता, लिंगेन्द्रिय शिथिल, दुर्बल और ठण्डी। ना ही काम शक्ति रहती है ना ही इच्छा रहती है। रोगी अन्यमनस्क रहता है। स्मरण नहीं कर सकता। समय से पहले बुढ़ापा जैसा चेहरा दिखायी देने लगता है।

ऐलियम सेपा (Allivum Cepa)

यह दवा प्याज से तैयार होती है। आंख, नाक से पानी जैसा स्राव, निरन्तर छींक आना। सिर में सर्दी और दर्द खांसी खांसते समय ऐसा लगे कि गला फट जायेगा। कच्चे फल खाने के कारण पेट में दर्द इत्यादि। नाक से अधिक बलगम निकलता हो।

एलो सोकोट्रिन" (Aloe Socotrina)

यह घीकुवार का सार है। यह आलसी व्यक्तियों के लिए उपयोगी है। मानसिक या शारीरिक कोई भी श्रम करने की इच्छा नहीं होती। उदर में असह्य दर्द, पाखाना होने से पहले और होने के समय। पाखाना हो जाने के बाद सारी तकलीफें

[illegible] है। [illegible]

[illegible] ([illegible])

[illegible]

अनाकार्डियम (Anacardium)

[illegible] मालूम होता है। [illegible] बहुत [illegible] रहता है। खाने से ही [illegible] होती है, पर [illegible] जाती है। [illegible] नहीं होता।

एन्टिम टार्ट (Antim Tart)

[illegible] और फेफड़ों पर इसकी विशेष क्रिया होती है। एन्टिम टार्ट बलगम काटने वाली दवा है। बड़ों के और बच्चों की बलगम दिखाई दे [illegible] न [illegible] चाहिये। [illegible] की पहली अवस्था में इसके व्यवहार से अच्छा फल होता है। [illegible] में बलगम जमा हो तो इसके देने से ढीला होकर निकल जाता है।

एपिस मेलिफिका (Apis Melifica)

कंठ माला, धातु, प्रकृति वालों के लिये इसका प्रयोग होता है। यह मधुमक्खी से तैयार होता है। (बेरी-बेरी) की महौषधि है। शोथ के साथ प्यास न लगना, पेशाब की कमी। डंक मारने जैसा जलन पैदा करने वाले दर्द में मुफीद।

एपोसाइनम (Apocynum)

यह भी शोथ की अच्छी दवा है। यकृत की बढ़ाई से उदर में बहुत ही मुफीद है कलेजे की धड़कन में भी लाभप्रद है। [illegible] निकल आने

भ आवाज है।

एसाफोटिडा (Asafoetica)

... होय से बनता है। मुर्दा, वायु, व.यु से पैदा हुआ पेट ... विकार। पाकस्थली में संकोचन और अकड़न, तमपेट ... फैल जाता। रोगी समझे कि पेट के सब पदार्थ मुंह ... निकल जावेंगे। ...जो उपदंश या विष से जर्जरित हो उनके लिये उपयोगी है।

एवेना सेटाइवा (Avena Sativa)

... विषय में मन स्थिर न रहना – विशेष कर नशलो ... पैदा हुए कारण से। यदि इसका सेवन कराया जाय ... अफीम खाना छोड़ देगा। ... मर्दी की अच्छी दवा है।

ओपियम (Opium)

... अफीम से तैयार होता है। यह बूढ़ों की दवा है। इनके ... लवों मांस पेशियों और शारीरिक तेज में कमी वाले के लिये उपयोगी। पाखाना काला और दुर्गन्ध युक्त ...। हैजा, सन्निपातज ज्वर में, डरकर या प्रसव के बाद ... जाने की भी उपयोगी औषधि है।

ओरम मेट (Aurum Met)

... प्रधान धातु वाले मनुष्यों के लिये उत्तम है। लगातार ... त्या के लिये सोचना, गहरा विषाद होना। अण्ड कोष ... करने में भी उपयोगी है अपथ्यव्हार से उत्पन्न हुई ... में लाभप्रद है।

कल्केरिया फ्लोर (Calcaria Fluor)

... यों और हड्डियों पर इसकी विशेष क्रिया है। आंखों ... पड़ने की बीमारी में यह बहुत उत्तम औषधि है।

कल्केरिया कार्ब (Calcarea Carb)

जिनकी मांस पेशी शिथिल है और जो अनुपात से मोटापा ज्यादा है उनके लिये मुफीद है।

कैलेन्डुला (Calendula)

यह कटे को सड़ने व रोकने वाली दवा है। यह इस लगाकर कोई मवाद करने या सप्टिक पुल्टिस की जरूरत नहीं होने पर इसी प्रकार इसका लोशन बना लगायें। घाव भर जाता है। मवाद पैदा नहीं होता।

कैम्फर (Camphor)

यह कपूर है। कोलेरा हैजा और पुनरावर्तक कम्पन प्रारम्भ को यह अच्छी दवा है। मूर्छा या हिस्टीरिया एवं इसे सुंघाने से बेहोशी दूर हो जाती है।

कैन्थरिस (Cantharis)

यह प्रमेह रोग की प्रधान दवा है। बार-बार पेशाब करने की इच्छा पर बूंद-बूंद पेशाब होना। पेशाब की हर बीमारियों में लाभप्रद। हैजा में पेशाब बन्द हो जाने पर इससे विशेष लाभ होता है। स्वस्थ व्यक्ति इसको सेवन करे तो कामोत्तेजना बहुत बढ़ जाती है।

कैप्सिकम (Capsicum)

यह लाल मिर्च से तैयार होती है। अजीर्ण रोग, रक्तातिसार, प्रमेह, ज्वर, कर्ण रोग, गले के रोग, दमा, चर्म रोग इत्यादि में यह बहुत लाभकारी है।

कार्बोवेज (Carboveg)

परिपाक यंत्र पर इसकी विशेष क्रिया होती है। पुरानी .. में रोगी को फिर से जीवन प्राप्त होता है। इसे सुधा समझना चाहिये।

कास्टिकम (Causticum)

साधारणतया चमड़े और गले रोग मे सेवनीय।

कैमोमिला (Chammomilla)

चिड़चिड़े और क्रोधी मिजाज वालो के लिये विशेष लाभ- है। बच्चों की बीमारी मे अधिक सरल है। जो लोग जरा बात में उत्तेजित या पागलपन की हरकतें करने लगते हैं, लिये उपयोगी है।

कोलोसिन्थ (Colocynth)

स्नायुशूल कारणों से पेट में दर्द, पैर मे सुनसुन, वात, गृध्रसी आदि मे विशेष लाभप्रद। वास्तव में शूल वेदना की यह ... है। केशर की तरह गाढ़े, पीले रंग का फेन की तरह ... आना होने वाले अतिसार के बाद दर्द हो तो इसका लाभप्रद है।

कुप्रम मेट (Cuprum Met)

...यविक पाचाशयिक और आंत्रिक रोगों में इसका व्यवहार ...। खींचन, अकड़न, हैजे के आक्षेप में विशेष लाभप्रद है। ...मिक भाव से फैला हो तो इसकी एक दो मात्रायें कुप्रम ...थ सेवन से लाभ।

ग्लोनाइन (Glon'ne)

...गने पर लाभप्रद। सिर दर्द मे भी रामबाण है।

ग्रैफाइटिस (Graphites)

...र्म रोगों की महौषधि है। चाहे किस प्रकार का चर्म ...ग में लाभदायक। यह उन स्त्रियों की भी दवा है ... सहवास की अनिच्छा रहती है। ऋतु विकार से ...मोटी स्त्रियों का मोटापा घटाने और शरीर को पुष्ट ...करती।

[illegible]

[illegible]

[illegible] (Digitalis)

[illegible] ... [illegible] है।

ड्रोसेरा (Drosera)

हूपिंग खांसी में विशेष फायदेमन्द। इसको बार-बार और थोड़ी-थोड़ी देकर खाया जाता है।

डल्कामारा (Dulcamara)

सर्दी लगने पर उपयुक्त दवा। पानी में भीगने, भीगे स्थान में रहने या अन्य किसी प्रकार से ठण्ड लग गई हो, अतिसार

र और वात आदि रोगों में इससे विशेष लाभ होता है। ऋतु परिवर्तन की बीमारियों में भी मुफीद।

डिप्थेरिनम (Diphtaberinum)

डिप्थेरिया रोग की अचूक दवा। गले और श्वास यंत्र की श्लैष्मिक झिल्ली में रोग पैदा होने पर जीवन शक्ति दुर्बल हो जाती है। उस समय लाभप्रद।

थूजा (Thuja)

सुजाक की महौषधि है। स्त्री जननेन्द्रिय की बहुत सी बीमारियों में—त्वचा, रक्त, पाकाशय, आंत, मसाने और मस्तिष्क रोग में भी लाभप्रद। टीका लगवाने से हुए विकारों में भी मुफीद है। दांत दर्द और दांत के क्षय रोग की उत्कृष्ट दवा है।

नक्स वोमिका (Nux Vomica)

इसे हिन्दी में कुचला कहते हैं। यह होमियोपैथिक की एक प्रधान दवा है। लक्षणानुसार अनेक बीमारियों में मुफीद है। किसी भी रोगी को कोई भी दवा शुरू करने से पहले इसकी एक खुराक अवश्य दे देना चाहिये—जिससे कि पहले की खाई सारी दवाओं का असर जाता रहे। कब्ज, धातु वाले रोगियों के लिये इससे अच्छी कोई औषधि नहीं। यह पुरुषों की खास दवा कही जाती है।

प्लेटिना (Platina)

मस्तिष्क, स्नायु और स्त्री जननेन्द्रिय पर इसकी विशेष क्रिया होती है। इसका रोगी बड़ा अहंकारी होता है। वह सभी विषयों में उदासीनता का भाव प्रकट करता है। सबको छोटा समझता है। स्त्रियों की खास औषधि अनेक बीमारियों में सेवन लाभप्रद होता है।

प्लम्बम (Plumbum)

यह सीसे से बनती है। यह उदर शूल की बढ़िया द(वा) उदर शूल यदि पेट में कलोमोटरी भी हो तो विशेष फ(ायदा) करती है।

पल्सेटिला (Pulsatilla)

इसकी क्रिया शरीर के प्रायः सभी अंगों पर होती स्त्रियों के अनेक रोगों की महौषधि। यदि घी की पकी चीजों से या गरिष्ठ भोजन से कोई बीमारी पैदा हुई है इससे लाभ होता है। प्रदर के बाद स्तन में दूध की कमी पूरा करती है। कोमल स्वभाव वाली स्त्री को बात-बात में हँसी हो—श्वेत प्रदर, प्रमेह, श्लेष्मा का मवाद, रात में ति(...) को विशेष लाभ पहुँचाती है।

प्लैंटेगो (Plantago)

कान और दाँत दर्द की सर्वश्रेष्ठ दवा। इसके बाहरी प्र(योग) से अर्थात् मदर टिंचर का फाहा लगाने से दाँत का दर्द तुरन्त (दू)र हो जाता है।

फेरम फास (Ferrum Phos)

यह फास्फेट आफ आयरन है। इसका रोगी रक्तहीन होता (है) और थोड़ी सी उत्तेजना या आवेश में उसका चेहरा लाल हो (जा)ता है। यह शरीर में खून की कमी को पूरा करता है शरीर (को) पुष्ट बनाता है।

फास्फोरस (Phosphorus)

पतली, टेढ़ी देह- प्रशस्त छाती। थोड़े केश, दुर्बल और थोड़े खून वाले आदमियों की बीमारी। फास्फोरस में आँख के चारो ओर शोथ हो और नीला दाग पड़ जाता है मस्तिष्क, फेफड़ा, हृत्पिंड,

यकृत, मूत्र यंत्र, स्नायु अस्थि आदि में लाभप्रद है।

बेराइटा कार्ब (Baryta Carb)

बड़े पेट वाले, जिन्हें जरा में सर्दी लग जाती है बगल कोढ़िया, बगल की गाँठ बढ़ना, गण्डमाला तथा वृद्धों बीमारियों में मुफीद। मोटे व्यक्तियों की खास दवा।

बेलाडोना (Belladonna)

मस्तिष्क में रक्त संचय, चेहरा और आँखें लाल, सि दपदपी, दर्द, रोग या दर्द का एकाएक शुरू हो जाना गायब हो जाना। प्रदाह जनित रोगों की यह उत्तम औषधि टपक, जलन, दर्द इसके तीन लक्षण हैं और इन सब रोगों लाभकारी है।

बोरैक्स (Borax)

इसे हिन्दी में सुहागा कहते हैं। मुख में छाला, मुँह श्वेत प्रदर और बन्ध्यत्व आदि रोगों में व्यवहार को जा है।

ब्रायोनिया (Bryonia)

फेफड़ा, फेफड़े को ढकने वाली झिल्ली, यकृत, मस्तिष्क सूखी खाँसी की यह औषधि है। वात रोग में विशेष उपयोगी

ब्लाटा ओरिएण्टालिस (Blatta Orientalis)

भारत वर्षीय तिलचट्टा या झींगुर से यह दवा तैयार जाती है। दमा रोग की यह औषधि है। मूल अरिष्ठ 2 से बूँद की मात्रा में दमा के दौरे के समय बार-बार सेवन करा चाहिये।

मैग्नेशिया फास (Magnesia Phos)

यह जीर्ण शीर्ण और स्नायु प्रधान मनुष्यों की बीमारी अधिक उपयोगी है। दाहिने अंग की बीमारी में इसका अधि

[illegible] है। [illegible] [illegible]
है। [illegible] है [illegible] है।

नक्स वोमिका (Nux Vom.)

[illegible] [illegible] [illegible] करती है। [illegible] [illegible]
[illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] करती है। [illegible] [illegible]

मर्क सॉल (Merc Sol)

[illegible] [illegible] होने पर [illegible] देती। [illegible]
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]
[illegible]।

रसटॉक्स (Rhus Tox)

कोई [illegible] का [illegible] पर कोने, [illegible] [illegible]
पानी में भीगने के [illegible] होने वाले रोगों की औषधि—[illegible]
में इसके गुण [illegible] की [illegible] [illegible] है।

लाइकोपोडियम (Lycopodium)

[illegible] बच्चों व बूढ़ों की बीमारियों की औषधि।
यह मूत्र की अधिकता और मूत्र कम [illegible] दोनों की [illegible]
दवा है। कब्जियत को भी दूर करती है। [illegible] में
[illegible] की दवा भी मानी जाती है।

वेरेट्रम एल्ब (Veratrum Alb)

हैजा रोग की प्रधान दवा है। दस्त का रंग [illegible]
की तरह हो—खून दिखाई दे। कै, दस्त अधिक, कमजोरी,
कपाल ठण्डा, आँख मुँह धंस जावें—इस रोग में लाभकारी।

सिना (Cina)

इसकी क्रिया आँतों पर होती है। बच्चों के कृमि रोग की
[illegible] है। कैंचुए हो जाने में भी लाभ देती है।

[illegible] ([illegible])

यह इस [illegible] होता [illegible] है। इसका रोगी [illegible] है जाता है, [illegible] शान्त न [illegible], [illegible] न [illegible], [illegible] दुखती है, कोई भी [illegible] की [illegible]।

सिकेलिकार (Secale Cor)

दुर्बल [illegible], [illegible] वाले, [illegible] वाली, [illegible] [illegible] रोगों को लाभ पहुंचाती है।

सीपिया (Sepia)

यह अनेक प्रकार के स्त्री रोगों की बढ़िया दवा है। [illegible] [illegible], जरायु के [illegible], बहुत देर तक [illegible] में रहना, [illegible] [illegible] होने से उत्पन्न हुआ रोग। इसकी रोगिणी [illegible] और [illegible] होती है। [illegible] रोगी होने के बाद [illegible] [illegible] नहीं रह जाती। इन रोगों की अच्छी दवा।

साइलीशिया (Silicea)

[illegible], [illegible], बड़े हुए [illegible] को निकालना और [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] रोग की महौषधि।

सल्फर (Sulphur)

जब किसी नई बीमारी में चुनी हुई दवा से फायदा [illegible] [illegible] तो इसे देना चाहिए। चिकित्सा शुरू करने के समय [illegible] [illegible] दी गई औषधियों के असर घटाने में इसका विशेष [illegible] [illegible] है। बहुत ज्यादा भूख, कभी-कभी रोगी [illegible] [illegible] [illegible] है और जलन इसका निश्चित लक्षण है।

हैमामेलिस (Hemamelis)

नाक, फेफड़ा, आंत, जरायु और गुदाशय आदि शरीर [illegible] [illegible] भी स्थान की शिराओं से गहरा लाल या काली [illegible] [illegible] रक्त स्राव हो तो इससे विशेष लाभ होता है।

हीपर सल्फर (Heper Sulphur)

इसका निम्न क्रम 3X मवाद उत्पन्न करता है और उ‍ क्रम मवाद को सुखाता है। फोड़े पकाने की बड़ी उत्तम दवा खांसी, श्वांसो, फेंफड़े के अन्य रोग आदि पर भी इसका अच्छा होता है।

लैकेसिस (Leacasic)

यह एक प्रकार के सर्प विष से तैयार की जाती है। इसकी प्रधान क्रिया स्नायुमण्डल पर होती है। रोग के बायीं ओर आक्रमण की यह खास औषधि है।

तरह-तरह के खतरनाक और विषाक्त रोगों की यह अच्छी दवा है। जरायु के हर तरह के रोगों पर इसकी क्रिया होती है। रक्त स्राव, अर्श, सिर दर्द, गले की कोढ़ी, न्यूमानिया, माता, कार्बंकल (व‍द फोड़ा) आदि पर भी इसकी क्रिया अच्छी होती है।

☼ बस ☼

विशेष नोट:—यह संकलन योग्य, अनुभवी डाक्टरों विश्व-विख्यात पुस्तक "मेटेरिया मेडिका" की सामग्रियों से तैयार की गई है। पर यदि किसी दवा के बारे में किसी प्रकार का सन्देह है तो स्थानीय अनुभवी होमियोपैथ डाक्टर से परामर्श ले ... उत्तम है। किसी भी घातक रोग के लिये खोज के लिये अन्य डाक्टरों से परामर्श लेना चिकित्सा का चलन है।